हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

14 जनवरी, 1976

खण्ड 1 अंक 3

अधिकृत विवरण

विंषय–सूची

बुधवार, 14 जनवरी. 1976

	पुष्ठ संख्या
ताराकित प्रश्न एवं	(3) 1
तारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर	(3)26
अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर	(3) 33
कार्य मन्त्रणा समिति का प्रथम प्रतिवेदन	(3)38
राज्यपालके अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ) तथा धन्वाद प्रस्ताव पर मतदान	(3)37
बैठक का समय बढ़ाना	(3) 88
राज्यपाल के अभिभाषणपर चर्चा तथा धन्यवाद (3)	88
प्रस्ताव पर मतदान (पुनरारम्भ)	

हरियाणा विधान सभा

बुधवार, 14 जनवरी, 1976

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1,

चण्डीगढ में 14.00 बजे हुई । अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

Mr. Speaker : Question Hour.

तारांकित प्रश्न संख्या 1402

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल वधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1430

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1450

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी देवी लाल, सदन में उपस्थित. नहीं थे ।

Upgradation of Schools

***1476. Chaudhri Shiv Ram Verma :** Will the Minister for Education be pleased to state—

(a) the total number of Primary Schools likely to be upgraded to Middle Schools during the years 1975-76 and 1976-77 ;

(b) the number of Middle Schools likely to be upgraded to High Schools during the years 1975-76 and 1976-77 ; and

(c) the time by which the schools referred to in parts (a) and (b) above are likely to be upgraded ?

शिक्षा एवं परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) :

	1975—76	1976—77
(ए)	2	शून्य
(बी)	5	शून्य

(सी) उपरोक्त सात स्कूलों में से 8 स्कूलों का स्तर पहले ही बढ़ाया जा चुका है । एक स्कूल का स्तर बढ़ाने हेतु मामला विचाराधीन है । इस स्कूल का स्तर बढ़ाने बारे निश्चित समय बताना सम्भव नहीं है । इस बारे सारी फारमैलेटीक पूर्ण हो जाने पर ही इस स्कूल का स्तर बढ़ाया जा सकेगा ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मंत्री महोदया यह बतायेंगी कि वह कौन–सा एक स्कूल है जो अभी अपग्रेड होना रह रहा है और इस बात का क्या कारण है कि अगले वर्ष 197 8– 77 में कोई भी स्कूल अपग्रेड नहीं किया जायेगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : वह स्कूल हमायूपुर, डिस्ट्रिक्ट रोहतक का है जिसका एक साल का पैसा जमा करा दिया गया है लेकिन बाकी कुछ फारमैलिटीक कम्पलीट होनी रहती हैं । वे पूरी होने के बाद उसका दर्जा बढ़ा दिया जायेगा । बाकी स्कूलों के बारे में पोजीशन यह है कि जितना नार्म दूरी का सैट्रल गवर्नमैंट ने रखा हुआ है, हम उससे ज्यादा तक पहले ही स्कूल अपग्रेड कर चुके हैं । सैट्रल गवर्नमैंट ने प्राइमरी से मिडल स्कूल के लिए 4. 83 किलो– मीटर दूरी रखी है और मिडल से हाई के लिये 8 किलोमीटर दूरी रखी है जबकि हरियाणा में प्राइमरी से मिडल की 272 और मिडल से हाई के लिये 3. 58 किलोमीटर तक की दूरी पहले ही कवर हो चुकी है ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या ंमत्री महोदया बतायेंगी कि सभी प्राइमरी, मिडल और हाई स्कूलों में अध्यापक पूरे हैं, उनका जवाब हां या न कुछ भी हो लेकिन वे यह भी बतायेंगी कि उन स्कूलों में विद्यार्थियों की पहले रेशों क्या थी और अब क्या कर दी गयी है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : सर, यह इस सवाल से तो बनता ही नहीं है क्योंकि इन्होंने तो मेन सवाल अपग्रेडेशन के बारे में पूछा है ।

श्री के. एन. गुलाटी : क्या मंत्री महोदया यह बतायेंगी कि इस साल 1976–77 के लिये अपग्रेडेशन की क्या पालिसी बनायी है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इस साल अगर कोई जनता या पंचायत, दो साल का मिडल या हाई स्कूल का खर्चा जो आयेगा वह जमा करा दे तो उस पर विचार किया जा सकता है । गवर्नमैंट के खर्चे से अपग्रेडेशन करने की इस साल के बजट में कोई गुंजाइश नहीं है ।

श्री अमर सिंह : आनरेबल मिनिस्टर साहिबा ने बताया कि दो साल का खर्चा जमा कराना पड़ेगा । क्या उन गर्ल्ज स्कूल्ज को जो मिडल स्कूल हैं, अपग्रेड करने के लिये कोई छूट देने के लिये तैयार हैं?

शिक्षा मंत्री (श्री माडु सिंह मलिक) : स्पीकर साहब, स्कूल जो हम अपग्रेड करते हैं, वे आम तौर पर योजना के अन्दर आते हैं । अभी तक हमारी पंचवर्षीय योजना मन्जूर नहीं हुई है, वह अभी तक सैटर से कलीयर नहीं हुई है । जब तक योजना कलीयर न हो जाये तब तक नये स्कूल अपग्रेड करने का सवाल ही पैदा नहीं होता । यह हमने पहले कन्डीशन रखी हुई है कि

अगर कोई पंचायत 89,000 रुपया हाई स्कूल और 51,000 रुपया मिडल स्कूल के लिये जमा करा दे तो हम अपग्रेड कर देते हैं । गर्ल्ज के लिये अभी तक कोई छूट नहीं है । हम यह सोच रहे हैं कि कुछ थोड़ी–बहुत रियायत इसके लिये दी जाये लेकिन अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ है ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि वह शुभ घड़ी कब आयेगी जब अपग्रेडेशन आफ स्कूल फिर शुरू होगी?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

चौधरी फूल सिंह कटारिया : मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि जो बैकवर्ड एरिया भी है और गर्ल्ज स्कूल को अपग्रेड करने का भी मामला है, क्या उनके लिये कोई रिलैक्सेशन देने की गुंजाइश है या नहीं है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : अभी तक तो कोई नहीं है ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पिछले सैशन में भी यह कहा गया था कि प्राइवेट स्कूलों को गवर्नमैंट अपने अधीन करेगी, ऐसा कोई विचार हे?

श्री माडू सिंह मलिक : नहीं जी ।

चौधरी बृज लाल : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि जो जमा कराने के लिये उन्होंने खर्चा बताया है, वह एक साल का है या दो साल का?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : दो साल का है ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1496

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी चांद राम, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Local Buses

***1499. Shri K.N. Gulati :** Will the Minister for Transport be pleased to state the total number of Local Buses of the Haryana Roadways plying in Faridabad and Ballabgarh areas as at present ?

शिक्षा एवं परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : पांच स्थानीय बसें ।

श्री के० एन० गुलाटी : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि ये 5 बसें 5 लाख की आबादी के लिये काफी हैं? अगर नहीं हैं तो क्या और बसें दे रहीं हैं और अगर दे रही हैं तो कब दे रही हें?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, सिर्फ यही 5 बसें नहीं हैं बल्कि 8 बसें और भी हैं. जो फरीदाबाद और दिल्ली के बीच लोकल चलती हैं उनमें भी यह एरिया कवर हो जाता है ।

इसके अलावा कुछ बसें दिल्ली और फरीदाबाद के बीच में चलती हैं और कुछ बसें' फरीदाबाद और बदरपुर–बल्लभगढ के बीच रोडज पर चलती हैं । इसके अलावा 40 रिटर्न ट्रिप दिल्ली और फरीदाबाद के बीच चलते हैं । जितनी भी बसें उधर से गुजरती हैं वे उस एरिया को कवर करती हैं । उनके सवाल और मांग के अनुसार वह एरिया कवर हो जाता है क्योंकि काफी बसें वहां से गुजर जाती हैं ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि लोकल बसें चलाने का क्राइटेरिया क्या है?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः जहां सवारियां मिलती. हैं और जरूरत महसूस होती है, वहां चलायी जाती हैं ।

चौधरी मनफूल सिंह : क्या मंत्री महोदया को यह इल्म है कि झज्जर सब–डिपो में बसिज की बहुत कमी है, जो हैं भी वे बहत ही खराब हैं और उसकी वजह से ओवरलोडिंग होती है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : वैसे तो स्पीकर साहब यह मेन सवाल से उत्पन्न ही नहीं होता लेकिन मैं आनरेबल मैम्बर को यह बताना चाहती हूं.....

श्री अध्यक्ष : अगर पैदा नहीं होता फिर बताने क्यों लग रही हैं?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः क्योंकि जनता के हित की बात है । इतनी ज्यादा तो दिक्कत इस वक्त नही है लेकिन थोड़ी–सी है । काफी हद तक इस दिक्कत को सुधार दिया गया है । कुछ टाईम ऐसा होताहै, जैसे सुबह का टाईम, जिसमें थोड़ी भीड़ होती है । अगर आप दिन के टाईम देखें तो पता लगेगा कि काफी सारी बसें खाली चलती हैं । लेकिन अगर फिर भी कोई दिक्कत है तो हमारे' नोटिस में लायें, दूर करेंगे ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी, जैसे कि उन्होंने कहा कि जहां लोकल बसिज की डिमान्ड होती है, हम पूरा करते हैं । झज्जर सब–डिवीजन में तीन कालेज हैं और लोकल बसिज की बड़ी डिमान्ड है, वहां क्यों नहीं चलायी जातीं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इस पर हम विचार कर लेंगे ।

चौधरी बृज लाल : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि सिरसा प्रौपर में एक लोकल बस चलाने की जो स्कीम थी, उस पर क्या कार्यवाही हुई है?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

श्री के. एन. गुलाटी : अभी–अभी मंत्री साहिबा ने बताया था कि 8 बसें और भी चल रही हैं लेकिन वे बसें मथुरा रोड से सीधी जाती हैं । मैं उनसे यह जानना चाहता हू कि क्या ये 5 लोकल बसें (रो (लोकल) चलती हैं, फरीदाबाद और बल्लभगढ

के सिटी एरिया, स्कूल, कालेज, अस्पताल, रेलवे स्टेशन और फरीदाबाद और बल्लभगढ के चो बड़े– बड़े देहात हैं, उन सब को कवर करती है, अगर नहीं कवर करती है तो क्या आप बन्दोबस्त कर रहे हैं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : ऐसे है कि जो चार लोकल बसें हैं वे फरीदाबाद बस्लभगढ एरिया में से होकर सैक्टर 7, बाटा चौक, नीलम सिनेमा और इसके बाद हरियाणा बार्डर पर बदरपुर के समीप समाप्त होती हैं । एक बस जो पाँचवीं है, वह बल्लभगढ से आरम्भ होकर फरीदाबाद में सैक्टर 15 और 16 को कवर करते हुए हरियाणा बार्डर पर बदरपुर तक समाप्त होती है । इस ढंग से वे सारा ही एरिया कवर करती हैं ।

चौधरी शिव राम वर्मा : जैसे कि उन्होंने कहा कि जहां सवारियां मिलती हैं वहां लोकल बसिज चलाते हैं, करनाल, पिपली और नीलोखेडी में सवारियां खड़ी रहती हैं, उन्हें कोई उठाता भी नहीं है इसलिये क्या वहाँ पर भी कोई लोकल बस का प्रबन्ध करेंगे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, जैसे कि मैंने पहले भी बताया है, कुछ टाईम थोड़ा–सा ऐसा होता है जिसमें थोड़ा सा रश. होता है लेकिन अगर आनरेबल मैम्बर वहां देखें क्योंकि इनका गांव भी सड़क पर है, बहुत सारी बसें खाली निकलती हैं ।

इसके बावजूद भी जहाँ कहीं दिक्कत महसूस होती है, वहां यह कोशिश की जाती है कि हम उस दिक्कत्त को दूर करें ।

चौधरी पीर चन्द : स्पीकर साहब, हिसार जिला वैसे ही बहुत बड़ा है और यह सिटी चार–चार पांच–पांच मील और बढ़ गया है । क्या मैली महोदय बताने की कृपा करेगे कि वहां पर मिनी बस चलाने की कोई स्कीम हे?

परिवहन ंमत्री (श्री के. एल. पोसवाल) : वहां पहले ही चल रही हैं ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : मंत्री महोदय ने बताया है कि सुबह के टाईम पर ज्यादा रश रहता है और दोपहर और शाम को बसें खाली चलती हैं । क्या मैली महोदया उन खाली बसों को सुबह के टाईम जबकि ज्यादा रश होता है चलाने की कृपा करेंगी जिससे कि राशि कम हो.

श्री के. एल. पोसवाल : आनरेबल मैम्बर को पता होना चाहिये कि एक बस सिर्फ एक ही चक्कर नहीं लगाती वह सारे दिन ही चक्कर लगाती है । किसी बस का नम्बर किसी समय आता है और किसी बस का नम्बर किसी टाईम आता है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मंत्री महोदया, जिस समय ज्यादा रश होता है उस समय ज्यादा बसें चलाने की कृपा करेंगी जिससे कि सवारियों को दिक्कत न हो?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : हमारी पूरी कोशिश होती है कि सवारियों की दिक्कतें दूर करें हम लगातार कोशिश भी कर रहे हैं । अगर आनरेबल मैम्बर के नोटिस में कोई ऐसी बात है तो वह नोटिस में लाए ।

श्री के० एन० गुलाटी : मंत्री महोदया ने सैक्टर 7 और सैक्टर 15 वगैरह की बात बता दी और बार्डर के बारे में भी बता दिया है कि यह सारा एरिया कवर कर लेते हैं लेकिन बल्लभगढ और फरीदाबाद इसी पर निर्भर नहीं करता । स्कूल्ज, कालिजिज, अस्पताल और रेलवे स्टेशन है इनका क्या होगा? क्या मती महोदया और लोकल बसें चलाने की कृपा करेंगी जो इनको भी कवर कर सकें?

श्री के. एल. पोसवाल : स्पीकर साहब, बस एक ही जगह से नहीं चलती । फरीदा– बाद का कोई ऐसा इम्पौरटैन्ट हिस्सा नहीं है जहां से बस न चलती हो । 20–20 और 40–40 रिटर्न ट्रिप बसें करती हैं और दिल्ली, मथुरा और आगरा की बसें भी वहां से पास करती हैं । गुडगावां की बसें भी वहां से गुजरती हैं । दिल्ली के साथ हमारा जो लेटैस्ट ऐग्रीमैन्ट हुआ है उसके मुताबिक कुछ और बसें ऐड होंगी । एक बात और मैं बता दूं कि लोकल रूटस पर हम कुछ मिनी बसिज और चला देंगे । मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इनकी जो भी दिक्कतें होंगी उनको हम दूर कर देंगे ।

लाला रुलिया राम : जो ऐक्सप्रैस बसें चलती हैं वह रास्ते में रुकती नहीं हैं और सवारियां रास्ते में खड़ी रह जाती हैं । क्या मंत्री महोदय ऐसे आर्डर करने की कृपा करेंगे कि तेजी से चलने वाली बसें भी रास्ते में रुके और सवारियां लें, क्योंकि वह खाली होती हैं?

श्री के० एल० पोसवाल : ऐसी कोई बात नहीं है कि वे खाली होती हैं । वे बसें ऐक्सप्रैस बसें होती हैं और उनमें किराया भी ज्यादा लिया जाता है । अगर उनको हर जगह रोकना शुरु कर देंगे तो फिर उनका किराया भी कम करना पड़ेगा । इसलिए ऐसा नहीं हो सकता कि वे रास्ते मे रोकी जाएं ।

Electricity Supplied for Agricultural and Industrial Purposes

***1488. Shri Om Parkash Garg :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the percentage of the total units of electricity supplied for Agricultural, Industrial and other purposes during the years 1974 and 1975, separately ; and

(b) the percentage of total units of electricity which is likely to be further produced and supplied for Agricultural, Industrial and other purposes during the year 1976, separately ?

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha) :

(a) The percentage of units supplied to Agricultural, Industrial and and other purposes during the years 1974 and 1975 is as under :-

	Category	percentage	Units supplied
		1974	1975(1/75 to 11/75)
(i)	Agriculture	43.72	39.06
(ii)	Industrial	43.86	46.76
(iii)	Other	12.42	14.18

(b) The percentage of the total units of electricity which is likely to be further produced during the year 1976 is likely to be 17 % from our own sources and 12 % from other sources. The percentage units likely to be supplied for Agricultural, Industrial and others is expected to be same as for the year 1975 in case the rainfall is normal.

'मलिक सतराम दास बतरा : मंत्री महोदय ने ऐग्रीकलचरल, इंडस्ट्रियल–और दूसरे कामों के लिए बिजली की सप्लाई की परसेन्टेज बताई है । क्या मंडी महोदय इनके अलग–अलग रेट बताने की कृपा करेंगे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, ऐग्रीकल्चर का 19 पैसे यूनिट है लेकिन मैं दूसरों के मुताल्लिक डेफिनिट नहीं हूं कि क्या रेट हैं ।

मलिक सतराम दास बतरा : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि पिछले साल लाइन लासिज कितने थे और इस वर्ष लाइन लासिज की क्या परसेन्टेज है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिह चट्ठा : स्पीकर साहब, हरियाणा में लाइन लासिज की परसेन्टेज 23 परसेन्ट है लेकिन यह सवाल लाइन लासिज के बारे में नहीं है ।

Income accrued to Haryana Roadways

***1503. Rao Dalip Singh :** Will the Minister for Transport be pleased to state—

(a) the total income accrued to Haryana Roadways from the auction of shops and licences given to vendors at the Bus Stands, separately, depotwise during the years 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to date ; and

(b) whether the prices of the articles meant for sale at the shops at bus stands are fixed by the Government or are being char ged by the shopkeepers arbitrarily ?

शिक्षा एवं परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) :

(ए) कथन विधान सभा की मेज पर रखा जाता है ।

(बी) वस्तुओं की कीमतें पहले महा–प्रबन्धकों द्वारा नियत की जाती थी और दुकानदारों द्वारा उनकी अपनी इच्छानुसार रेट्स चार्ज नहीं किए जाते । एक जिला स्तर की कीमतों को नियंत्रण में रखने वाली कमेटी उपायुक्तों की अध्यक्षता में दिनांक 5 दिसम्बर, 1975 से खाद्य वस्तुओं की दरें नियत करने के लिये बना दी गई हैं ।

विवरणिका

दुकानों की नीलामी/लाईसैन्सीज से साल 1972–73, 1973–74, 1974– 75 औरअब तक हुई डिपो अनुसार कुल आय की सूची ।

डिपो का नाम	1972– 73	1973–74	1974–75	1975– 76	(31–12–75 तक)
अम्बाला	2,39,996.00	1,97,852.00	2,08,942.00	2,49,144. 00	2,39,996.
चण्डीगढ	1,980. 00	5,160. 00	3,720. 00	2,880. 00	1,980.
गुड़ गावां	65,184. 00	68,244.00	82,944. 00	91,866. 63	65,184.
रोहतक	3,06,235.00	3,25,805. 00	5,19,476.00	5,52,452.00	3,06,235.
करनाल	4,00,894.70	4,94,851.19	7,38,605.92	5,03,536.50	4,00,894.
हिसार	1,23,684.00	1,00,451.00	2,08,059. 00	4,37,230. 76	1,23,684.

रिवाडी	18,364. 00	1,02,372.00	1,03,910. 00	1,06,625. 68	18,364.
जींद	19,405.85	68,653.60	84,527. 60	1,04,813. 50	19,405.8
भिवानी	-	28,048. 00	1,48,787.00	1,19,741.00	-
कैथल	-	-	79,045. 00	1,40,315.00	-

नोट : निम्नलिखित डिपोज प्रत्येक के विपरीत दी गई तिथियों को खोले गये –

रिवाडी 1–12–1972

जीन्द 1–1–1973

भिवानी 1–11– 1973

कैथल 20–8–1974

राव दलीप सिंह : करनाल डिपो की आमदनी 197 2–73 में चार लाख दिखाई है, 1973–74 में 4 लाख 94 हजार, 1974–75 में 7 लाख 38 हजार और 1975– 76 में 5 लाख आमदनी दिखाई है । क्या मली महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि एक साल में दो लाख की जो आमदनी कम हुई है इसका क्या कारण है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, वैसे तो इस साल में सब जगह कीमतों में कमी आई है लेकिन मैं आनरेबल मैम्बर को बताना चाहती हूं कि दुकानदार अपनी मर्जी से चार्ज नहीं करते बल्कि हमारा उन पर चौक रहता है । कीमतें चौक करने के लिए एक कमेटी बनी हुई है । वैसे कीमतें थ्रू आउट इस साल कम हैं ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि वह कमेटी एक महीने में, दो महीने में या तीन महीने में कितनी बार यह चौक करती है कि दुकानदार ठीक कीमत पर चीजें देते हें?

परिवहन मंत्री (श्री के. एल. पोसवाल) : हम जिस वक्त औक्शन करते हैं उस वक्त एक ऐग्रीमैन्ट किया जाता है कि दुकानदार इस कीमत पर चीज बेचेगा और अगर दुकानदार कभी यह महसूस करे कि कीमतें बढ़नी चाहिए तो वह ऐप्लाई कर सकता है । कमेटी उस पर फिर विचार कर सकती है ।

श्री अमर सिंह : क्या मंत्री महोदया के नोटिस में यह बात आई है कि बाजार के मुकाबले में बस अड्डे पर महंगी चीजें मिलती है । अगर यह बात नोटिस में है तो इसको दूर करने के लिए क्या उपाय सरकार कर रही है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : ऐसी कोई बात नहीं है । अगर आनरेबल मैम्बर के नोटिस में ऐसी कोई बात है तो हमारे नोटिस में लाएं ।

राव बंसी सिंह : क्या मंत्री महोदय के नोटिस में यह चीज है कि बस अड्डों पर जो चीजें मिलती हैं वह घटिया किस्म की होती हैं? जैसे पानीपत बस अड्डे पर जो चाय मिलती है वह पहले ही बनाकर रखते हैं और उसी चाय को फिर कस्टमर्ज को देते रहते हैं । इसी तरह से अम्बाला बस स्टैड पर चीजें घटिया मिलती हैं । क्या मंत्री महोदया इस चीज को चौक करने की कृपा करेंगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, जो कमेटी बनी हुई है उसमें डिप्टी कमिश्नर चेयरमैन है और जी. एम. कनवीनर है और सी. एम. ओ. तथा जनता का एक और नुमाइन्दा उस कमेटी के मैम्बर हैं । इसके बावजूद भी अगर आनरेबल मैम्बर के नोटिस में कोई बात हो, जैसा कि उन्होंने तुक–दों जगहों का जिक्र किया है उनको चौक कर लेगे, वह नोटिस में लाएं, कार्यवाही की जाएगी । कमेटी बनाने का भी मतलब यही है कि जनता को सही कीमत पर और अच्छी चीजें मिलें ।

मलिक सतराम दास बतरा : क्या मन्त्री महोदया यह बतलाने की कृपा करेंगी कि जो दुकानदार निकम्मी चीजे बेचते हैं,

कभी उन चीजों के सैम्पल वगैरह भी भरे हैं? अगर नहीं तो इस बारे में क्या कार्यवाही की जा रही है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : समय समय पर सैम्पल वगैरह तो लेते ही रहते हैं ।

लाला रुलिया राम : स्पीकर साहब, बस अड्डों पर ड्योढे भावों पर खाने पीने की चीजें मिलती हैं, क्योंकि दुकानदारों को जो ठेके दिये जाते हैं वे दस दस, पन्द्रह पन्द्रह हजार के होते हैं औरवे लोग अपना मुनाफा कमाने के लिये सारा खर्चा कंज्यूमर पर डालते हैं । तो क्या इस बात की तरफ सरकार ध्यान देगी क्योंकि ठेकों के महंगे भावों पर बिकने के कारण कंज्यूमर को नुकसान होता है? हमारा यह सुझाव है कि ठेकों की कीमतें कम की जाए?

Shri K.L. Poswal : Sir, is it a supplementary question ?

Mr. Speaker : No arguments please.

श्री के. एन. गुलाटी : स्पीकर साहब, इसमें कोई शक नहीं कि बस अड्डों पर चीजें काफी गिरी हुई मात्रा में मिलती हैं, और उनके रेट्स भी ज्यादा हैं और प्राइवेट दुकानदारों का लोगों के साथ बेहेवीयर भी अच्छा नहीं है । क्या सरकार इस तरफ ध्यान देने की कृपा करेगी ताकि लोग परेशान न हों और अच्छी खाने की चीजें उचित दामों पर मिल सकें?

श्री के. एल. पोसवाल : अब के एक क्लाज आक्शन में रखेंगे जिससे दुकानदारों का बेहेवीयर भी ठीक रहे ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : स्पीकर साहब, अगर सरकार यह प्राइवेट दुकानें ही बन्द कर दे और अपनी दुकानें खोले और वाजिब दामों पर लोगों को चीजों की सप्लाई हो तो इससे ये सारे झगड़े ही खत्म हो जाएंगे । क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, जैसे अभी मन्त्री महोदया ने बताया कि स्वास्थय विभाग वाले समय समय पर सैम्पल लेते रहते हैं, क्या उन सैम्पलज के बारे में कोई रिपोर्ट भी आई हे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, इस बारे तो अलग से सवाल करें तो जवाब मिल सकता है ।

राव दलीप सिंह : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदया यह बतलाने की कूपा करेंगी कि जैसे हिसार डिपो से दुकानदारों की नीलामी वगैरह से 1 लाख से बढ़कर 4 लाख का मुनाफा हुआ है, और करनाल डिपो में काफी घाटा दिखाया गया है, इसका क्या कारण है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : अध्यक्ष महोदय, यह तो सारा कुछ डिमांडज के ऊपर निर्भर करता है, जहां आक्शन ज्यादा हुई वहां से ज्यादा मुनाफा हुआ और जहां आक्शन कम हुई, वहां से कम मुनाफा हुआ ।

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदया यह स्पष्ट करने की कोशिश करेंगी कि आक्शन की रकम डाऊन होने का कारण क्या हैं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, जब आक्शन की जाती है तो पहले अखबारों में दिया जाता है । नीलामी के साथ ज्यादा से ज्यादा रेट देते हैं । साथ साथ यह भी ध्यान. रखा जाता है कि आक्शन की रकम पिछले साल से कम भी न हो उसके हिसाब से अलाटमैंट की जाती है । मौके के मुताबिक टैण्डर के हिसाब से देते हैं ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदया बताएगी कि यह जो प्राइवेट दुकानें रन कर रहीं हैं, और इन से काफी मुनाफा कमा रही हैं, इन दुकानों की जगह पर सरकार अपनी दुकानें क्यों नहीं चलाती ताकि जो मुनाफा वे ले रहे हैं, वह सरकार को हो ।

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

तारांकित प्रश्न संख्या 1403

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल वधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1431

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1451

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी देवी लाल, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Byelarse Tractors

***1477. Chaudhri Shiv Ram Verma :** Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) whether the Government have stressed upon Central Government the desirability of importing the Byelarse Tractors ;

(b) if so, the time by which the said tractors are likely to be imported and made available to the farmers ; and

(c) whether the Government is aware of the fact that the farmers have booked their demand for Byelarse tractors with the Haryana Agro Industries Corporation in a large number ?

State Minister for Agriculture and Revenue (Chaudhri Surjit Singh Mann) :

(a) Yes.

(b) Not known.

(c) Yes.

चौधरी शिव राम वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदय ने अपने जवाब में दिया है कि कुछ दिनों तक यह बात पूरी होने वाली है । क्या इस बारे में सरकार शीघ्र ही कोई कदम उठाने का विचार रखती हे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, इस बारे में मैं मैम्बर साहेबान को बता दूं कि अभी तक हमारे इम्पोर्ट लाइसेन्स नहीं आए हैं । जब मिल जाएंगे तो वर्मा साहब को दिलवा देंगे ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय यह बताएंगे कि पिछले दो सालों में मीडियम साइज ट्रेक्टर यानी 35 हार्स पावर ट्रैक्टर की क्या कीमत थी और आज क्या है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, पोजीशन यह है कि फोर्ड ट्रैक्टर 58 हजार का है और आज से दो साल पहले 52 हजार का था । मेसी फरगुसन (इम्पोर्टिड) पहले 86 हजार का था और अब 1 लाख 6 हजार का है । इस से ज्यादा और कुछ पूछना चाहते हैं तो मैं बता सकता हूं ।

चौधरी पीर चन्द : स्पीकर साहब, कीमतों में इतना भारी गैप आ गया है और किसान के गेहूं की कीमत नहीं बढ़ाई गई है, जिससे किसानों को बड़ी परेशानी हो रही है, क्या सरकार

इस ओर भी ध्यान देगी कि किसानों को गेहूं का उचित दाम भी दिलवाया जाए?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह मामला गवर्नमैंट आफ इण्डिया का है ।

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि बाई–लार्ज ट्रैक्टर की क्या कीमत है, उसकी कीमत में भी क्या कोई बढ़ौतरी हुई है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसकी कीमत अभी नहीं बताई जा सकती क्योंकि यह ट्रैक्टर भारत में नहीं आ रहा है ।

श्री धज्जा राम : अभी मन्त्री महोदय ने कहा कि हमारे पास कोई इम्पोर्ट लाइसैन्स नहीं हैं । क्या इस बारे में भारत सरकार से कोई लिखा पढ़ी की है या कोई जानकारी केन्द्रीय सरकार से लेने की कोशिश की है कि हमें इतने ट्रैक्टर मिलने चाहिये?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, हमारी सरकार ने केन्द्रीय सरकार को लैटर आफ इंटैन्ट के लिये लिखा था । 1974 में हमें उस बारे में 'न' आ गई है ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि पिछले सालों की निस्बत इस साल ट्रैक्टरों की कीमत दुगुनी क्यों हो गई हैं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, यह सैन्ट्रल गवर्नमैंट का मामला है, इस बारे में वही जानते हैं ।

चौधरी पीर चन्द : स्पीकर साहब, जमींदार के अनाज की कीमत गिरने के कारण क्या जमींदारों को ट्रैक्टर उचित भावों पर दिलाने का सरकार का कोई विचार है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इस बारे में हम बहुत कोशिश कर रहे हैं कि कीमत कम हो । जब कीमत कम होगी तो लोगों को कम कीमत पर ट्रैक्टर मिलने लगेंगे ।

लाला रुलिया राम : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि आये साल जो ट्रैक्टरों के रेट्स बढ़ रहे हैं इस बारे में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ताकि रेट्स बढ़ने न पाएं?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

श्री अध्यक्ष : लाला रुलिया राम का सवाल समझ में नहीं आया है?

लाला रुलिया राम : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि ट्रैक्टरों की कीमत पिछले साल से ज्यादा हो गई है? इस बारे में क्या हमारी हरियाणा सरकार ने केन्द्रीय सरकार को लिखा है कि ट्रैक्टरों की कीमत इतनी क्यों बढ़ गई है? क्या इस बारे में उन से कोई पल व्यवहार किया गया हे?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

चौधरी बृज लाल : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि ट्रैक्टरों के ऊपर जो लोन देते हैं, उसका रेट आफ इन्ट्रैस्ट क्या है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : साढ़े 10 परसैटं है, इससे कम तो है नहीं ।

मलिक सतराम दास बतरा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि फोर्ड और बाई–लार्ज ट्रैक्टर जो हैं, इन दोनों में से युटिलाईजेशन किस ट्रैक्टर की ज्यादा है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, बाई–लार्ज तो मिलते ही नहीं, फोर्ड ट्रैक्टर ही मिलते हैं ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जमीन की होलडिंगज के हिसाब से ही ट्रैक्टर की कीमत रखी जाऐगी?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह मामला केन्द्र सरकार का है ।

चौधरी मेहर चन्द : जैसा कि मिनिस्टर साहब ने बतलाया कि ट्रैक्टरों की कीमतों का मामला सैन्टर गवर्नमैंट के हाथ है, यह बात तो मैंने मानी लेकिन जो ऐग्रीकलचरल इम्पलीमैंट्स जैसे कस्सी, कसौली वगैरह हैं, इन की कीमतें भी बढ़ गई हैं, इसका क्या कारण है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसके लिये आनरेबल मैम्बर साहेबान अलग से नोटिस दें तो हम बता देंगे ।

चौधरी अब्दूर रजाक खां : क्या मिनिस्टर साहब बतलाने का कष्ट करेंगे कि हरियाणा सरकार किसानों को राहत देने के लिये ऐग्रीकल्चरल इम्पलीमैंटस पर टैक्स माफ करेगी?

(कोई जवाब नहीं दिया गया)

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे जैसे कि सरकार ने जमींदारों पर पाबन्दी लगा रखी है कि गेहूं 105 से ज्यादा और बाजरा 74 रु० फी किवटल से ज्यादा नहीं बेचा जाएगा तो इस चीज को देखते हुए सरकार उनका ट्रैक्टर लोन माफ करेगी?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, इस वक्त हालत यह है कि जो अनाज की स्पोर्ट प्राइस गवर्नमैंट ने निश्चित की थी उससे भी कम कीमत पर अनाज बिक रहा है । इस वक्त तो बल्कि स्पोर्ट प्राइस देने के लिये सरकार को मार्किट में आना पड़ता है, कीमत घटाने के लिये नहीं ।

मलिक सतराम दास बतरा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि सरकार ने ट्रैक्टरों पर जो 150 रुपये टैक्स लगा रखा है और वही टैक्स हमारे पड़ौसी राज्य में नहीं है इस प्रश्न पर विचार किया जाएगा कि इसको माफ कर दिया जाए?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : 150 रुपये जो है वह टैक्स नहीं है वह तो रजिस्ट्रेशन फीस है जो कि आये सात्र ली जाती है ।

श्री अमर सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि बीस सूत्रीय प्रोग्राम को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सरकार सैंटर से मिल कर ट्रैक्टरों की कीमत घटाने की कोशिश करेगी?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : जरूर कोशिश करेंगे ।

श्री धज्जा राम : जैसे कि मन्त्री महोदय ने बताया फोर्ड ट्रैक्टर की कीमत तीन साल में बढ़ कर 55000 हो गई है तो कहीं यह बात सच तो नहीं है कि इन ट्रैक्टरों के मैनुफैक्चरर जो हमारे फरीदाबाद में बैठे हैं वे ऊपर से मिल मिला कर अपनी मन मर्जी से कीमतें बढ़ाते जाते हैं और जो ट्रैक्टर हम बाहर से मंगवाना चाहते हैं उनके लिये गवर्नमैंट आफ इंडिया हमारा लैटर रिजैक्ट कर देती है? क्या यह सच हे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : मुझे सैटर की सरकार के बारे में कुछ नहीं पता । मुझे तो अपनी सरकार के बारे में पता है ।

श्रीमती चन्द्रावती : जैसे मुख्य मन्त्री जी ने अभी कहा कि अनाज के भावों पर. कन्ट्रोल रखा जाता है तो यह जो ट्रैक्टर्ज और खेती के इम्पलीमैंटस हैं इन पर भी इसी प्रकार से कन्ट्रोल रखा जाएगा?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : कन्ट्रोल तो आलरेडी है । जिस तरह से आपके सामने कारों की हालत हो रही है उसी तरह एक दिन यही हालत ट्रैक्टरों की भी हो जाएगी ।

तारांकित प्रश्न संख्या 1497

यह प्रश्न पूछा नहीं गया, क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी चांद राम, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Opening of Shops on Sundays

***1500. Shri K.N. Gulati :** Will the Minister for Transport be pleased to state—

(a) whether Government is aware of the fact that in all cities of Haryana **40 to** 50 % shops remain open on Sundays ; and

(b) if so, whether the Government intends to adopt a uniform policy in this regard ?

Transport Minister (Shri K.L. Poswal) :

(a) It is not a fact that 40 to 50 % of shops remain open on Sundays.

(b) Question does not arise.

Applications for Electricity Connections

***1489. Shri Om Parkash Garg :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the district-wise total number of applications

for electricity connections pending with the Haryana State Electricity Board as on 31st December, 1975; and

(b) the number of such applications which are more than six months old and the time by which the connections are likely to be given to all such applicants ?

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha) :-

(a) The requisite information is laid on the table of the House.

(b) The total number of pending applications which are more than 6 months old as on 30th November, 1975, is 13,675. These applications are proposed to be given connections during the year 1976-77.

Information for part (a)

(a) District-wise information is not available as the boundaries of H.S.E.B. divisions/ Circles are not co-terminus with revenue district boundaries. The information as on 31st December, 1975 is not readily available. However, Circle-wise number of pending applications for electricity connections as on 30th November, 1975, are as under :—

	Name of Circle	Total no. of pending applications	Approximate area of the districts covered by the Circle
1.	Chandigarh	5,587	Ambala and a part of

			Kurukshetra.
2.	Kamal	8,048	Karnal and a part of Kurukshetra and a part of Jind district.
3.	Faridabad	2,799	A part of Gurgaon district.
4.	Delhi	7,731	Sonepat and a part of Gurgaon and and Rohtak districts.
5.	Hissar	4,963	Hissar and a part of Bhiwani district and Sirsa District.
6.	Rohtak	8,563	Jind, Mohindergarh and a part of Rohtak and Bhiwani districts.
Total		37,691	

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पैंडिग ऐप्लीकेशंज में से एम० आई० टी० सी० की कितनी ऐप्लीकेशंज हैं?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, सवाल में एम० आई० टी० सी० के बारे में तो नहीं पूछा गया था इसलिए अलग से नोटिस दें ।

Mr. Speaker : Not a supplementary to this question.

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जो ऐप्लीकेशंज पैडिंग हैं इनको कब तक कनैक्शन दे देगें?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : इन ऐप्लीकेशंज की टैस्ट रिपोर्टस ज्यों ज्यों हमारे पास आती हैं हम उन्हें पूरा करने की कोशिश करते हैं । दूसरा कारण मुख्य मन्त्री जी ने भी बताया था कि जैसे जैसे हमें मैटिरियल मिलता जाता है हम कनैक्शन देने का प्रयत्न करते रहते हैं ।

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि बैकवर्ड एरियाज में जो 3– 3 साल से ऐप्लीकेशंज पैडिंग पड़ी हैं और उनकी टैस्ट रिपोर्टस भी आ चुकी हैं उनको कब तक कनैक्शन दिलवा दिये जाएगे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिह चट्ठा : अगर मेंबर साहब कोई स्पैसिफिक केस तीन साल का बता दें तो मैं इमीजिएट इन्क्वायरी करवा कर बता सकता हूं । मेरे ख्याल से तीन साल की कोई ऐप्लीकेशन सारी स्टेट में पैडिंग नहीं है ।

श्री गुलाब सिंह जैन : अभी बताया गया कि मैटिरियल की कमी की वजह से कनैकशन नहीं मिलते । उसमें भी विशेषकर कंडक्टर्ज की कमी होती है । कंडक्टर बनाने के लिये ऐलमो– नियम का कोटा मैनुफैक्चरर्ज को दिया जाता है और वे आगे. किसी और को दे देते हैं । क्या ऐसे स्टैप उठाए जाएंगे कि

ऐलमोनियम का कोटा बिजली बोर्ड को दिया जाए ताकि कंडक्टर्ज की कमी न रहे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : यह इंडस्टरी का सवाल है लेकिन फिर भी हम इस बात पर विचार करेंगे?

श्री ओम प्रकाश गर्ग : अभी मन्त्री महोदय ने बताया कि हमें मैटिरियल नहीं मिलता है । मैं यह पूछना चाहता ी कि और कंज्यूमर्ज को तो मिल जाता है आपको क्यों नहीं मिलता?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : बहुत से कारखाने हैं जो मैटिरियल तैयार करते हैं वह माल अपने एजेन्टस को देते हैं । सरकार सारे कारखानों से माल कैसे उठा लाए ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : जो पैडिंग ऐप्लीकेशंज है उनमें जो एम०आई०टी०सी० की हैं वे तो सरकार की अपनी हैं तो क्या उनको प्रायरिटी दी जाएगी?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : एम आई० टी० सी० को हमेशा प्रायरिटी दी जाती है

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि यह मैटिरियल सीधा कारखानों से खरीदा जाता है या टैंडर लेते हें?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : बाकायदा टैंडर आते हैं ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि मैटिरियल की कमी है या फाइ– नैसं की कमी है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः दोनों की कमी है ।

मलिक सतराम दास बसरा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पिछले साल का जो कनैकशन देने का टारगैट था वह पूरा हो गया है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : वह तो टारगैट से भी ज्यादा हो गया है ।

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जिन किसानों ने तीन तीन साल से लोन ले रखे हैं और उनकी ऐप्लीकेशंज पैडिंग हैं और किला महेन्द्रगढ़ में भी जो ऐसे केस हैं उनको प्राथमिकता दी जाएगी?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : मैंने अभी अर्ज किया था कि तीन साल पूराना केस कोई नहीं है अगर कोई स्पैसिफिक केस है तो बताएं ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पिछला टारगैट तो पूरा हो चुका है इस बार का कितना टारगैट रखा है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा : जितना टारगैट रखा है वह जरूर पूरा होगा ।

Overtime Allowances paid to Drivers/Conductors

***1504. Rao Dalip Singh :** Will the Minister for Transport be pleased to state—

(a) the total amount paid as overtime allowance to the conductors and Drivers, separately, during the years 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to date ; and

(b) the manner in which the overtime is counted and the rate per hour at which it is paid ?

शिक्षा एवं राज्य परिवहन मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) :

वर्ष	परिचालक	चालक	कुल राशि
1972—73	4,711,999.35	5,59,077.00	10,31,076.35
1973—74	10,35,177.70	11,88,781.91	22,21,959.61
1974—75	9,57,881.25	10,09,905.21	19,67,786.48
1975—76 से आज तक			

387,775.15 4,32,425.50

8,00,200. 65

कुल 28,32,833. 4531,83,189.62

60,21,023.07

(ख) परिचालकों तथा चालकों को ओवर टाईम की अदायगी मोटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्ज एक्ट 1961 की धाराओं के अनुसार की जाती है ।

श्री गिरीश चन्द जोशी : क्या मन्त्री जी बताएंगे कि 1973–74 में तो यह राशि 22 लाख रुपये थी, 1974–75 में 19 लाख रुपये और 1975– 76 में यह आठ लाख रुपये रह गई तो यह हर साल घटती क्यों गई है?

परिवहन मंत्री (श्री के० ऐल० पोसवाल) : यी घटी नहीं है बल्कि हमारी ऐफीशैसी की है और कुछ हमारा फलीट भी बढ़ गया है ।

Mr. Speaker : The Question hour is over.

State Trading in Cattle

***1402. Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Minister for Finance be pleased to state whether there is any scheme under consideration of the Government for "State Trading in Cattle", if so, the details thereof **and** the period within which it is likely to be implemented ?

वित्त मंत्री (श्री राम सरन चन्द मित्तल) :

(क) नहीं ।

(ख) स्वाल पैदा नहीं होता ।

Milk Plant at Rohtak

***1430. Chaudhri Dal Singh :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

(a) whether the Milk Plant at Rohtak has been set up ;

(b) if so, the cost of the building and that of the machinery installed therein, separately ;

(c) if the reply to part (a) above is in the negative the time by which the said plant is likely to be set up ?

वित्त मत्री (श्री राम सरन चन्द मित्तल) :

(ए) तथा (सी) संयन्त्र पूर्ण होंने वाला है । चालू वित्तीय वर्ष में किसी समय इसके चालू होने की आशा है ।

(बी) संयत की लागत का अनुमान लगभग 172. 75 लाख रुपये है, जिसका व्यौरा निम्नलिखित है :–

रुपये

लाखों में

(1) भवन निर्माण कार्य

38. 07

(2) मशीनरी तथा उपस्कर

126. 45

(3) राष्ट्रीय डैयरी विकास बोर्ड को सेवा प्रभार के

8. 23

रूप मैं देय।

Cranes for the Construction Work

***1450. Chaudhri Devi Lal :** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state—

(a) the number of cranes acquired or purchased for the construction works of Augmentation Canal, Bhakra Canal and Drains in the State, separately together with the amount paid as rent and price, separately during the period from May, 1968 to date ; and

(b) the number of cranes disposed of and still with Department concerned as at present separately ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दाम गुप्त):

(क) राज्य में आवर्धन नहर, भाखडा नहर और नालों के निर्माण कार्य के लिए कोई भी क्रेन न ही ली गई थी और न ही खरीदी गई थी ।

(ख) उक्त (क) के अनुसार प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता ।

Promotion of the persons belonging to the Scheduled Castes and Backward Classes

***1496. Chaudhri Chand Ram :** Will the Chief Minister be pleased to state whether the Haryana Government has issued orders reserving vacancies and posts in cases of promotions in all departments for persons belonging to the Scheduled Castes and Backward Classes and, if so, since when, and a copy of the same may be placed on the Table of the House ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : हरियाणा सरकार अनुसूचित जातियों तथा पिछड़े वर्ग के सदस्यों को उच्च पदों पर पदोन्नति के समय आरक्षण देने के बारे में संयुक्त पंजाब सरकार द्वारा सितम्बर, 1963 में जारी की गई हिदायतों का पालन कर रही है, जोकि समय समय पर संयुक्त पंजाब सरकार के पत दिनांक 23 अगस्त, 1966, तथा हरियाणा सरकार के पतों दिनांक 10 अगस्त, 1967, 11 अक्तूबर, 1967 तथा 10 दिसम्बर, 1971 द्वारा संशोधित की गई थी । इन पतों की प्रतियां विधान सभा के पटल पर रखी जाती हैं ।

No. 6486-5WG-II-63/19193.

From

The Secretary to Government, Punjab,

Scheduled Castes and Backward Classes Department.

To

All Heads of Departments, Commissioners of Divisions, Deputy

Commissioners and the District & Sessions Judges in the State and Registrar Punjab High Court, Chandigarh.

Dated Chandigarh, the 12th September, 1963.

Subject :— Reservation for the members of Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Backward Classes in promotion cases.

Sir,

I am directed to refer you to the subject noted above and to say that present reservation for Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other Backward Classes is applicable to new appointments and not to promotions which are governed by consideration of merit and seniority alone. Since those Castes/ Classes are poorly represented in various services in the upper grades under the State Government, it has been under the active consideration of Government that some reservation in higher grade posts as well should be made for them. It has now been decided that except in the case of All India Services, 10 per cent of the higher posts to be filled by promotion should be reserved for the members of Scheduled

Castes, Scheduled Tribes and Backward Classes (9 % for the members of Scheduled Castes and Scheduled Tribes and 1 per cent for the Backward Classes) subject to the following conditions :-

(a) the persons to be considered must possess the minimum necessary qualifications ; and

(b) they should have atleast a satisfactory record of service.

2. The receipt of this communication may please be acknowledged. Yours faithfully,

Sd/-

Assistant Secretary Political,

for Secretary to Government, Punjab,

Scheduled Castes/Scheduled Tribes and Backward Classes..

A copy is forwarded to all (i) Financial Commissioners Punjab and (ii) Administrative Secretaries to Government, Punjab, for information and necessary action.

Sd/-

Assistant Secretary Political

for Secretary to Govt. Punjab, Scheduled

Castes/Scheduled

Tribes & Backward Classes.

To

(i) All Financial Commissioners, Punjab.

(ii) All Administrative Secretaries to Govt., Punjab.

U.O. No. 6486-5WG-II-63, dated Chandigarh, the 12th September, 1963.

No. 6872-W G-66/24917.

From

The Secretary to Government, Punjab, Scheduled Castes and Backward

Classes Department.

To

All Heads of Departments, Registrar Punjab High Court, Commissioners of Divisions, Deputy Commissioners and the District & Session Judges an d the Sub-Divisional Officers (Civil) in the Punjab.

Dated Chandigarh, the 23rd August, 1966.

Subject :—Reservation for the members of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes in promotion cases.

Sir,

I am directed to refer to Punjab Government instructions contained in circular letter No. 6486-5WG-II-63/19193, dated the 12th September, 1963, supplemented by letter No 10181-4WG-63/795, dated the 14th January, 1964, 2125-4W GI/64/5213, dated the 18th March, 1964, and No. 4917-4WGI-66/18026, dated the 21st June, 1966, on the subject noted above wherein decision of 10% reservation in promotional posts for the members of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes had been detailed.

2. Government have since been receiving references from several quarters seeking clarifications on some basic points which cropped up as a result of actual implementation of the said policy. After careful consideration of the matter on the subject the Government have decided to fall completely in line with the policy obtaining in Government of India. On the basis of policy of Government of India, the following decisions are laid down :-

(1) Class I&II appointments :

(a) There will be no reservation for Scheduled Castes/Tribes and other Backward Classes in appointments made by promotion to a Class II or a higher service or post whether on the basis of seniority-cum-fitness, selection or competitive examination limited to departmental candidates.

(b) In the case of promotions made in or to Class I or II on the basis of seniority subject to fitness cases involving supersession of Scheduled Castes/Tribes Officers should be submitted for prior approval of the Minister concerned.

(2) Class III and Class IV appointments :

(a) In the case of class III and Class IV appointments, in grades or services to which there is no direct recruitment, there will be reservation, at 20 % for Scheduled Castes/Tribes and 2 % for Backward Classes in promotions made by (i) Selection or (ii) on the results of competitive examinations limited to departmental candidates. Where, however, there is direct recruitment the existing percentage of reservation at the time of recruitment will continue.

(b) Lists of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes officials should be drawn up to fill the reserved vacancy officials belonging to these classes will be adjudged separately, and not alongwith other officials and if they are suitable for promotion, they should be included in the list irrespective of their merit as compared to that of other officials. Promotions against reserved vacancies will, however, continue to be subject to the conditions of minimum necessary qualifications and satisfactory record of service.

(c) Cases involving supersession of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes will be reported within a month to the Minister concerned for information.

(3) Appointments to posts for conducting Research :

It is considered that in appointments for conducting research or organising, guiding and directing research there may be a great deal of difference between the best person available and the one who only possesses the prescribed minimum qualifications. It is desirable to look for the persons with the highest talents and accomplishments rather than be

content with those who may be just adequate. The number of such posts is not so large as to affect the interests of a considerable number of persons belonging to the Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes. On the other hand, the nature of work is such that if it is done conspicuously well, scientific progress and development of the country will be accelerated. It has, therefore, been decided that reservation both at the time of recruitment and at the time of promotions (20 % for Scheduled Castes/Tribes, 2 % for Backward Classes) will not apply in the case of appointments to posts for conducting research or organising, guiding and directing research.

(4) Roster :

(a) To give proper effect to the reservations prescribed every appointment authority will treat vacancies as reserved or unreserved according to model roster laid down in the P.G. circular letter No. 2360-4 WGI-64/4860, dated the 24th March, 1964. The roster will be maintained in the form of running account year to year. For example, if promotion in a year stops at point 6 of a cycle promotion in the following year will begin at point 7.

(b) If there are only two vacancies to be filled on a particular occasion, not more than one may be treated as reserved and if there be only one vacancy it should be treated as unreserved. If on this account, a reserved point is treated as unreserved, the reservation may be carried forward to the subsequent two recruitment years. Thus where the cadre strength is small say less than 5 and there is one post to be filled by promotion, it need not be treated as reserved but if

on this account a reserved point is treated as unreserved the reservation may be carried forward to the subsequent two recruitment years.

3. The officials belonging to Backward Classes will cease to be eligible for reservation in promotion when the annual income of their family exceeds the prescribed limit of Rs. 1,000 in case of Backward Classes determined on economic criterion and Rs. 1,800 (in case of socially Backward Classes) declared by Government.

4. The above decisions take effect from the date of issue of these orders. Promotions already made in accordance with the instructions in force prior to the issue of these orders, will not be disturbed. The pending cases may be decided immediately in accordance with these instructions.

5. You are requested to bring the above decisions to the notice of all concerned. The receipt of this communication may kindly be acknowledged.

Yours faithfully,

Sd/-

Deputy Secretary Backward Classes,

for Secretary to Government, Punjab, Scheduled Castes & Backward Classes Department.

Copy of letter No. 2480-SW&BC-67/22979, dated 10th August, 1967, from the Secretary to Government,

Haryana, Social Welfare and Backward Classes Department to all Heads of Departments, Financial Commissioner, Revenue, Haryana and all Administrative Secretaries to Government, Haryana, etc. etc.

Subject :—Reservation for the members of Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Backward Classes in promotion cases.

I am directed to refer to the erstwhile Punjab Govt. Scheduled Castes and Backward Classes Department circular letter No. 6872-4WGI-66/29992, dated the 23rd August, 1966, on the subject noted above, and to say that the decision contained in sub-para(2) of paragraph 2 thereof has been modified as follows to bring it strictly in conformity with the method and procedure being followed by the Government of India in the matter, subject of course to the higher percentage of reservation already being allowed in the Haryana State in the matter of recruitment:-

2. Class III and Class IV appointments :-

(a) In the case of Class III and Class IV appointments in grades or services to which there is no direct recruitment whatever, there will be reservation of vacancies at 20 % for Scheduled Castes/Tribes and 2 % for Backward Classes in promotions made by (i) selection or (ii) on the results of competitive examinations limited to departmental candidates.

(b) Lists of Scheduled Castes and Scheduled Tribes officials should be drawn up separately to fill the reserved vacancies. Officials belonging to these classes will be

adjudged separately and not alongwith other officials, and if they are suitable for promotion, they should be included in the list irrespective of their merit as compared to that of the other officials. Promotions against reserved vacancies will continue to be subject to the candidates satisfying the prescribed minimum standards.

(c) There will be no reservation in appointments made by promotion on the basis of seniority subject to fitness but cases involving supersession of Scheduled Castes/ Tribes officials, if any will be reported within a month to the Minister or Deputy Minister concerned for information.

(2) You are requested to bring the above decisions to the notice of all concerned for strict compliance.

(3) The receipt of this communication may kindly be acknowledged.

Copy of letter No. 4236-4SW&BC-67/30119, dated 11th October, 1967, from the Secretary to Government, Haryana, Social Welfare & Backward Classes Department, to all Heads of Departments, Commissioner Ambala Division and all Deputy Commissioners and Sub-Divisional Officer (Civil) in Haryana , the Registrar Punjab and Haryana High Court and District and Session Judges in Haryana.

Subject :—Reservation for the members of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes, in promotion cases.

I am directed to invite attention to the

correspondence resting with Haryana Govt. Social Welfare and Backward Classes Department No. 2480-SW&BC-67/22979, dated the 10th August, 1967, on the subject noted above, and to say that according to the existing instructions there is reservation for Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes in the case of Class III and Class IV appointments subject to the following conditions :-

(a) In grades or Services to which there is no direct recruitment there will be reservation of vacancies in promotions made by (i) selection or (ii) on the results of competitive examinations limited to departmental candidates.

(b) There will be no reservation in appointments made by promotion of the basis of seniority subject to fitness.

2. Government have under consideration the question of modifying their above instructions so that there should be reservation of vacancies irrespective of the fact whether promotion is made by a selection or on the results of the competitive examination or on the basis of seniority subject to fitness, and whether or not there is a provision for direct recruitment. Government have, therefore, decided that pending decision of the said policy question no reversion of members belonging to Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes should be effected, till further orders from the posts on which they have been promoted against reserved vacancies although under the relevant service rules, promotions were required to be made on the basis of seniority subject to fitness and for that matter there should have been no such reservation. This decision will however, not affect the reversions already made as a result of the classification given

in clause 2(c) in para 1 of the Government letter dated 10th August, 1967, referred to above ; status quo may be maintained in these cases pending policy decision.

3. The receipt of this communication may please be acknowledged.

Copy to all Administrative Secretaries, etc. English version of letter No. 5874-SWI-71/21351-413, dated the 10th December, 1971.

Subject :—Reservation for the members of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes in promotion posts.

I am directed to refer to Haryana Government instructions contained in circular letter No. 4236-4SW&BC-67/30119, dated the 11th October, 1967 and in circular letter No. 2480-SW&BC-67/22979, dated the 10th August, 1967 (copies enclosed for ready reference) and to say that after, further consideration, Government have decided to issue a clarification of Government policy on the above subject.

2. The Government, therefore, hereby issue the following special instructions, for the above purpose :—

(a) Where promotion is made on the basis of selection from slab of 3 officials (i.e. promotion by selection with greater emphasis on merit than on seniority vide instructions contained in composite Punjab Government letter No. 9129G-56/3964, dated the 17th September, 1956 and subsequent communications on the subject), there will be reservation of 20 % for the members of Scheduled

Castes/Tribes and 2 % for Backward Classes.

(b) Separate slab should be prepared (i) for officials of Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes and (ii) for other officials. While filling posts reserved for Scheduled Castes/Tribes and Backward Classes, only officials belonging to these two categories should be considered (separately for each category) and promotions made from amongst them. Officials other than those belonging to Scheduled Castes/Tribes or Backward Classes should be promoted similarly out of their own slab.

(c) If in any year, the promotion vacancies reserved for Scheduled Castes/ Tribes and Backward Classes cannot be filled because of lack of suitable candidates then these vacancies should be carried forward upto three succeeding years but these should not exceed 45 % in any case. Furthermore, a single continuous roster should be maintained in respect of such vacancies so that even if in a given year the total promotion vacancies for all categories are only 1 or 2 and, therefore, no reservation can be made for Scheduled Castes/Tribes etc. during that year, they should receive their due share during the subsequent years.

(d) While filling the promotion posts by reservation, the minimum standards of qualifications and experience as provided in the Services Rules should, however, be adhered to in every case and no relaxation should be made in that regard.

(e) In order to provide suitable stages for ensuring

22 % reservation (20% for Scheduled Castes and 2 % for Backward Classes), the following method should be adopted for filling reserved vacancies in a block of 100 vacancies :—

3-8-13-18-23-28-33-38-43-48-53-58-63-68-73-78-83-88-93-98.

In other words, every 3rd vacancy for promotion out of 5 should be treated as reserved for the members of the Scheduled Castes/Tribes, and vacancies occurring at Nos. 15 and 75 should be reserved for the Backward Classes.

(f) There will be no reservation for officials belonging to Scheduled Castes etc. in cases in which promotion is to be made on the basis of seniority subject to fitness.

3. It is requested that these instructions should be complied with strictly in your office and in all the offices under your control.

4. The receipt of this communication may kindly be acknowledged.

Delimitation of Electoral Wards of Municipal Committees

***1403. Chaudhri Ram Lal Wadhwa :** Will the Munister for Housing and Local Government be pleased to state—

(a) whether delimitation of all electoral wards in the Municipal Committees in the State has been done ;

(b) whether electoral rolls of Municipal

Committees in the State have been completed ; and

(c) the number together with names of the Municipal Committees, if any, in which delimitation of electoral wards has not been done and electoral rolls have not been completed so far and the reasons therefor in each case ?

स्थानीय शासन मंत्री (चौधरी पोकर राम गोदारा) : (क) नहीं । (ख) नहीं ।

(ग) जिन नगरपालिकाओं में...

(1) वार्ड बन्दी, एवं

(2) मतदाता सूचियों की तैयारी का कार्य अभी तक सम्पन्न नहीं हुआ है उनकी सूचियां कारणों सहित सदन के पटल पर रखी जाती हैं ।

विवरणिका

उन नगरपालिकाओं की सूचि जिनमें अभी तक वार्ड विभाजन का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ हे ।

क्रम संख्या	नगरपालिका का नाम	अब तक किये गये कार्य की वर्तमान स्थिति	कारण

1	कालका	इन नगरपालिकाओं के वार्ड विभाजन के प्रस्ताव प्राथमिक रूप से प्रकाशित कराये जा चुके हैं ।	चूंकि नगरपालिकाओं के सीमा वृदिध प्रस्ताव विचाराधीन थे, इस कारण वार्ड विभाजन का कार्य पहले हाथ में नहीं लिया जा सका ।
2	पानीपत		
3	भिवानी		
4	जीन्द		
5	करनाल	इस नगरपालिका के वार्ड विभाजनके प्रस्ताव बारे प्राथमिक अधिसूचना जल्दी ही जारी की जा रही है ।	यथोपरि
6	यमुनानगर	प्राथमिक आंकडे वार्ड विभाजन प्रस्ताव के तैयार करने के लिये मौका पर एकत्रित किये जा रहे हैं ।	यथोगिर

7	सिरसा	वार्ड विभाजन का प्रस्ताव तैयार करने के लिये प्राथमिक आंकड़े शीघ्र ही एकत्रित किये जायेंगे ।
8	रोहतक	सीमा वृदिध से सम्बन्धित इन नगरपालिकोओं के प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन हैं । अतः वार्ड विभाजन का कार्य इन सीमा वृद्धि प्रस्तावों के अन्तिम रूप धारण करने के पश्चात् हाथ में लिया जायेगा ।
9	गुडगांवा	
10	रिवाडी	
11	बहादुरगढ़	

उन नगरपालिकाओं की सूचि जिनमें अभी तक मतदाता सूचियों की तैयारी का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है ।

क्रम संख्या	नगरपालिका का नाम	मतदाता सूचियों की तैयारी की वर्तमान स्थिति	मतदाता सूचियों को देरी से तैयार करने का कारण
1	हिसार	मतदाता सूचियों की तैयारी का कार्य शीघ्र ही हाथ में लिया जायेगा	सीमा वृद्धि वार्ड विभाजन के प्रस्तावों के अन्तिम रूप शीघ्र धारण न करने के कारण ।
2	झज्जर		
3	डबवाली		
4	नरवाना		
5	चरखी दादरी		
6	कालका	इन नगरपालिकाओं के वार्ड विभाजन प्रस्ताव अन्तिम रूप धारण करने की परीक्रिया अधीन हैं ज्यों ही यह अन्तिम रूप में प्रकाशित हुए, मतदाता सूचियों की तैयारी का	वार्ड विभाजन के प्रस्तावों के अन्तिम रूप धारण न करने के कारण
7	पानीपत		
8	भिवानी		
9	जीन्द		
10	करनाल		

11	यमुनानगर	कार्य हाथ में लिया जायेगा ।	
12	सिरसा	इस नगरपालिका की मतदाता सूचियां, वार्ड विभाजन प्रस्ताव के अन्तिम रूप धारण करने के पश्चात् तैयार की जायेंगी, जिस बारे कार्यवाही की जा रही है ।	वार्ड विभाजन के प्रस्तावों के अन्तिम रूप धारण न करने के कारण ।
13 14 15 16	रोहतक गुडगावां रिवाडी बहादुरगढ़	इन नगरपालिकाओं से सम्बन्धित सीमा वृदिध प्रस्ताव अभी भी सरकार के विचाराधीन हैं । इन्हें जल्दी ही अन्तिम रूप दिया जा रहा है । इसके पश्चात् इनके वार्ड विभाजन का कार्य हाथ में लिया जायेगा तथा इसकी समाप्ति के पश्चात् मतदाता सूचियां तैयार की जायेंगी ।	सीमा वृद्धि तथा वार्ड विभाजन के प्रस्तावों के अन्तिम रूप धारण न करने के कारण ।

Market Committees in the State

***1431. Chaudhri Dal Singh :** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state—

(a) the total number of Market Committees in the State as on 3rd March, 1975 ; and

(b) the total income accrued to the Market Committees referred to in part (a) above during the years 1972-73, 1973-74 and 1974-75, separately ?

कृषि मंत्री (कर्नल महा सिंह) :

(ए) 80

(बी) 1972—73 3,22,93,227.87 रुपये

1973—74 4,17,80,383.58 रुपये

1974— 75 7,31,01,488.94 रुपये

Income from Haryana Roadways (Depotwise)

***1451. Chaudhri Devi Lal :** Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) the depotwise net income, after deducting all types of expenditure accrued to the Government from the Haryana Roadways for the years 1973-74, 1974-75 and 1975-76, separately ; and

(b) the depotwise average income accrued to the Government as a result of over loading in the Haryana Roadways buses during the period referred to in part (a) above, separately ?

परिवहन मंत्री (श्री के० एल० पोसवाल) :

(क) कथन सदन की मेज पर रख दिया गया है ।

(ख) ओवरलोडिंग से प्राप्त आय का हिसाब पृथक नहीं रखा गया है ।

विवरणिका

सभी खर्चों को निकाल कर हरियाणा राज्य परिवहन को डिपोज अनुसार हुई नैट आय (रुपये लाखों में)

डिपो का नाम	1973–74	1974–75	1975–76 (अप्रैल से अक्तूबर, 1975 तक)
अम्बाला	150.35	159.53	95.07
गुडगांवा	124.87	127.49	87.19
चण्डीगढ	102.01	125.13	77.93
रोहतक	175.81	160.66	105.26
करनाल	224.78	207.17	116.43

हिसार	177.73	189.21	108.57
रिवाडी	83.84	99.06	73.29
जीन्द	85.32	110.36	68.03
भिवानी	30.92	89.73	61.59
कैथल	--	65.53	68.08
कुल	1,155.63	1,333.87	861.44

Construction of roads in District Kurukshetra

***1497. Chaudhri Chand Ram :** Will the Minister for Revenue pleased to state—

(a) whether the road from Radaur to Mustafabad in Kurukshet District has been completed ; and

(b) the latest stage of the construction of the following roads :

(i) From Babain to Akalgarh.

(ii) Yari to Yara and Lakhmari and Akalgarh.

(iii) Bapoli to Jogi Majra.

(iv) Ladwa to Mehoa-Kharkli.

(v) Babain to Sunarikalan, Dhanani and Akalgarh.

(vi) From Ladwa to Mustafabad.

(vii) Radaur to Ghillaur.

(viii) Radaur to Hartan.

(ix) Harnaul to Kheri Lakha Singh.

(x) Radaur to Jubhal-Kanjnu ; and

(xi) Radaur to Indri.

राजस्व मन्त्री (पंडित चिरंजी लाल शर्मा) :

(ए) अभी नहीं ।

(बी) प्रत्येक सड़क की स्थिति को दर्शाता हुआ एक विवरण सदन की मेज पर प्रस्तुत है ।

विवरणिका

1. वबैन से
अकालगढ

(ए) बरास्ता सुनारिकलाँ	दोहरे' सम्पर्क को छोड़ कर 7. 5 किलोमीटर की लम्बाई में से 8. 5 किलोमीटर पक्की की जा चुकी है ।
(बी) बरास्ता संधौर	दोहरे सम्पर्क कोछोडकर 7. 75 किलोमीटर की लम्बाई में से 7. 50 किलोमीटर पक्की की जा चुकी है ।

2. यारी से यारा
और लखमरी और
अकालगढ

(ए) यारी से यारा भाग	मुकम्मल ।
(बी) यारा से लखमरी भाग	यारा से बिरथली तक केवल मिट्टी का कार्य किया गया है बिरथली से लखमरी दोहरा भाग है । इस लिये इसके निर्माण के लिये कोई प्रस्ताव नहीं है ।
(सी) लखमरी से अकालगढ भाग	केवल मिट्टी का कार्य किया गया है ।

3. बपोली से जोगी
माजरा

(ए) बपोली से शाहजादपुर भाग	मुकम्मल ।
(बी) शाहजादपुर से जोगी माजरा	यह एक दोहरा सम्पर्क है । इसलिये इसका कोई प्रस्ताव नहीं है ।

4. लाडवा से मोहोआखरकली	(इसका ठीक नाम मेहरा है मे होआ नहीं)
(ए) लाडवा से मेहरा भाग	मुकम्मल ।
(बी) मेहरा से खरकली	दोहरा सम्पर्क होने के कारण इस के निर्माण के लिये कोई प्रस्ताव नहीं है ।
5 वबैन से सुनारियाकला, धरनी और अकालगढ	जैसे क्रमांक (बी) – 1 में स्थिति दी गई है ।
6 लाडवा से मुस्तफाबाद	
(ए) लाडवा से गजलाना	दोहरे भाग को छोड्कर 9 किलोमीटर में से 8. 85 किलोमीटर मुकम्मल की जा चुकी है ।
(बी) गजलाना से मुस्तफाबाद	8. 33 किलोमोटर में से 7. 33 किलोमीटर मुकम्मल हो चुकी है ।
भाग	
7. रादौर से धिलौर	3 किलोमीटर में से 2.00 किलोमीटर में केवल मिट्टी का कार्य किया गया है ।

8. रादौरा से हरतान	3.30 किलोमीटर में से 3.15 किलोमीटर में केवल मिट्टी का कार्य किया गया है ।
9. हरलौल से खेडी लखा सिंह	मुकम्मल हो चुकी है
10. रादौर से जमाल कुजन	मुकम्मल हो चुकी है ।
11. रादौर से इन्द्री	कोई योजना नहीं है क्योंकि यह दोनों गांव पक्की सड्कों पर स्थित हैं ।

अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर

Panchayat Accounts Audited in the State

474. Rao Dalip Singh : Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) the district-wise number of Panchayats in the State, the accounts of which were audited during the years 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to-date ;

(b) the total number of cases of embezzlement detected during the years 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to-date ; and

(c) the action taken or proposed to be taken by the Government in the cases as referred to in part (b) above ?

कृषि मन्त्री (कर्नल महा सिंह) :

(क) गाम पंचायतें जिनका लेखा परीक्षण वर्ष 1972–73, 73–74 तथा 1974–75 से आज तक किया गया उनकी संख्या 1202, 1516, 1414 तथा 1160 क्रमशः हैं ।

(ख) जिन मामलों में वर्ष 1972–73, 1973–74 तथा 1974–75 से आज तक गबन पाया गया की संख्या 336, 881, 487 तथा 645 क्रमशः हैं ।

(ग) उपायुक्तों व खण्ड विकास तथा पंचायत अधिकारियों को दोषी पंचायतों के विरूद्ध शीघ्र, तथा उचित कार्यावाही करने के लिए कहा गया है ।

Transformers Damaged in the State

475. Rao Dalip Singh : Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the district-wise number of transformers damaged in the State during the years 1971-72, 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to-date ;

(b) the district-wise total loss caused by the damage to transformers in the State during the years 1971-72, 1972-73, 1973-74 and 1974-75 to-date ; and

(c) the reasons for the damage of transformers and the action taken in each case ?

मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त) :

(क) मांगी गई सूचना सदन की मेज पर रखी जाती है ।

(ख) रुपयो में क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मरज की वजह से हानि निकालना सम्भव नहीं है ।

(ग) प्रत्येक मामले में क्षति होने के कारण बिल्कुल उपलब्ध नहीं है, फिर भी ट्रांसफार्मरज के क्षति होने के आम कारण इस प्रकार है रू––

(1) वाईडिंग इन्शुलेशन का फेल होना ।

(2) ट्रांसफार्मरज पर क्षमता से अधिक भार डालना ।

(3) ट्रांसफार्मरज के तेल का रिसना ।

(4) कन्ट्रोलिंग स्विच गियर में खराबी हो जाना ।

शीघ्र ही क्षति ग्रस्त ट्रांसफार्मरज को बदल दिया जाता है, और बोर्ड की भिन्न भिन्न मुरम्मत के वर्कशाप में मुरम्मत के लिये भेज दिये जाते हैं ।

परिशिष्ट

क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मरज की संख्या

क्रमांक	परिमंडल	71–72	72–73	73–74	74–75	75–76 (1–4– 75 से

3 0— 1 1

— 7 5 तक

)

1	चंडीगढ़	265	188	294	335	280
2	करनाल	382	341	400	402	309
3	देहली	265	345	260	271	250
4	हिसार	d30	271	363	372	382
5	रोहतक	391	432	453	460	435
6	फरीदाबाद	142	186	214	267	216
	कुल जोड़	1,875	1,763	1,984	2,107	1,872

Land Development Bank

476. Rao Dalip Singh : Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the district-wise number of cases of mis-utilisation of loans advanced by the Land Development Bank in the State to-date ; and

(b) the steps taken by the Government to recover the loan and action taken thereon ?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) :

(क)

क्रमांक	नाम जिला	दुरुपयोग कसो की संख्या
1	अम्बाला	34
2	कुरूक्षेत्र	23
3	करनाल	24
4	जीन्द	77
5	हिसार	117
6	सिरसा	79
7	रोहतक	134
8	सोनीपत	37
9	भिवानी	55
10	महेन्द्रगढ़	158
11	गुडगांव	158

(ख) (1) क्षेत्रीय स्टाफ ऋणियों से समय पर ऋण को प्रयोग करवाने के लिये हर सम्भव चेष्टा करता है ।

(2) यदि कोई ऋण दुरुपयोग हो जाता है तो लम्प–सम वसूली के लिये पंजाब सहकारी भूमि मारटगेज बैक एक्ट, 1957 के अन्तर्गत कार्यवाही की जाती है ।

कार्य मंत्रणा समिति का प्रथम प्रतिवेदन

Mr. Speaker : I report the time table fixed by the Business Advisory Committee in regard to various business.

"The committee met in the chamber of the Speaker on Tuesday, the 13th January, 1976, at 4.00 P.M.

The Committee, after some discussion, recommended that the Business on the 14th, 15th, 16th, 19th, 20th, 21st, 22nd and 23rd January, 1976 be transacted as follows :-

Wednesday, the 14th January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. First Report of the Business Advisory Committee.

3. Resumption of discussion on Governor's Address and Vote of thanks.

Thursday, the 15th January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. Non-official business.

Friday, the 16th January, 1976 (9.30 A.M.)

1. Questions Hour.

2. Presentation of Budget for the year 1976-77.

Saturday, the 17th January, 1976 — Off day.

Sunday, the 18th January, 1976 — Holiday.

Monday, the 19th January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. Papers to be laid on the Table.

3. Presentation of Supplementary Estimates (Second Instalment) for the year 1975-76 and the Report of the Estimates Committee thereon.

4. General Discussion on Budget.

Tuesday, the 20th January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. Resumption of discussion on Budget and reply by the Finance Minister.

Wednesday, the 21st January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. Discussion and voting on Demands for Grants of Budget.

Thursday, the 22nd January, 1976 (2.00 P.M.)

1. Questions Hour.

2. Non-official business.

Friday, the 23rd January, 1976 (9.30 A.M.)

1. Questions Hour.

2. Appropriation Bill on Budget. (2 hours).

3. Discussion and voting on Supplementary Estimates (Second Instalment) for the year 1975-76. (One hour)"

Transport Minister (Shri K.L. Poswal) : Sir, I beg to move—

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Motion moved—

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Question is—

That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee.

The motion was carried.

Mr. Speaker : The House will now resume

discussion on the Governor's Address.

"That is really substantial for a political man is that events must have supported him not the high scholarship or intelligence."

राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा (पुनरारम्भ)

तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान

Mr. Speaker : The House will now resume discussion on the Governor's Address.

Chaudhri Phool Chand (Mullana) : who was in possession of the House, when it adjourned yesterday may please resume his speech.

चौधरी फूल चन्द (मुलाना–अनुसूचित जाति) : अध्यक्ष महोदय, कल गवर्नर महोदय कें अभिभाषण पर चर्चा करते हुये सदन का समय समाप्त हो गया था इस लिये मुझे बैठना पड़ा । आज मैं अपनी बात कहने लगा हूं । मैं कल जिकर कर रहा था और हरियाणा की प्रगति के बारे में बता रहा था कि गवर्नर महोदय ने अपने अभिभाषण में सभी महकमों के बारे में जितने अच्छे ढंग से अपने छोटे से अभिभाषण में बताया है उस बारे में मैं कहूंगा कि एक प्रकार शु उन्होंने गागर में सागर भर दिया है । स्पीकर साहब, कुछ साल पहले और खास तौर से 1968 से पहले आप को मालूम है कि हरियाणा में सिंचाई के साधन नाम मान को ही थे और हमारी ज्यादातर खेती बारानी थी हम कुदरत पर निर्भर

करते थे । अगर भगवान खुश हो गये और कुछ बारिश हो गई तो कुछ फसल हो जाती थी नहीं तो खुशकसाली रहती थी लेकिन आज सात आठ साल के अर्से में जो कुछ इस सम्बन्ध में हुआ उससे आज हमारी दशा बिल्कुल भिन्न है । हमारी सरकार ने सिंचाई के साधन हर ढंग से बढ़ाये । कई प्रकार की स्कीमों को बना कर बरसाती बेकार पानी जो बह कर देहातों में फल्ड के रूप में लोगों को तंग करता था उसे काबू में ला कर उसे सिंचाई के काम में लगाया जिससे एक तरफ तो लोग बाढ़ों की तबाही से बचे दूसरी तरफ इस पानी से फसले ज्यादा हुईं और इससे न सिर्फ किसान खुशहाल हुआ बल्कि सारी स्टेट में खुशहाली आई । फिर इसके साथ सरकार ने कई नई नहरें भी बनाई और ट्यूबवैल्ज की तो क्या ही बात करूं । मैं अर्ज करता हूं कि मई, 1968 में हरियाणा के अन्दर सिंचाई के लिए 29 हजार टयूबवैल्ज थे जिनको बिजली के कनैक्शंज मित्ने थे लेकिन आज 1975 के अन्त तक हमारे प्रांत में 1,35,000 टयूबवैल्ज हो गये जिन से आबपाशी हो रही है । इससे बहुत खुशहाली आई है और पैदावार बहुत बड़ी है । एक समय था जब हमारा राज्य खेती के उत्पादन में घाटे में था लेकिन आज हम इस में सरप्लस हैं । हमारी खेती की पैदावार इतनी बढ़ी है कि हम अपनी जरूरतें पूरी करने के बाद सैट्रल पूल में लाखों टन अनाज दूसरे कमी वाले प्रदेशों को सप्लाई करने के लिये देते हैं । इस सम्बन्ध में सरकार और भी कई स्कीमें चलाने जा रही है और जिस आशय को लेकर चौधरी बंसी लाल जी चले थे अगर वह पूरा हो गया तोएक वक्त आयेगा

कि हरियाणा की चप्पा चप्पा जमीन को आबपाशी के साधन मिलेंगे । वह आशय हमारी यह मौजूदा सरकार पूरा करेगी और उसे पूरा करने के लिये मजबूत कदम उठायेगी ताकि हमारी और भी ज्यादा पैदावार बढ़े और हमारे प्रदै। के लोगों का जीवन स्तर और ज्यादा ऊंचा उठे । इस सिलसिले में मैं एक बात कहना चाहता हूं और अगर उसे मैं नहीं कहता तो मैं अपने फर्ज से कोताही करूंगा । वह बात यह है कि यह जो ऐम० आई० टी० सी० के टयूबवैल्ज लगे हुये हैं उनका सिंचाई के लिये पूरी तरह से प्रयोग नहीं हो रहा है । हम देहात में दौरा पर जाते हैं और यह बात वहां देखने में आई है कि गांव में टयूबूवैल तो लग गया है लेकिन उसके वाटर कोर्सिज नहीं बने हैं जिनके न बनने से क्या होता है, जैसे मैंने पहले पानी ले लिया है और मेरे से आगे दूसरे ने पानी ले लिया है लेकिन अगर तीसरे नम्बर का आदमी हमारे से आगे पानी लेना चाहता है तो बीच का दूसरा आदमी कहेगा कि वह अपने खेत में से आगे पानी नहीं जाने देगा । यह इस लिये होता है कि वाटर कोर्स नहीं बना है । तो मैं अर्ज करता हू कि कैनाल ऐंड ड्रेनेज ऐक्ट को लागू करके वहां पर वाटर कोर्सिज बनाये जायें और ऐसा करके सरकार को पानी देने का प्रबन्ध करना चाहिये । सरकार अपनी तरफ से वहां पर वाटर कोर्सिज बना कर इस पानी को दे अगर ऐसा न किया गया तो हमारे देहात में ऐसे झगड़े चलते रहेंगे और यह झगड़ों का कारण बन सकती है । मैं आशा करता हूं कि सरकार इस बात की तरफ ध्यान देगी । गवर्नर साहब ने हमारी खेती की पैदावार के बारे में चर्चा करते हुये कहा है कि

हमारे यहां धान की पैदावार बहुत हुई, गन्ने की फसल बहुत अच्छी हुई और आगे भी ज्यादा से ज्यादा होती जायेगी । हमें खुशी है कि हमारी पैदावार इसी तरह से बढ़ती रहे और हम इस काबिल हों कि हम दूसरे कमी वाले प्रदेशों को ज्यादा से ज्यादा अनाज दे सकें । लेकिन इस सम्बन्ध में खेद का विषय यह है कि किसान बासमती के धान को बड़े चाव से काश्त करता है और हमारी बासमती हिन्दुस्तान में सबसे बढ़िया समझी जाती है, लेकिन इस दफा हमारे किसान की बड़ी ही दयनीय दशा हुई । दूसरा धान तो रेट फिक्स होने के बाद बिक गया लेकिन काफी अर्सा तक बासमती के धान की कीमत फिक्स नहीं हुई । और किसान को सस्ते दाम पर मण्डियों के अन्दर लाकर छोड़नी पड़ रही है । मुझे डर है, हो सकता है कि अगले साल किसान बासमती बोना छोड़ दे । मैं महकमा से अर्ज करूंगा कि इस ओर ध्यान दे । किसान की फसल उचित दाम पर बिकनी चाहिये क्योंकि उसकी लागत भी ज्यादा है, मेहनत भी ज्यादा है, बासमती पानी ज्यादा मांगती है, इसलिए इसकी कीमत ज्यादा बढ़ाने की चेष्टा करें । जहां तक गन्ने का प्रश्न है, प्रदेश में गन्ना खूब होता है । पिछले साल गन्ने का भाव 14 रुपये क्विटल के लगभग था । मैं समझता हूं पिछले साल और इस साल के हालात में कोई खास फर्क नहीं पड़ा । तो किस लिए आज किसान को सवा 10 रुपये क्विटल का रेट दिया जाए । क्या इस लिए कि उसका हौंसला टूट जाए और गन्ना बोना छोड़ दे ? मैं सरकार से प्रार्थना करना चाहूंगा कि इस ओर ध्यान दे । अगर हालात बदले हों या चीनी का रेट बदला हो तब

गन्ने की कीमत कम हो सकती थी । मुझे खुशी होगी कि देहातों में सस्ते दामों पर चीनी मिले, किसान भी इस बात से खुश है, लेकिन जब हालात में तबदीली नहीं हुई तो गन्ने का रेट क्यों तबदील हो गया । यह बहुत आवश्यक बात है, सरकार इस ओर ध्यान दे, यह मेरा सुझाव है ।

स्पीकर साहब, गवर्नर महोदय ने चर्चा करते हुए इस बात की ओर सदन का ध्यान दिलाया हए कि बैकों की मारफत गरीबों को कर्जे दिये । कर्जे देकर लोगों ने छोटे छोटे धंधे खोले किसानों को कर्जे उपलब्ध हैं, कुछ कर्जा मार्गेज बैक की मारफत दिया जाता है । इस में गुप्ता जी ने पिछली दफा करवाया था कि गरीब हरिजनों के लिए, जिन के पास जमीन नहीं है उन को जमीन खरीदने के लिए कर्जे दिए जाए लेकिन बीच में खुद ही बैक वालों ने रोक दिया और कहा कि हमारे पास फण्डज नहीं हैं, इस काम के लिए हम कर्जा नहीं देंगे । इसलिए मेरा सुझाव है कि देहातों के अन्दर जो गरीब आदमी हैं, चाहे वे हरिजन हैं, चाहे वे पिछड़ी श्रेणियों के हैं, जिसकी गांव के अन्दर जमीन नहीं है उसको कर्जा दिया जाए ताकि वह जमीन खरीद सके । जमीन के बिना गांव के अन्दर स्टेटस नहीं है, अगर वह गरीब आदमी किसी बेचने वाले से कर्जा लेकर जमीन खरीद लेता है तो कोई हर्ज नहीं । धीरे धीरे वह बैक लोन अदा करता रहेगा । इससे उसका स्टेटस बनेगा, उसकी कमाई का साधन भी बनेगा । सरकार इस की तरफ ध्यान दे ।

गवर्नर महोदय ने ऐजुकेशन का जिक्र किया है और आज क्वैश्चन आवर में भी स्कूलों को अपग्रेड करने की बात हुई । जितनी शिक्षा–संस्थाएं हैं, जो ऐजुकेशन इंस्टीच्युशन हैं उन में पहले बच्चे बड़े लाड–चाव से स्कुल जाते थे और स्कूल और कालिज से निकलने के बाद जो चाय होता था वह आज नहीं है क्योंकि मैं समझता हूं कि जो लड़के डिग्रियां लेकर आते हैं वे बेकारी लेकर आते हैं, समाज के अन्दर निराशा फैलाते हैं । कालिज से निकलते ही उन का मन जिस भावना से प्रेरित होकर आता है वह टूट जाता है, क्योंकि उनको बेकारी का सामना करना पड़ता है । इसका मतलब यह हुआ कि हमारे इन्स्टीच्यूशन बेकारी पैदा करते हैं । ऐसे स्टूडैट्स पैदा करते हैं जो समाज के अन्दर बेकारी फैलाते हैं, उनके अन्दर कोई भावना नहीं है कि वे कुछ सीखें । हो सकता है उन के पास बजट न हो, लेकिन अगर शिक्षा के अन्दर स्कूलों का दर्जा ऊंचा नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो करें कि जो बच्चा शिक्षा प्राप्त करके जातु वह अपने आपको किसी ऐसे धंधे में लगा सके, इस काबिल कर सके कि वह समाज के अन्दर अपने आपको ठीक कर पाए, ऐडजस्ट कर पाए । इस सम्बन्ध में पिछली बार भी चर्चा हुई थी इसलिए हमें शिक्षा प्रणाली की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए, इसके सिवाये और कोई चारा नहीं है, यह वक्त की मांग है । हमारे यहां कई किस्से ऐसे हुए हैं कि मिनिस्टर साहब ने स्कूल को अपग्रेड करने के लिए पत्थर (शिलान्यास) रत्ह दिए कि वे मिडल से हाई स्कूल और प्राइमरी से मिडल बना दिए जाएं लेकिन वे अभी तक हुए नहीं ।

यह सारी बातें हमें सामना करनी पड़ रही हैं । मैं शिक्षा मन्त्री महोदय से निवेदन करुंगा कि खास तौर से ऐसे केसिज जहां पत्थर लग गए हैं उन को अपग्रेड किया जाहू । जैसे गदौली गांव है उसकी इन्क्वायरी कर लें, वहां पत्थर लगा हुआ है, उसको ऊंचा करने का प्रयत्न करें ।

स्पीकर साहब, यहां कोआप्रेटिव सोसायटीज की बात चली । गवर्नर महोदय ने भी अपने अभिभाषण में इस बात का चर्चा किया । कोआप्रेशन एक ऐसा मजमून है जिस के जरिए स्पीकर साहब, हम अपनी समस्याओं को, बेकारी की समस्या को, बेरोजगारी की समस्या को ठीक ढंग से सुलझा सकते थे लेकिन खेद की बात है कोआप्रेशन को जहां तक जाना चाहिए था, जहां तक इसकी हवा जानी चाहिए थी वहां तक पहुंच नहीं पाई है । खास खास आदमी अपने आपको बहुत बड़े कोआप्रेटर समझते हैं, बड़े बड़े जमींदारों तक ही यह सीमित रह गई । खास बात यह है कि पिछले दो तीन सालों से इस कोआप्रेशन की हवा उस तबके तक जाने लगी है जहां यह बहुत पहले जानी चाहिए थी । कोआप्रेशन के अन्दर इस दौरान में काफी परिवर्तन आए हैं । आप जानते होंगे, लोग आपके पास भी आते होंगे और हमारे पास भी आये हैं जो यह कहते थे कि साहब हमारा अंगूठा लगवा लिया था लेकिन पैसा हमने लिया नहीं । अब पैसे की रिकवरी आ रही है, हम कहां से दें जबकि हमने लिया ही नहीं । यह हालत थी । मैं गुप्ता जी को मुबारिकबाद देता हूं कि उन्होंने हरियाणा में

सोसायटी का पटवार सर्कल हैड क्वार्टर बना दिया और अब उस में कोई न कोई सैक्रेटरी भी बैठेगा । मैं समझता हूं, इस तरह से पहले की तरह धाँधली नहीं होगी, न ही नीचे का स्टाफ कर सकेगा और न ही इन्स्पैक्टर लेवल पर होगी । अगर किसी पटवार सर्कल के हैडक्वार्टर को सोसायटी का हैडक्वार्टर नहीं बनाया गया तो उस पटवार सर्कल में जो गांव आते थे उन को दूसरी सोसायटी में बाईफरकेट कर दें और सोसायटी का हैडक्वार्टर बना दें । कम से कम पटवार सर्कल का जो हैड क्वार्टर है उसे सोसायटी का हैडक्वार्टर बनाया जाए वह मेरा सुझाव है । अगर वे कहते हैं कि वायेबल सोसायटी नहीं बनी है तो साथ के गांवों को साथ लेकर बना दिया जाए और मैं दावे के साथ कहता हूं कि सोसायटी जरूर बनेगी । इससे गांव की डिवैल्पमैंट होगी, रूरल इंडस्ट्रियलाइजेशन होगी और देहातों की कई अन्य– समस्याओं का समाधान हो सकेगा ।

बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए गवर्नर महोदय ने अपने अभिभाषण. में सैल्फ एम्पलायमेंट की चर्चा की है । स्पीकर साहब, सैल्फ एम्पलायमेंट की इस वक्त बहुत जरूरत है । देहातों में जो अन–ऐजुकेटिड लेबरर्ज हैं, उनकी इतनी समस्या नहीं है जितनी ऐजुकेटिड लोगों की बेकारी की समस्या है । मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि उन पढ़े लिखे बेकार बच्चों की कोई सोसायटी बनाकर तैयार करें और उन को सस्ते ब्याज पर लोन देकर ऐसी सोसायटियां चलाएं, ऐसे इंडस्ट्रियल यूनिट चलाए

जाएं जिससे वे नौकरी मांगने वाले न बनें बल्कि नौकरी देने वाले बने । अगर इस ढंग से काम चलाया जाए तो मैं समझता हु कि पढ़े लिखे बच्चों की बेरोजगारी का काफी समाधान हो सकता है । (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुईं) उपाध्यक्ष महोदया, शड्यूल्ड कास्ट्स और पिछड़े वर्ग के लोगों के बारे में गवर्नर महोदय ने चर्चा करते हुए इस बात पर बल दिया कि हमारी सरकार पीछे नहीं रही, इन लोगों के लिए बहुत कुछ करती रही है और आगे के लिए भी सुचारू रूप से करेगी । जो आदमी पहले से ठीक है, अपना गुजारा ठीक ढंग से करते हैं उन पर ज्यादा बल देने की आवश्यकता नहीं लेकिन जो पहले से ही दबे हुए हैं उन को उठाने के लिए सरकार ज्यादा से ज्यादा ध्यान दे । मैं इसकी सराहना करता हु कि सरकार ने उन के लिए इस ढंग की स्कीमें बनाई और आगे के लिए भी बनाई जाए, चाहे वे सर्विसिज में हों, चाहे अनएम्पलायड हो उन की तरफ पूरा ध्यान दिया जाए ।

18.00 बजे

उपाध्यक्ष महोदया, हाउसिंग बोर्ड की बात मैं अवश्य करूंगा । हाउसिंग की समस्या बहुत है । हाउसिंग बोर्ड ने मकान बनाकर इस समस्या को काफी हद तक दूर करने की चेष्टा की है, लेकिन दुःख की बात है, आपने अम्बाला के अन्दर देखा होगा, हाउसिंग बोर्ड ने मकान बनाये हुये हैं लेकिन लोगों ने वहां रहने की बजाये दफतर खोल रखे हैं । इस तरह हाउसिज की समस्या हल नहीं होगी । क्या इससे हाउसिज की समस्या खत्म होगी? मैं

निवेदन करूंगा कि इस बात की जांच की जाए । जहां भी हाउसिंग बोर्ड के मकान बने हों वहां यह देखा जाए कि क्या ये मकान सही आदमियों को अलौट हुए हैं या नहीं हुए हैं । अगर इन मकानों को लोगों ने किराये पर दिया है तो इसके मायने यह हैं कि उनको मकान. की जरूरत नहीं है । जिन आदमियों ने इस तरह से अश्वने मकान लोगों को या दफतर को किराये पर दिए हैं उनकी अलौटमैंट कैन्सल कर देनी चाहिए और जिन आदमियों की अर्जियां पैन्डिग पड़ी हैं, जो अपने रहने के लिए मकान लेना चाहते हैं उन्हें इनकी अलौटमैंट कर देनी चाहिए । महकमें वालों से जब हम इसके बारे में बात करते हैं तो वे कहते हैं कि हमारी शर्तें ही ऐसी हैं कि वे चाहे उसे अपने पास रखें, किराये पर दें या कुछ करे । ये बातें डिप्टी स्पीकर साहिबा कुछ जचती नहीं । इस बात की जांच बहुत जरूरी है । पूरे तौर पर जिसको आवश्यकता हो उसे ही मकान दिया जाहू, यह मेरा निवेदन है ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, सड़कों के बारे में भी हरियाणा ने बहुत प्रगति की है इसमें कोई शक नहीं है । हम ।.रे हर गांव को सकू–'कों से जोड़ने की योजना थी लेकिन धन–राशि की कमी होने के कारण बरकार यह सब कुछ नहीं कर सकी । फिर भी जो प्रगति हुई वह सराहनीय है । 1968 में केवल 1500 गांव ऐसे थे जो सड़कों से जुड़े हुए थे लेकिन 1975 तक, इतने थोड़े से अर्से में, साढ़े चार हजार गांव सड़कों से जोड़ दिए गए । इसके बाद 197 5– 76 में बजट की कमी होते हुए भी ज्यादा से

ज्यादा गांवों को सड़कों के साथ जोड़ने की चेष्टा की गई । उम्मीद है कि एक समय आएगा जब धनराशि उपलब्ध होने के पश्चात हमारे प्रान्त का हर गांव सड़क से जुड़ जाएगा और जिन लोगों के मन में यह भावना हे कि पास के गांव में तो सड़क मिल गई है लेकिन उनके गांव में नहीं मिली, उनकी इच्छा पूर्ण होगी ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, ट्रांसपोर्ट की भी जितनी तारीफ की जाए उतनी ही थोड़ी है । 1968 के बाद हमारी बस सेवा में काफी सुधार हुआ है । 1968 में हमारे पास 567 के करीब बसें थीं । सड़के भी कम थी और बसें भी कम थीं लेकिन मांग चूंकि बढ्ती गई इसलिए 1975 के अन्त तक 1722 बसें हरियाणा के पास थीं । बाहर के सूबों में भी हमारी बसों की तारीफ होती है । बंगलौर में जब मैंने वहां के लोगों से पूछा कि आपके यहां टैक्सी सर्विस बहुत है, बस सर्विस नहीं तो उन्हेंने कहा कि हमारी बस सर्विस इतनी अच्छी नहीं है जितनी कि हरियाणा रोडवेज की । बड़ी खुशी की बात है कि हमारी रोड़वेज की चर्चा बाहर के सूबों में भी होती है । मैं समझता हूं कि यदि यह कहा जाए कि हमारी बस सर्विस दूसरे सूबों के मुकाबले में नम्बर एक पर है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । थोड़ी बहुत कमियां तो हर क्षेत्र में रहती ही हैं । जैसे आज भी चर्चा हो रही थी ड्राईवर कंडक्टर्ज के बिहेवियर की । यह बात ठीक है कि इन कर्मचारियों का गलत बिहेवियर सारे किए कराए. पर पानी फेर देता हे लेकिन हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि इन्सान में कमियां होती हैं जो

धीरे–धीरे दूर होंगी । मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि वह इन कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्न करती रहे ताकि इसमें यथा संभव सुधार लाया जा सके ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, पशुपालन और डेरी विकास की बात भी यहां आई । पशु– पालन बहुत जरूरी है । हरियाणा प्रान्त में तो विशेषकर किसान पूरे जोर से अपने पशुओं की सेवा करता है । पिछले दिनों कोआप्रेटिव साईड में एक स्कीम चली कि मिल्क सोसाइटीज बनाई जाएं जिससे छोटे छोटे किसान और मजदूर । भैंसें रखकर दूध पैदा करें और उस दूध को बेच कर अपना गुजारा करें । ऐसी बहुत सी सोसायटियां बनीं, जहां तक मुझे मालूम है । हमारे अम्बाला में तो बहुत बनीं । लोगों को काफी असिसटैन्स भी दी गई । एस. एफ. डी. ए. और मुफाल एजैन्सी ने तो लोन के साथ साथ सबसिडी भी दी और लोगों ने सोसाइटियां बनाकर अपने गुजारे का धन्धा शुरू किया । लेकिन. खेद की बात यह है कि मिल्क प्लांटस को जो दूध आया उसका रेट इतना कम कर दिया गया कि दूध पैदा करने वाला किसान ठीक नहीं समझता कि वह दूध पैंदा करके इतने सस्ते दाम पर मिल्क प्लांटस को दे । डिप्टी स्पीकर साहिबा, कौन नहीं जानता कि आज कच्चे दूध का रेट बाजार में दो सवा दो रुपये किलो है लेकिन किसान के साथ बड़ी ज्यादती होती है । 23 रुपये पर–किलो फैट उनको दूध की कीमत दी जाती है । मैंने हिसाब लगाया कि इस तरह से पर के. जी. उनको एक रुपये अठत्तीस पैसे दूध की कीमत मिलती है ।

यह गरीबों के साथ ज्यादती है । मैं निवेदन करूंगा कि महकमा इस बात की जांच करके उनको सही कीमत उनकी पैदावार की दिलाए ताकि वे और दूध पैदा करें और कृषि क्रान्ति के साथ साथ हरियाणा में दूध की क्रान्ति भी सही मायनों में आपु ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, कहने को तो बहुत बातें हैं लेकिन चूंकि बहुत से साथियों ने अभी बोलना है मैं अन्त में सिर्फ एक बात और कहूंगा । आज जितनी तरक्की हमने की है वह काबिले तारीफ है लेकिन आने वाले समय के लिए भी हम हरियाणा की और उन्नति का विचार अपने मन में ले कर चलें । विशेष कर गरीबों की भलाई के लिए जितना कर सकें उतना करना चाहिए । अमीर आदमियों को हो सकता है ऐमरजैन्सी के अन्दर गिला हो लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब अमीर पर सख्ती होगी तभी गरीब की भलाई होगी । एक शेर धन वालों के लिए कहकर, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं बैठ जाऊंगा ।

रोने वालों की हंसी तो पहले वापिस लाईए,

फिर जशन अपने शानो शौकत से मनाते जाईए ।

इन शब्दों के साथ, डिप्टी स्पीकर साहिबा, गवर्नर महोदय को धन्यवाद का जो प्रस्ताव जोशी साहब ने सदन के सामने रखा और चौधरी अमर सिंह जी ने जिसका अनुमोदन किया, उसका मैं भी पुनः अनुमोदन करके अपना स्थान लेता है । धन्यवाद ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट–अनुसूचित जाति) : जनाबे डिप्टी स्पीकर साहिबा. माननीय गवर्नर साहब ने परसों यह अभिभाषण हाउस में पड़ा था । गवर्नर साहब के साथ साथ मैं भी अपने दिल में इस अभिभाषण को पढ़ता चला गया और एक बार ही नहीं मैंने होस्टल के अपने कमरे में भी जाकर इसे अच्छी तरह से पढ़ा । मेरे दिल में एक बात वैसे ही आने लग गई कि हिन्दुस्तान के तो हम लोग हैं ही अगर इस अभिभाषण को मैं बाहर के मुल्क के किसी बासिन्दे के हाथ में दे दूं और वह इस अभिभाषण को पढ़े तो वह बेशक शाबास और मरव्बा कहेगा हमारी हकूमत को । वह चाहेगा कि ऐसे प्रान्त में. जिसमें नहरों का जाल बिछा हुआ है, सड्कों का भी जाल बिछ गया है. जहां इतने इंस्टीच्यूज थोड़े से समय में बन गए हैं हस्पताल, कालेज, यूनिवर्सिटीज, हयूमन सायंस के दूसरे इंस्टीयूशंज आदि भी बन गए हैं. जहां सड्कों पर सुन्दर सुन्दर लेक्स, होटल्ज और मोटल्ज आदि बन गए हैं, वहीं चल कर उसे रहना चाहिए । उसकी इच्छा होगी कि ऐसे बढ़िया सरेजमीन पर, ऐसे लाजवाब एरिया में रहने से तो लाईफ का मजा आ जाएगा । फिर मेरे दिमाग में. डिप्टी स्पीकर साहिबा. साथ साथ ख्याल आया कि मैं तो इस प्रान्त का ही रहने वाला हूं लेकिन मैं बहुत डरा हुआ हूं और बहुत डर महसूस कर रह रहा हू । फिर जवाब भी स्वयं ही तलाश किया कि शायद मेरा डर इस बात से है कि मैं विरोधी दल का हूं लेकिन एकदम से फिर अन्दाजा लगाया कि मेरे अलावा बहुत से और भाई भी बहुत डरे हुए हैं । चाहे मैं डरा हुआ हूं क्योंकि बिला वजह से

बहुत से लौग गिरफ्तार हुए हैं. फिर भी मैं इस अभिभाषण की ताईद कर सकता हूं । यह अभिभाषण बहुत ही अच्छा है । इसमें बड़े ही सराहनीय काम किये हुए हैं । पिछले कामों के आंकड़े आसमान को छु रहे हैं । मैं आपकी खिदमत में यह दर्ज करना चाहता हूं कि इसी तरह से उन्नति होती रही तो यह प्राप्त पता नहीं कहां से कहां चला जायेगा और जाने वाला है । मैं इस ऐड्रैस की बड़ी सराहना करता हूं । इसमें तमाम सारी बातों का बहुत सुचारू रूप से, अच्छे ढंग से जिक्र किया है और चौधरी बंसी लाल जी की भी बड़ी तारीफ की है । वे बड़े तारीफ के काबिल भी हैं । अब तक मैं समझता हू कि मेरी नजर में जो उनकी सराहना हुई है उसके लिए जो मुकाम पैदा हुआ वह शायद पहले कभी किसी के लिए पैदा ही नहीं हुआ । डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं कोई रंजिश की वजह से नहीं, मेरे उनके साथ बड़े अच्छे सम्बन्ध. रहे हैं. उनकी मेरे पर बड़ी मेहरबानी रही है । मैं इस बारे में यही कहूंगा कि डैमोक्रेसी के अन्दर पोलिटिकल इवैन्टस, वाक्यात की बड़ी स्पोर्ट होती है । जब हमारी मिनिस्टरी थी तो उस टाईम पर 42 आदमी हमारे साथ रहे और अखबारों ने भी लिख दिया कि 42 आदमी हैं लेकिन फिर भी हमारी गवर्नमैंट टूट गई क्योंकि वाक्यात, इवैन्ट्स हमारे साथ नहीं थे । चौधरी बंसी लाल जी क्यों कामयाब हुए, मैं एक बहुत बड़े आदमी की लिखी हुई किताब का हवाला दे कर बताना चाहता हूं । जब मैं यह किताब पढ़ रहा था तो इसमें लिखा हुआ है—

"What is really substantial for a polictal man is that events must have supported him not the high scholarship or intelligence."

तो मैं समझता हूं कि उस टाईम का जो सैन्टर में वातावरण रहा है वह सैन्ट पर सैन्ट चौधरी बंसी लाल जी की स्पोर्ट करता रहा । उससे उनकी कामयाबी है । उनके सामने कोई टिकने वाला नहीं था । अगर चौधरी बंसी लाल जी इतना पुलिस का इस्तेमाल न भी करते तो भी उनकी इतनी ही कामयाबी होनी थी क्योंकि हालात उनको स्र्पोट कर रहे थे । सैन्टर हमेशा उनको स्पोर्ट करती रही । लोगों ने फिर उनके कामों की सराहना की ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, गवर्नर साहब के ऐड्रैस में खासतौर से ऐमरजैन्सी की बड़ी सराहना की है । 26 जून, 1975 का दिन एक खास दिन मुकर्रर किया गया जिसका आपको मालूम ही है । उस दिन बहुत से लोगों को जेल में बन्द किया गया । मैं भी उनमें से एक था । मैंने जेल में जाने के बावजूद भी ऐमरजैन्सी की ताईद की । ऐमरजैन्सी आने से पहले मैं खुद सन् 1972 से यह बात कहता आ रहा हूं कि अगर अपोजीशन आ जाये तो भी यहां पर देश के हालात नहीं सुधर सकते । मैं कितने ही खुले तरीके से कह चुका हू कि इकोनोमी बड़ी लूज हो चुकी थी जिसे देहातों में आपा धापी कहते हैं । हर बात निजी लाभ और जाति लाभ उठाने के लिए एक ट्रेन्ड हो गया था, एक रुचि हो गयी थी. उसने सारे इकोनोमिक ढांचे को बोझिल बना दिया था ।

उसमें बड़े कन्ट्रोल और डिसिप्लन की जरूरत थी । यह ऐमरजैन्सी आनी ही चाहिए थी । चाहे कुछ आदमी वैसे ही गिरफ्तार हुए हैं लेकिन फिर भी उससे फायदा है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अर्ज करूंगा कि इस ऐमरजैन्सी का इस्तेमाल ठीक होना चाहिए क्योंकि फर्ज और सुधार सभी साइड्स में होने चाहिएं । कुछ लोगों को टारगेट बना कर उनके साथ ज्यादती करते रहे हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा सरकार को पता भी नहीं है कि जो लोग बहुत ही बुरे हैं उनको वे नजर ही नहीं आये । मैंने तो खुद अर्ज किया है कि जितने भी करप्ट आदमी हैं उनको सैट किया जाये, गिरफ्तार किया जाये । जिन लोगों ने लीडरशिप लेकर, पोलिटिकल लाईफ का मिसयूज किया है उन सब पर हाथ डालना चाहिए । सी. एम. साहब यहां पर बैठे हुए हैं । मेरी नजर में ऐसे ऐसे लोग हैं जो बड़ा घुटाला करके पैसा खा गये । वे हमें तो गिरफ्तार करा गये और आप बच गये क्योंकि इत्तफाक से वे कांग्रेस में हैं । कांग्रेस में रहने की वजह से वे सी. आई. डी. को रिपोर्ट देते हैं और हमें गिरफ्तार करवा देते हैं । मेरे पास ऐसे इन्सटान्सिज हैं जो एक एक मुकदमें में आठ आठ और दस दस हजार रुपया बिना नमक लगाये खा गये और हम लोगों पर ऐसे ही इल्जाम लगा कर जेल में डलवा दिया । अगर ऐसे बेइंसाफी होती रहे तो ठीक नहीं होगा । उन पर भी कन्ट्रोल होना चाहिए । सभी चीजों पर सुधार होना चाहिए । अगर सुधार करना है तो सभी तरफ होना चाहिए ।

मैं मोदबाना ढंग से अर्ज करता हू कि अब जो लोग जेल में पड़े हैं जैसे चौधरी चान्द राम जी हैं, आज उनके बच्चे भूखे मर रहे हैं । उनकी आमदनी का कोई जरिया नहीं है । इस बात को तमाम हाउस जानता है । तीन वर्ष से चौधरी चान्द राम जी कांग्रेस में आना चाह रहे थे, लेकिन काफी कोशिश करने के बाद भी वे कांग्रेस में नहीं आ सके । फिर वे बी. एल. डी. में चले गये । बेघर से गिरफ्तार हुए । उनका इतना बड़ा कोई लड़का भी नहीं जो किसी बड़े औहदे पर हो । मैं उनके तमाम रिश्तेदारों को भी जानता हूं । उनका कोई भी रिश्तेदार इतना सम्पन्न नहीं है जो उनकी किश्त बान्ध दे और थोड़ी बहुत रकम ही दे दे । स्कूलों में बच्चों के दाखिले तक के पैसे नहीं दिये गये ।

चौधरी अमर सिंह : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, मैडम । चौधरी चान्द राम जी तो बहुत बड़े हरिजन लीडर हैं । उनके पास तो पैसे की कमी नहीं होनी चाहिए । उनको डिमोरेलाइज क्यों कर रहे हो? उन्होंने तो काफी दिनों तक गिरफ्तारियों का सिलसिला जारी रखा था ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : कम से कम बड़े लीडर नहों लेकिन उन्होंने एक आन्दोलन तो चलाया । उनके इशारे पर कम से कम 15–20 हजार आदमी जेलों में गये । मेरे कहने का मकसद यही है कि अब ऐमरजैन्सी का लबोलबाब पूरा होता नजर आता है इसलिए अब उनको रिहा कर देना चाहिए । मुझे तो यह भी पता लगा है कि उनका 15 किलो वजन भी कम हो गया है ।

एक मैम्बर : वे मोटे ज्यादा हो गये थे ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : पहले मोटे हो गये थे लेकिन अब तो वे ठीक हो गये हैं (हंसी) चौधरी दल सिंह जी बड़े ईमानदार आदमी हैं । उन पर कोई किसी किस्म का इलजाम नहीं लगाया जा सकता । (विघ्न) चौधरी दल सिंह जी ने इधर उधर से पैसा इकट्ठा करके एक छोटा सा कारखाना लगाने की कोशिश की । एक डेढ़ लाख रुपया इकट्ठा भी किया लेकिन वे उसको लगाने में कामयाब न हो सके । कुछ हालात ऐसे हो गये थे । फिर उनको गिरफ्तार कर लिया गया । कहने का मतलब यह है कि ऐमरजैन्सी में कई अच्छे लोग काफी परेशान हैं ।

उपाध्यक्षा : आप किसी का नाम न लें ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अर्ज करूंगा कि ऐमरजैन्सी की चाहे जरूरत थी लेकिन अब बहुत से लोगों के लिए बिल्कुल कतई जरूरत नहीं है । मैं सी. एम. साहब से दरखास्त करूंगा और आपसे भी दरखास्त करूंगा कि जो लोग ऐमरजैन्सी के अन्दर जेलों में हैं उनको इस ऐमरजैन्सी का मजा लेने दें क्योंकि आजकल कीमतें कम हैं, ठीक चल रही हैं, सारी चीजें बाजारों में आने लगी हैं इसलिए उनको इसका लाभ उठाने दें । मैं हाउस का ज्यादा टाईम नहीं लेना चाहता हूं । अब जब हम जेल में गये तो यह बीस प्वांयट प्रोग्राम का जिक्र भी आ गया था । डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं पहला आदमी था जिसने इस

20 प्वांयट प्रोगाम की ताईद की थी । मैंने तो कहा था कि हमारी लाईफ बन जायेगी । मैं यह दावे के साथ कहता हूं कि जो यहां कांग्रेसी बैठे हैं. किसी को 20 प्वांयट प्रोग्राम का पता नहीं है । मैंने कोई बीस कांग्रेसियों से पूछा होगा कि भई यह बीस–प्वांयट प्रोग्राम क्या है । उन्होंने कहा कि भाई लिख रखा है. देख लो (व्यवधान)

उपाध्यक्षा : उनमें तो फिर मैं भी हूं । मुझ को तो इसका पता है ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : आप को तो पता होगा और गुप्ता जी को भी पता होगा या फिर मुझे पता है ।

Shri Gulab Singh Jain : On a point of order . My hon. friend cannot attack like this.

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : यह तो उपाध्यक्ष महोदया आप पर भी टिका गये । कहते हैं कि किसी कांग्रेसी को पता नहीं कि 20 प्वांयट प्रोग्राम क्या है ।

श्री गुलाब सिंह जैन : अगर फूल चन्द जी चाहें तो मैं इनको 20 प्वांयट गिनवा दूं ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : ठीक है आप गिनवा दें । मैं हार मान लूंगा अगर ये एक–एक गिनवा दें । (व्यवधान) वरना मैं गिनवाता हूं । मेरा कहने का मतलब यह है कि यह 20 प्वांयट प्रोग्राम हमारी इकोनोमी का एक मूल ढांचा है । हमारी जो

मान्यवर प्रधान मती जी हैं, हम उनके बड़े मश्कूर हैं कि उन्होंने हमें इतनी रोशनी दिखाई है । यह गरीबी हटाओ का नारा नहीं है बल्कि उसका एक बड़ा स्वरूप है क्योंकि उसमें भी यह प्वांयट शामिल था । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आप से यह अर्ज करूं कि हम सब लोग इसको मानते हैं । जेल में कोई भी आदमी ऐसा नहीं है जो इसे न मानता हो चाहे वह अशोक मेहता है, चाहे बीजू पटनायक है, चाहे चौधरी दल सिंह है । सारे बड़े–बड़े लोग तो यह कहते हैं कि हम तो इस 20 प्वांयट प्रोग्राम को मानते हैं । मैं ईमानदारी से कहता हूं कि हमने तो यह 20 प्वांयट प्रोग्राम जरूर मानता है । वे. सब भी यह कहते हैं कि यह बहुत अच्छी चीज है क्योंकि इससे बहुत सी चीजें सुधरी हैं । मेरा कहने का मतलब यह है कि इसमें कोई डाइसैन्शन नहीं है । डिप्टी स्पीकर महोदया, मैं अब आपका ध्यान एक और बात की ओर दिलाऊगा । एक आदमी ने मुझे बड़ा मायूस किया । मायूस यों किया कि कहने लगा कि 20 प्वांयट प्रोग्राम में हरिजनों को प्लाट देंगे । आज के जमाने में रहने के लिये मकान बहुत जरूरी है और अब तो रोटी कपड़ा और मकान की फिल्में भी बन गयी हैं । वह आदमी चेहरे पर एक मुस्कान सी लाकर कहने लगा कि अब हरिजनों को ये प्लाट देंगे । जब 1971 के इलैक्शन हुए तो गरीबी हटाओ का अभियान चरना । यह ठीक है कि पी. राम. साहिबा के मन में यह है कि यहां से गरीबी हटे और सारी चीज लोगों के लिये हो । लेकिन उस वक्त वे यह कहने लगे कि हम हरिजनों को धरती देंगे, किल्ले देंगे । अब भई ये 20 प्वांयट प्रोग्राम में प्लाटों पर आ गये,

सौ–सौ गज के प्लाटों पर । मेरे पर उसकी बात असर डाल गयी । मैंने कहा कि हट भई, फिर गिरफ्तार करवाएगा । अब मैं फिर यह कहता फिरूंगा कि पहले किल्ले देने लगे थे, अब उससे हटकर प्लाटों पर आ गये । मैं प्लाटों की बात पर थोड़ा–सा कहूंगा । सी. एम. साहब जरा इस ओर छगन दें ताकि यह काम सुचारू रुप से हो जाये । वरना लैला तो पड़ेगा ही और कभी न कभी घपलेबाजी भी होगी । सी. एम. साहब तशरीफ लाए हुए हैं, बड़े सज्जन आदमी हैं और बड़े गम्भीर व्यक्ति हैं, मेरा इनसे बड़ा सम्पर्क रहा है । मैं इनको बड़ा भाई मानता हूं और एक छोटे भाई के तौर पर मैं इनको यह चौलेन्ज करता हूं कि आप ऐसे किसी एक भी गांव की रिपोर्ट नहीं ले सकते जिसमें प्लाटों की वजह से लोग राजी हों । अब क्या होता है कि प्लाट देने के लिए आदमी जाता है, आपका पटवारी जाता है । वह कहता है कि भई मैं तो सब के घरों को मापूगा, पैमाइश करूंगा तब 20 प्वांयट प्रोग्राम के तहत प्लाट दूंगा । वह कहता है कि भई जिसके पास सौ गज से ज्यादा धरती होगी उसको कतई नही दूंगा । वह पैमाइश शुरू कर देता है । इस पैमाइश वगैरा करने के बावजूद भी कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं जिनके पास सौ गज भी जमीन नहीं है । हमारे वे भाई जो 60– 60 वर्ष से रह रहे हैं, सौ गज जमीन तो उनके पास हो भी सकती है और बहुतों के पास है लेकिन आखिर कुछ आदमी ऐसे निकल ही आते हैं जिनके पास सौ गज भी नहीं है । वे सारे आदमियों को सौ गज का प्लाट नहीं देते । अगर 100 हरिजन हैं तो 15– 16 आदमी ऐसे होंगे

जिनके पास सौ गज भी नहीं होगी । अब वे उनको प्लाट देंगे । वे प्लाट देंगे. गांव से बाहर जौहड में या गढियों में । एक गांव कहर में 9 प्लाट कटे । कहां कटे जहां लोग मुर्दे जलाते हैं शमशान में । मेरे से वे पूछने लगे । मैंने कहा कि जहां भी मिल जाये, ले लो । वे कहने लगे कि हम तो वहां नहीं जाते । मेरा कहने का मतलब यह है कि अगर हम चाहते हैं कि लोगों पर अच्छा असर पड़े तो हम ऐसा धन्धा जमीन देने का या प्लाट देने का शुरू ही न करें । मैं खुद जमींदार भी हू इसलिये मुझे पता है । आज जमींदार के पास भी जमीन नहीं है । उसकी स्थिति आहिस्ता–आहिस्ता इतनी खराब होने लग रही है कि उसके पास जमीन नहीं रह रही है । उसके पास रहने के लिये मकान नहीं है । इससे कन्ट्रोवर्सी का या रंजिश का एक ऐसा वातावरण पैदा हो गया है कि मैंने लोगों को कहते सुना है कि मेरे पास एक किल्ले जमीन भी नहीं है लेकिन यह भी खुसकर के घसीटा चमार को मिलेंगीं । इस वजह से उनके ताल्लुकात बेकार में बोझिल होने लग रहे हैं । मैं जमीन की बाबत भी कह दूं । खुद सी. एम. साहब ने ऐक्स सर्विसमैन की रैली में कहा था कि कोई सीलिंग के अन्दर सरप्लस जमीन पर पलक न मारे, हमारे पास सरप्लस जमीन का एक भी खूड नहीं । मेरा कहने का मतलब यह है कि फिर यह कंट्रोवर्सी बन्द कर दो और फिर आहिस्ता– आहिस्ता हरिजन और बैकवर्ड भाइयों को और कामों की तरफ लगा दो । इससे आहिस्ता– आहिस्ता रंजिश कम होगी । मैं, डिप्टी स्पीकर महोदया । एक बार फिर सरकार से निवेदन करूंगा कि वह चाहे तो इस

बात की छानबीन करा दे, मैंने एक गांव का ही नाम लिया है, अगर एक गांव की भी रिपोर्ट आ जायेगी कि लोग राजी हैं, उनकी तसल्ली हो गयी है तो मैं कहूंगा कि यह ठीक है ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, जो कर्जों की बाबत एलान किया, बड़ा अच्छा किया । लेकिन मैं एक बात इसके साथ ही यह अर्ज करूंगा कि आप गवर्नमैंट से यह कहें कि आप किसी यूक भी गांव की खुफिया रिपोर्ट मंगा लें कि जो कर्जे आपने साहूकारों के माफ किये हैं, उससे हमारे रिलेशन्ज कितने अच्छे बने हैं या कितने खराब बने हैं । अब मुझे पता नहीं लोग क्यों मुखालिफ ही मिलते हैं । पता नहीं मेरा मूड ही देखकर बात करते हैं कि ऐसी बात करो कि जिसमें मैं खुश होऊं । मेरा कहने का मतलब यह है कि जो हरिजन और जमींदार के रिलेशन्ज बन रहे थे, उन पर इसका अच्छा असर नहीं पड़ा है । मैंने अगर कर्जा नहीं भी लिया और मैं हरिजन हूं और एक जमींदार खड़ा है तो वह बिना कर्जा दिये ही यह महसूस करेगा कि अगर मैंने इसको कर्जा दिया तो मैं मरा । मैं, इसके अलावा यी भी कहना चाहता हूं कि हमने जो कमेटी की रिपोर्ट दी है, उसमें भी हमने यह कहा है कि जो 40 करोड़ रुपया हरिजनों को दे रखा है, उसका जितना अच्छा रिजल्ट आना चाहिए था, वह आया नहीं है क्योकि हरिजन की हैरीडीटरी कमजोरियां हैं, वह रिकल्ड नहीं है, वह मार्किट में अपना माल बेच नहीं सकता, फिनीशिग उसकी ठीक नहीं है क्योंकि मोटी जूतियां बनाने का उसका पुराना धन्धा है, मार्किटिंग नहीं है । इसके

अलावा उसकी पहले से ही लायबिलिटीज इतनी हैं कि दों–चार हजार तो ऐसे ही उड़ जाता है । क्योंकि कभी छोहरी बैठी है तो कभी किसी का पहले से ही देना है । मेरा कहने का मतलब यह है कि वह आदमी बिल्कुल दबा पड़ा है । हमने कमेटी में हरिजन इन्डैटिडनैस को डिस्कस किया था । उसमें कोआप्रेटिव सोसाइटियों का और निगम का, सब का आ जाता है । हमने सारी चीज को प्रोब किया है । एक बार जब यह महकमा मेरे पास था तो मैंने डायरैक्टर, सोशल वैल्फेयर को बुलाकर कहा था कि आपने इतना पैसा हरिजनों को दिया है आप कोई एक भी फाईल लाओ, हम चलेंगे और देखेंगे कि अगर एक भी हरिजन को आपने सैटल किया हो । वह बोला फिलहाल तो हम नहीं देख सकते । मेरा कहने का मतलब यह हैकि अगर आप मूल को माफ नहीं कर सकते तो न सही लेकिन सूद में तो छुट दे सकते हो । मैंने गुप्ता जी से कहा था जब अमर सिंह जी ने इनको रोहतक बुलाया था कि इनका सूद ही माफ करो । गवर्नमैंट केसिज में ऐसा होता है कि प्रिंसीपल तो है 500 रुपया और सूद हो रहा है 15– 15 सौ रुपया । फिर गवर्नमैंट जब अपना बजट पेश करती है तो रिसीट्स के कोने में सूद की रकम बीस–बीस करोड़ हरिजनों की तरफ दिखाई जाती है जो वसूल नहीं हो सकती और जिसकी वजह से लोग जेलों में जाते हैं । हम इस बात को महसूस करते हैं कि आज एक गरीब को, एक बैकवर्ड को किसी न किसी तरह से राहत मिले । उनकी तरफ भी हमको ध्यान देना चाहिए । प्राईसिज के बारे में भी जिक्र किया गया है । डालडा घी जो पहले तरह–

चौदह रुपए किलो होता था वह अब साढ़े सात रुपए किलो बिक रहा है । मैं जब 12 तारीख को आया तो 135 रुपए क्विटल गेहूं का भाव चल रहा था और गुप्ता जी कह रहे हैं कि और भी डाउन चल रहा है और आटे का भाव डैढ रुपए किलो चल रहा है । बाकी चीजों के भाव ज्यों के त्यों हैं । यही भावना हमें कायम रखनी है कि चीजों के दाम ज्यादा न हों । मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि ऐमरजैन्सी में कहीं रोजगार खत्म न हो जाएं । जो ऐमरजैन्सी आई है उसमें हम अपना सुधार तो कर लेंगे अपने आपको गवर्नमैंट की कोर्ट में फिट कर लेंगे लेकिन रोजगार के बारे में बहुत से लोगों ने कहा है कि रोजगार तो है ही नहीं । सरकार ने जो काम शुरू किए हुए हैं जैसे सड़कों वगैरह का, वह भी बन्द हैं । दुकानदार भी कहते हैं कि कोई काम नहीं है । सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिए कि लोग डरते–डरते सारे काम ही बन्द न कर दें और अगर रोजगार बन्द हो गए तो इसका क्या नतीजा निकलेगा इसकी तरफ मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, लैड लैस को जमीन देने का जिक्र आया । यहां लैड सीलिंग ऐक्ट पास हुआ, वह भी एक खासा मजाक था । जब यह ऐक्ट यहां पास हुआ और लोग यहां उस पर बोलकर गए तो बाहर जाकर कहने लगे कि इससे जमीन कहां फालतू आएगी । मैं तो यही कहना चाहता हूं कि जमींदारों के पास जमीन है ही कहां जो सरकार उन बेचारे हरिजनों को देगी ।

मैं यह कहना चाहता हूं कि 50–60 हजार एकड़ जमीन कस्टोडियन की पड़ी हुई है जो कि गांव में शामलात देह को मिली हुई है क्योंकि माईग्रेशन के वक्त जो बिस्वेदार मुसलमान भाई हिन्दुस्तान से चले गए उनकी जमीन अब हमारी पंचायत में शामलात देह में आई हुई है जोकि कानूनन कस्टोडियन की जमीन है और जिसको हम अलहिदा करवा सकते हैं । हमने बहुत बार इस बात की कोशिश की कि वह सारी जमीन का इन्तकाल कस्टोडियन के नाम करवाकर और हरिजनों में वह बांट दी जाए लेकिन कोई कामयाबी नहीं हुई । अगर हम उस जमीन को निकलवाकर इन्तकाल कस्टोडियन के नाम करवा दें और हरिजनों को बांट दें तो काफी समस्या हल हो सकती है और बहुत से लोग जमीन पर आबाद हो सकते हैं । एक कमेटी फूल चन्द कमेटी थी उसमें इस बारे में सारे का सारा जिक्र किया हुआ है । पीपली गांव में एक मुकदमा चल रहा है । उस गांव की आबादी देह की जमीन पर पचास–पचास, सौ–सौ साल से बे–बिस्वेदारों के मकान बने हुए हैं वह जमीन बिस्वेदारों के हिस्से में आ गई । उन मकानों को अब गिराना चाहते हैं । इससे पूरा मसला खड़ा हुआ है । मुकदमेबाजी हो रही है । चौधरी माडू सिंह कमीशन मुकर्रर हुए थे लेकिन कोई बात नहीं बनी । सरकार को इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए । (घंटी)

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं दो मिनट और लूंगा । मैं एक बात की तरफ और ध्यान दिलाना चाहता हूं । पहले इस्तेमाल

में यह प्रोविजन था कि पांच–पांच बिसवे का प्लाट काटकर हरिजनों को रिहैबलीटेशन के लिए दिए जाएं । बहुत से गांवों में प्लाट काटे गए । हमारी ऐडवाइजरी कमेटी की मीटिंग होती रहती है । मैंने डिप्टी कमिश्नर को यह दरखास्त की कि वह देखें कि उन प्लाटों के कब्जे भी टूटे हैं या नहीं । सरकार की तरफ से जिन लोगों को प्लाट मिल चुके हैं वहां यह देखा जाए कि जिन्होंने कब्जा उस जमीन पर किया हुआ है वह खाली भी हुई है या नहीं । अगर हम इस मामले को ऐडमिनिस्ट्रेटिव स्तर पर कन्ट्रोल कर लें तो इससे मकसद हल हो सकता है ।

एक यह अर्ज करना चाहता हू कि हाउसिंग बोर्ड मकान बनाने में लग रहा है । मैं सोनीपत का जिक्र करना चाहता हूं । मेरे एक दोस्त ने मकान लिया । मैंने पूछा कि भई कैसा मकान है तो कहने लगा कि अगर एक कील ठोकी जाती है तो कील दूसरी तरफ निकल जाती है । फर्श उखड़ने लगा है । यहां सरकार कहती है कि हर चीज की कीमत कम हो रही है लेकिन मकानों की कीमत कम नहीं हो रही है बल्कि जिन लोगों को बिल जाने लग रहे हैं, नोटिस जाने लग रहे हैं उनको दस–दस पांच–पांच हजार ज्यादा के बिल जा रहे हैं । मेरा कहना यह है कि इस ऐमरजैन्सी में मैटीरियल की क्वालिटी में भी सुधार किया जाए तो अच्छा हो । डेरी फार्मिग का महकमा है वह भी बड़ा अच्छा है । बहुत से लोगों ने भैसें बांध रखी है । एक भाई की भैस को मैंने देखा और मैंने कहा कि बड़ी अच्छी नस्ल की भैस बांध रखी है ।

उसने कहा कि यह भैंस डेरी की ही बांध रखी है और सरकार से दो हजार कर्जा लिया, 100 रुपये तो मेरे वहीं इधर उधर कट गये, क्या बताऊं । चार महीने से मैं दूध देने लग रहा हूं, कोई लगभग 300 रुपये का दूध दिया है । हमारे से गवर्नमैंट 90 पैसे में लेती है और जो ढोल वाले होते हैं, उनका दूध 1.55 पैसे बिकता है । हम से जब दूध लेते हैं, तो कभी बीच में लैक्टोमीटर डाल देते हैं, कभी कुछ करते हैं, इन सब बातों, के कारण हमें परेशानी होती है । तो मेरा कहने का मतलब यह है कि दूध वगैरह के रेट्स कुछ बढ़ा दिये जाएं तो ठीक रहेगा, गरीब आदमी अपना आसानी से कर्जा भी चुका सकेगा और अपने परिवार का भार भी सहन कर सकेगा ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे हरियाणा प्रान्त ने बहुत तरक्की की है, हमारा सिर फखर से ऊंचा होता है

उपाध्यक्षः. आप वाइंड आप करें ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : हां जी, मैं अभी वाइंड–अप करता हूं । तो मैं जिकर करना चाहता हूं कि एक 8 नम्बर ड्रेन है, वहां कवाली से नरेला तक पक्की सड़क तो बनी हुई है, इस बात को लगभग 20 साल बीत चुके हैं लेकिन वहां का पुल अभी रह रहा है, पुल के ऊपर सड़क नहीं है । 20– 25 गांवों के आदमी 10 मील का चक्कर काटकर ऊपर से आते हैं, जिसके कारण उन्हें बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है और अगर लोग वहां से

किसी तरीके से गुजरते हैं तो पुलिस वाले पकड़ते हैं और मुकदमें बनाते हैं और दूसरी तरफ अगर किसान गेहूं नहीं लाता तो सरकार उनको कहती है, पकडती है कि आपने गेहूं घर में छिपा रखा है । अतः लोगों की इस परेशानी को दूर किया जाए । मेरी सरकार से प्रार्थना है कि उस सड़क को बनाया जाए ताकि लोग आसानी से कम चक्कर काटे आ जा सकें ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इससे आगे मैं आपके द्वारा सरकार से एक और अर्ज करना चाहता हूं कि एक सिलाना गांव है, 1974 में जब चौधरी बंसी लाल जी वहां गये थे तो हम सब लोगों ने उनकी खिदमत में अर्ज किया था कि ओल्ड माइनर को पक्का किया जाए । वहां पर 15–16 हजार एकड़ जमीन सैराब न होने के कारण बेकार पड़ी हुई है । यह काम आप हमारा कर दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी । वहां पर चौधरी बंसी लाल जी ने हां कर ली थी और चीफ इंजीनियर साहब ने भी सारा मामला ऐप्रूव करके भेज दिया था, पता नहीं कागज इधर उधर हो गये होंगे । गुप्ता जी जब इरीगेशन एण्ड पावर मिनिस्टर थे, उनको भी शायद यह सारा मामला पता होगा । अब भगवान् ने उन्हें और ऊंची पदवी दे दी है । अब अगर वे हमारा काम कर दें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी, लोग सुखी होंगे । अन्त में मैं लिफ्ट इरीगेशन के बारे में कहूंगा । कोई 20– 25 के करीब ऐस्टीमेट्स हैं, पानी ऊपर उठा नहीं है, सरकार मेहरबानी करके इस तरफ भी ध्यान देने की कृपा करें ।

श्री बनारसी दास गुप्त : बजट भी आएगा ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : ठीक है जी, इसके लिये मैं आपका मश्कूर हूं और जो लिखा हुआ पड़ा है, वह मैं अब नहीं कहना चाहता । इन अलफाज के साथ मैं इस अभिभाषण की ताईद करता हूं और डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया ।

लाला रुलिया राम (घरौंडा) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं भी गवर्नर महोदय के ऐडैरस पर बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं । कुछ बातें मैं अपनी सरकार के नोटिस में लाना चाहता हूं । इस में कोई शक वाली बात नहीं है कि गवर्नर साहब का ऐड्रैस बहुत ही कामयाब ऐड्रैस है और जो हमारे हरियाणा में हुआ है, हमारे सामने है, और जो कुछ पहले हुआ है वह भी हमारे सामने है । हरियाणा प्रान्त हमारे सामने बना है । जिस वक्त हरियाण. बना हमें पता है कि कोई चीज हमारे पास नहीं थी, टूटी फूटी मेज कुर्सियां हमारे पास पड़ी हुई, थीं, न कुछ लेना था, न कुछ देना था । जब हम पंजाब में इकट्ठे थे, हमें पता है कि हमारे साथ क्या व्यवहार किया जाता था । हम चीजें मांगते थे लेकिन हमें कुछ नहीं मिलता था । हमने तो शुक्र किया, वहां से हमारी जाने छुटी । हमारे समझदार लीडरों ने हमारे हरियाणा की बागडोर अपने हाथों में संभाली । हमने वह वक्त भी देखा जब हमारे पास कुछ नहीं था और आज भगवान् की कृपा से हमारा हरियाणा सब से ऊंचा है । मैं फखर के साथ कहता हूं कि हरियाणा स्टेट का जिक्र दूसरी

स्टेटों के अन्दर भी चलता है । हमारी प्राईम मिनिस्टर ने भी फरमाया है और कई जगह जब वह विदेशों में जाती हैं तो प्रायरू वह वहां पर कहती हैं कि आप ने अगर कोई अच्छा काम करना है, तरक्की का काम करना है तो हरियाणा में जाओ और सीख कर आओ । इसमें कोई शक नहीं कि चौधरी बंसी लाल जी सदा यह सोचते रहते थे कि हरियाणा का विकास कैसे हो सकता है, हरियाणा का सिर कैसे ऊंचा उठाया जा सकता है और उन्होंने यह सब कुछ कर भी दिखाया और आज की मौजूदा सरकार भी इसी तरह कामों में तत्पर हे । चौधरी बंसी लाल जी तो कलीयर कहा करते थे कि मैं एक छोटे जमींदार परिवार का लड़का हूं, मैं झोपड़ी में रहा हूं, मैंने हल चलाए हैं, इसलिए मैं लोगों को किसी किस्म की तकलीफ नहीं आने दूंगा और यह सब कुछ उन्होंने कर भी दिखाया । यही वजह थी कि हमारे हरियाणा के नेता सैन्टर में जाकर इतनी ऊंची पदवी पर बैठे हैं, पहले तो केवल हरियाणा का भार उन पर था, अब सारे भारत का भार उनके कन्धों पर विराजमान है । अब गुप्ता जी ने भी यह कहा है कि चौधरी बंसी लाल जी ने जो काम संभाले हुए थे, उनको अब पूरा किया जाएगा । तो मैं एक दो बातें उनके सामने रखना चाहता हूं । सब से पहले मैं ऐग्रीकल्चर के बारे में कहना चाहता हूं । इस में किसी किस्म का कोई शक नहीं है कि यहां हमारे हरियाणा प्रान्त में कृषि में काफी तरक्की हुई है और इसे कृषि सम्पन्न प्रदेश कहा जाता है । चेयरमैन साहब, हमारा कुरुक्षेत्र और करनाल जिला खेती के लिये प्रसिद्ध है, वहां पर आलू की खेती भी बहुत होती है, इसलिये

मैं अपने सी. एम. साहब से यह प्रार्थना करूंगा कि वहां पर थोड़ी सी और बिजली देने का प्रबन्ध करें ताकि जमींदार लोग मन लगाकर खेती बाड़ी का काम करके, अपने प्रदेश का सिर ऊंचा कर सकें । क्योंकि हमारे इन जिलों में फरीदाबाद की तरह इन्डस्ट्रीज भी नहीं । अतः थोड़ी सी भी सरकार की मदद मिल जाए तो इससे हमारे जमींदारों को बहुत फायदा हो सकता है । ट्रैक्टरों पर भी पैसे की कुछ छूट होनी चाहिये । लेकिन दिन–ब–दिन ट्रैक्टरों की कीमतें बढ़्ती जा रही हैं, जोकि किसानों के हित में नहीं है । जैसे कि मेरे एक दोस्त ने कहा कि ट्रैक्टरों की कीमतें कम्पनियों वाले बढ़ा देते हैं । मैं तो यह नहीं कहता हूं लेकिन इसमें कोई शक की बात नहीं कि ट्रैक्टरों की कीमतें बढ़्ती जा रही हैं, सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिये ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस से आगे चल कर मैं सरकार से एक और अर्ज करना चाहता हूं कि वर्ल्ड बैंक से जो लोन दिया जाता है उस पर तो 9 परसेन्ट इन्ट्रैस्ट चार्ज किया जाता है लेकिन जब किसानों को कर्जा दिया जाता है तो उसकी वसूली 14 परसैन्ट के हिसाब से की जाती है, जिससे किसानों को बड़ी परेशानी होती है । सरकार को इस तरफ भी ध्यान देना चाहिये और इन्ट्रैस्ट की रकम को कम करना चाहिये ।

इससे आगे चलकर मैं एक और बात कहूं कि बिजली की कमी को दूर करने के लिये जो रा–मैटिरयल का कोटा है, जिससे कंडक्टर वगैरह बनते हैं, यह किसी और को न देकर,

बिजली बोर्ड को दिया जाए ताकि बिजली की कमी को दूर किया जाए । हरियाणा का जमीं– दार, किसान बड़ी मेहनत करता है । अगर जमींदार की लागत को देखा जाए तो मैं तो यह कहूंगा कि जमींदार को हर काम में ज्यादा से ज्यादा पहल दी जानी चाहिये । मैं एक बात अर्ज करना चाहता हूं कि खाद की कीमत को आप देख लें पिछले साल जहां उसका रेट 50 रुपये था आज वही रेट 100 रुपये तक पहुंच गया है । इसलिये मैं सी. एम. साहब से अर्ज करूंगा कि इस संबंध में वे सैंटर सरकार से बातचीत करें । ठीक है यह उनके बस की बात नहीं है क्योंकि यह सैंटर का मामला है लेकिन फिर भी वे सैंटर से इस मामले पर बात जरूर करें । अगली बात यह है कि हमारे यहां हरियाणा में तीन शुगर फैक्ट्रीज हैं जिसमें दो तो कोआप्रेटिव सैक्टर में हैं और एक प्राइवेट सैक्टर में है । आज कल किसान को साढ़े दस रुपये गन्ने का भाव मिल रहा है । यानी 11 रूपये तो मिल का रेट है और साढ़े दस रुपये वहां का रेट है जो बाहर देहातों में मिलता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपके जरिये मैं सरकार के नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं कि 12 रुपये क्विंटल तो आज कल लकड़ी का भाव है लेकिन गन्ना जिससे हमें खांड मिलती है और खांड का रेट बिल्कुल नहीं गिरा है फिर भी गन्ने का रेट कम क्यों है । मेरे ख्याल में इसकी यही वजह है कि यह जो एक प्राइवेट फैक्टरी है इसी की वजह से हमारे जमींदारों के साथ बे–इनसाफी होती है । हमारे साथ का जो प्रदेश है पंजाब, वह जमींदारों को गन्ने का भाव 1425 रुपये दे रहा है और हम 11 रुपये दे रहे हैं । तो मैं

यह अर्ज करना चाहता हूं कि अगर गन्ने का भाव हमारे यहां न बढ़ाया गया तो जमींदार गन्ना बोना बन्द कर देंगे जिसकी वजह से हमारे प्रदेश में खांड की पैदावार में कमी आएगी । इसके बाद मैं कोआप्रेटिव महकमे के बारे में अर्ज करना चाहता हूं । दो तीन साल पहले इस महकमे में बहुत ज्यादा गड़बड़ थी । इसमें कोई शक नहीं है कि पहले से इसमें काफी सुधार हुआ है और खास कर तब से जब से यह महकमा मुख्य मन्त्री जी के पास आया । इन्होने इसमें बहुत सुधार किया है और दूसरे जो पैडिंग मामले थे उनको भी निपटाया जा रहा है लेकिन मैं एक अर्ज करना चाहता हूं कि यह जो पंचायत सैक्रेटरी हैं इनसे निजात' कराई जाए । ये किसी सोसाइटी को चन्दा नहीं देते हैं बल्कि उसे लूट कर खा जाते हैं । गांव के लोग बेचारे अनपढ़ होते हैं जहां ये चाहते हैं वहां उनके अंगूठे टिकवा लेते हैं । गांव वालों की वोटे भी यही बनाते हैं किसी को पता तक नहीं चलता कि ये क्या कर रहे हैं । इसलिये सरकार से मेरी अर्ज है कि इस महकमे की तरफ और ध्यान दिया जाए । इससे आगे चलकर मैं बी.एंड.आर. के महकमे की तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हू । इसमें कोई शक नहीं है कि इस महकमे ने बहुत अच्छे काम किये हैं (घंटी) डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं तो थोड़ा ही टाईम लूंगा ।

उपाध्यक्षा : और भी मैंबर बोलना चाहते हैं । आप बजट पर बोल लेना ।

लाला रुलिया राम : तो मैं बी. एंड आर. महकमे के बारे में बता रहा था कि उसके अन्दर बहुत ज्यादा स्टाफ है । मैं सरकार से अपील करूंगा कि वह कुछ इधर भी ध्यान दे । क्योंकि हमारी गवर्नमेंट को रुपये की बहुत ज्यादा जरूरत है इसलिये हमें यह भी देखना चाहिये कि जितना खर्चा इस महकमे पर होता है उससे हमें मुनाफा होता है या लौस होता है । मैंने देखा है कि इस महकमे में इतने मुलाजिम हैं कि क्लर्क से ऊपर एक्सीयन तक सब खाली बैठे रहते हैं जिसकी वजह से गवर्नमैंट का बहुत ज्यादा नुक्सान हो रहा है । सरकार को तनखाह सबको देनी पड़ती है लेकिन उसके बदले में काम बिल्कुल नहीं होता है इसलिये मैं लीडर आफ दि हाउस से कहूंगा कि वे इस ओर ध्यान दें । इसके बाद सबसे बड़ी जो चीज थी उसका इस ऐड्रैस में जिक्र नहीं आया है । वह यह है कि हमारे हरियाणा में फ्लड से बड़ा भारी नुकसान हुआ है, कई गांव के गांव बर्बाद हो गए । इसका एक कारण तो यह है कि जमना के साथ साथ यू. पी. का बार्डर हमारे साथ लगता है । यू. पी. वालों ने तो अपनी तरफ बांध बना रखे हैं और जब बाढ आती है तो सारे का सारा पानी हरियाणा की तरफ आ जाता है और गांव के गांव उसमें बह जाते हैं । इस बाढ़ से जिला अम्बाला का भी नुकसान हुआ, जिला करनाल और सोनीपत तथा तहसील पानीपत का भी बहुत नुकसान हुआ । कल इस संबंध में चीफ इंजीनियर्ज की मीटिंग बुलाई गई थी तो उन्हेंने इस पानी को रोकने के लिये तीन करोड़ रुपये का ऐस्टीमेट बनाया कि तीन करोड़ रुपये लगा कर यह पानी रोका जा सकता है । हमें

यह भी पता चला कि जब भी इस पानी को रोकने की स्कीम बनती थी तो पैसे, बरसात शुरू होने से दो–तीन महीने पहले ही मन्जूर होते थे जिसकी वजह से सारा मैटिरियल पानी में बह जाता था । तो मैं चीफ मिनिस्टर साहब के नोटिस में यह चीज लाना चाहता हूं कि हरियाणा के अन्दर इस काम को करने के लिये अगर और काम भी बन्द करने पड़े तो कर दें और इसको सबसे पहले करदें वरना हरियाणा का बहुत नुकसान होगा और हरियाणा के बहुत से गांव यू. पी. में चले जाएंगे । तो मैं अपने लीडर आफ दि हाउस से, जिन्होंने कि इस काम के लिये वायदा किया हुआ है यह अर्ज करूँगा कि इस काम को सभी कामों से पहले करवाया जाए ताकि हरियाणा के लोग भारी नुकसान से बच सकें । एक बात मैं डिप्टी स्पीकर साहिबा और कहना चाहता हूं और इस बात में मैं अपनी इस सरकार को दिली मुबारिकबाद देता हूं और बधाई देता हूं । मैं दावे के साथ कहता हूं कि इस बीस नुकाती प्रोग्राम को अमली जामा पहनाने के लिये हिन्दुस्तान में सब से पहले इस हरियाणा सरकार ने असली मायनों में कदम उठाया है जिसके लिये मैं इसे बधाई देता हूं । अभी 6 तारीख को पानीपत के अन्दर हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने वीवर्ज कालोनी की बुनियाद रखी और अब वह बननी भी शुरू हो गई है । तो मैं अर्ज करता हूं कि इस बीस नुकाती प्रोग्राम पर हरियाणा में असली मायनों में अमली तौर पर काम होना शुरू हो गया और इस के लिये मैं अपनी इस सरकार को बधाई देता हूं । इन शब्दों के साथ मैं गवर्नर साहब का इस ऐड्रैस देने के लिये शुक्रिया अदा करता हूं ।

चौधरी मनफूल सिंह (झज्जर): डिप्टी स्पीकर साहिबा, सदन में गवर्नर साहब के ऐड्रैस पर पिछले दो दिन से चर्चा चल रही है और बहुत सारे मैंबर साहिबान सारे प्वांयट्स पर बोल चुके हैं । मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा और सिवाये एक दो प्यायट्स के उन सभी प्वांयट्स को दोहराऊंगा नहीं । इस ऐड्रैस का सब से पहला सफा चौधरी बंसी लाल जी के बारे में भरा हुआ है । यह बात ठीक है और इस में कोई शकोशुबह की बात नहीं कि जितने थोड़े अर्सा में और जितनी तेज रफतार से हरियाणा में तरक्की के और विकास के काम हुये हैं उतने किसी प्रांत में सारे हिन्दुस्तान में उतनी तेज रफतार और थोड़े समय में नहीं हुये हैं । यहां हरियाणा में तो एक टाईम बाउंड प्रोग्राम के तहत सारे विकास के काम हुये हैं और ऐसी मिसाल कहीं नहीं मिलती है । आप सारे फैक्ट्स ऐंड फिगर्क को देख लें आपको पता लग जायेगा कि इतने थोड़े समय और इतनी तेज रफतार से कहीं भी इतने ज्यादा विकास के काम नहीं हुये हैं यह लामिसाल बात है । हम तीन चार एम. एल. एज. एक कमेटी के साथ हा 7 स्टेट्स में पिछले दिनों गये थे । जहां पर भी हम जाते थे वहां उनका लैड रिकार्ड बगैरा देखना चाहते थे कि उनका कैसे है।, । कोई बात ?ऋ? करने से पहले एम. एल. एक. भी और अफसरान भी, यही बात कह देते थे कि भई हरियाणा का क्या मुकाबला, हरियाणा का हर फील्ड में कोई मुकाबला नहीं । तो यह सारा क्रैडिट इस सारी बात का चौधरी बंसी लाल जी को जाता है । अब तो हमें और भी फख्र है कि आज वह देश के डिफैसं मिनिस्टर हैं । हम हरियाणा में यूं

कहा करते थे कि हमारे बच्चे फौज में पैर पीटा करते हैं, अफसर ही कोई नहीं था लेकिन आज डिफैंस मिनिस्टर हमारे हरियाणा का है । इस बात पर हमें गर्व है और फख्र है कि वह इतने थोड़े अर्से में इतने ज्यादा काम करके इतनी ऊंची पदवी पर चले गये हैं । यह हमारे लिये निहायत ही खुशी की बात है । इसके साथ साथ मैं अर्ज करता हू कि अब प्रांत की बाग डोर ऐसे आदमी के हाथ में आई है जो कौल और फेल दोनों से समाजवादी हैं और उनकी सरप्रस्ती में इस बीस नुकाती प्रोग्राम की इम्पलीमैंटेशन उसी तेज रफतार से होगी जैसे कि हमारे प्रांत में पहले से तेज रफतार से विकास के काम चले हैं । मैं समझता हूं कि हम चौधरी बंसी लाल जी की सही मायनों में तारीफ इसी तरीके से कर सकते हैं कि जितने काम उनके चलाये अधूरे रह गये हैं चाहे वे बिजली के हैं चाहे सड़कों, नहरों और दस्तकारी के हैं उनको उनकी ही तेज रफतारी से पूरे कर दें । मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे नेता गुप्ता जी उनको पूरा करने में कोई दकीका बाकी नहीं छोड़ेंगे ।

अब मैं दूसरी बात पर आता हूं । चौधरी फूल चंद जी ने ऐमरजैसी का जिकर किया है । इस बारे में सब से पहली बात तो यह है कि यह ऐमरजैसी लागू कैसे हुई । मैं इस बारे में गांव– गांव के केस बता कर लम्बी चौड़ी उनकी तरह मिसालें नहीं देना चाहता लेकिन यह बताना चाहता हूं कि यह ऐमरजैसी आई कैसे है । यह ऐमरजैसी कांग्रेस ने तो लागू की लेकिन विरोधी दलों ने देश में ऐसे हालात पैदा कर दिये कि यह जबरदस्ती लागू

करनी पड़ी मजबूर होकर । लोग तो कहते हैं कि यह तो दो साल पहले लागू होनी चाहिये थी यह तो बहुत लेट लागू की गई । इन दलों ने सब से पहले गुजरात में अपना तोड़ फोड का सिलसिला शुरू किया । एम० एल० एज० से जबरदस्ती इस्तीफे लिये गये, घरों को आग लगाई गई, विद्यार्थियों को भड्का कर उन से तशद्द के काम कराये गये, बाजारों में जबरदस्ती हड़तालें करवाई गई और दूसरी बहुत सारी गैर–कानूनी बातें की गई । लेकिन फिर भी इन्दिरा' जी ने इसे टालरेट किया और ऐमरजैसी नहीं लगाई । इस बात से इन लोगों के हौसले और भी बढ़ गये । फिर इन्होंने बिहार में यह काम शुरू किया । बिहार में इन विरोधी दलों ने जो कुछ करना शुरू किया उसकी मिसाल सारे हिन्दुस्तान के इतिहास में कहीं नहीं मिलती । एम० एल० एक० से जबरदस्ती इस्तीफे लिये गये, घर जलाये गये, मोटरों, कारों, बसों को जलाया गया, जबरदस्ती लोगों से हड़तालें करवाई गई । एलान करते हैं कि कल को हड़ताल होगी लेकिन जब बाजार बंद नहीं होते और लोग हड़ताल नहीं करते, दस नेता पांच चार हजार विद्याथियों को साथ लेकर बाजारों में चले जाते थे और जबरदस्ती बाजारों को बंद कराया जाता था, सारा कारोबार बंद कराया जाता था और सड्कों पर किसी को चलने नहीं देते थे । उधर प्रैस वाले भी बड़ी मेहरबानी करते थे कि अखबारों में आ जाता था कि मुकम्मल हड़ताल हुई और यह खबर कोई नहीं देता था कि हड़ताल हुई नहीं जबरदस्ती कराई गई है । यहीं बस नहीं, फिर इन्होंने बिहार की तरह का प्रोग्राम दूसरे प्रांतों में चलाने का नारा भी लगा दिया

कि चुने हुये लोगों से जबरदस्ती इस्तीफे लेगे, उनके घरों में धरने देंगे और दूसरी सारी तोड़ फोड की कार्यवाही शुरू करने का ऐलान कर दिया । फिर भी ऐमरजैसी नहीं लगाई गई कि शायद इन लोगों को अकल आ जाये लेकिन इनको अकल नहीं आई । उसके बाद प्राईम मिनिस्टर साहिबा की पैटीशन का फैसला आया । एक तरफ तो यह भाई, जैसे चौधरी रिजक राम जी कहते हैं कि वे गांधीवादी हैं और यहां पर सरकार ने कुमिटिड जुडीशरी कर दी है लेकिन जब उस पैटीशन का फैसला आता है तो ये भाई कहते हैं कि फैसला तो ठीक है लेकिन जो हाई कोर्ट ने स्टे दे दिया वह गलत काम किया है । उनकी कोठी पर जा कर कहते हैं कि इस्तीफा दो । ये भाई जो अपने आपको गांधीवादी कहते हैं । एक तरफ तो जय प्रकाश जी यह कहते हैं कि फैसला तो ठीक है हाई कोर्ट का लेकिन उसने स्टे गलत दे दिया इसलिये उसे नहीं मानेंगे । फिर 25 तारीख को देहली के राम लीला ग्राऊंड में फैसला किया गया कि 29 तारीख से सारे हिन्दुस्तान, सारे देश में बिहार की तरह का डायरैक्ट ऐक्शन शुरू होगा । ऐसा करके इन लोगों ने सारे देश में आग लगानी थी और कई लाख लोगों का जलूस लेकर प्रधान मती की कोठी पर जाकर तशद्दद करना था । तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि ऐसे हालात पैदा करके इन लोगों ने खुद ऐमरजैसी लगवाई जो आज इसकी नुकताचीनी करते हैं कि लोगों को जेलों में बंद कर दिया, किसी एक के घर में खाने को नहीं पीने को नहीं और घर में कोई पैसा नहीं । मैं कहता हूं कि उन भाइयों ने खुद ऐसे हालात पैदा करके ऐमरजैंसी लगवाई

जोकि लगानी जरूरी हो गई वरना यहां पर भी बंगलादेश जैसे हालात पैदा हो जाते । अब मैं इस बीस नुकाती प्रोग्राम पर आता हूं । ऐमरजैसी से पहले जो हालात चल रहे थे उन से ऐसा माहौल पैदा हो गया कि जब व्यापारियों ने देखा कि देश में अमन नहीं है गड़बड़ फैल रही है तो उन्होंने अपना माल बाहर निकालना बंद कर दिया जिससे कीमतें दुगनी तिगुनी हो गई । लेकिन अब आप देखें ऐमरजैसी लगते ही सारी चीजें मार्किट में आ गई हैं और कीमतें भी गिरने लग रही हैं । फिर यह भाई कहते हैं कि प्रधान मंत्री जी विधान को बदल रही हें लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि विधान जो है यह लोगों के लिये है जनता के लिये है इनके लिये ही नहीं है जो ऐसी बातें करते हैं । देश के लोगों की एकनामिक और सोशल कंडीशज बदलने के लिये सुधारने के लिये इस विधान में कितनी तरमीमें करनी पड़े' वह कर देनी चाहिए । इसके लिए सब तैयार हैं, समाज भी तैयार है, देश भी तैयार है । यह कहना कि विधेयक भी मत बदलों, कोई तरमीम भी न करो 20 सूत्रीय प्रोग्राम भी न करो देश के अन्दर तो कैसे काम चलेगा । आज देश की स्थिति चाईना जैसी हो गई है जैसे च्यांग काई शेक के टाईम में हो गई थी । उस टाईम पर जब देश की इकोनौमी शैटर होने लगी, इन्फलेशन आया, जब देश में ऐसी चीजें पनपने लग जाएं तो सारे का सारा वातावरण ऐसा हो जाता है कि देश में रैवोल्युशन होता है, जैसे चाईना में आया था और हमारे देश में– ऐसी ही सिचुएशन क्रिएट हो रही थी । स्मगलरों ने प्रौफिटीयर्ज ने टैक्स इवेडर्ज ने ऐसे हालात पैदा कर दिए जिन

को रोकने के लिए अगर मीसा न होता ऐमरजैंसी लागू न होती तो चीन जैसे हालात होते, उसी तरह के हालात होने लग गए थे । आप को मालूम है 17 अरब रुपया हिडन–मनी डिस्कलोज हुआ है । मैं तो कहता हू कि 100 अरब है । इस तरह से इनकी गिरफ्तारियां की जाएं इस तरह से तलाशी ली जाए कि जब तक यह बलैक–मनी नहीं निकलेगा, दबा हुआ सोना नहीं निकलेगा नम्बर दो का पैसा नहीं निकलेगा तब तक न तो प्राइसिज ठीक रहेंगी और न देश की इकौनोमी ठीक रहेगी । इसको निकालने का एक ही तरीका है–मीसा और ऐमरजैसी । मीसा और ऐमरजैसी के बिना कोई देने को तैयार नहीं । अब वह समय नहीं है कि करोड़पति करोड़पति ही रहे और गरीब आदमी भूखे मरें । एक आदमी जिन्दगी भर एक झोपड़ी में दिन काटे और दूसरा चण्डीगढ जैसे शहर में आलीशान मकान बनाकर महलों में रहे यह बरदाश्त नहीं होगा । अमीर को अमीरी छोड़नी पड़ेगी गरीब लोगों को सुविधाएं देनी पड़ेगी रोटी–कपड़ा दवाईयां देनी पड़ेगी और यह तब दिया जा सकता है यदि अमीर न हों और इक्वल डिस्ट्रिव्यूशन आफ वैल्थ हो । किसान कपास पैदा करता है लेकिन उसे गर्म कपड़ा नहीं मिलता मजदूर मकान बनाता है लेकिन उसे रहने के लिए मकान नहीं मिलता । यह जो 20 सूत्रीय प्रोग्राम है यह ठीक है समाज में समाजवाद लाने के लिए है लैटर–टू–लैटर इसकी इम्पलीमैंटेशन होनी चाहिए । इस तरह नहीं होगा कि एक तरफ गरीब पैदा करते जाएं और दूसरी तरफ अमीर पैदा करते जाएं । जब इलिट्रेसी थी हम कहा करते थे लोगों को बहला देते थे कि

गरीबी परमात्मा की देन है । लेकिन यह सोशलिजम गवर्नमैंट की देन है इसको लाने के लिए हमें भी काम करना चाहिए और यह जरूर आएगा । मैं ज्यादा न कहता हुआ इतना ही कहूंगा जैसा कि चौधरी फूल चन्द जी ने कहा प्लाटस लेकर लोग खुश नहीं हैं ऐसी बात नहीं है । मैं देहातों में रहता हूं रोज देखता हूं लोग खुश हैं । मेरे दोस्त ने कहा कि सब जाकर देख लें कोई खुश नहीं है । सब खुश हैं सब लोग दरखास्तें देते हें कि उनको प्लाट दो और दिए जाते हैं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा दूसरी बात है फैमिली प्लानिंग की । गवर्नर महोदय के ऐड्रैस में फैमिली प्लानिंग का जिक्र हुआ है । यह बड़ी अच्छी बात है कि हरियाणा प्रदेश फैमिली प्लानिंग में सारे प्रदेशों से अव्वल रहा । बहुत ही सराहना की बात है, मैं हैल्थ मिनिस्टर को मुबारिकबाद देता हूं । लेकिन इससे बात नहीं बनेगी फैमिली प्लानिंग इस ढंग से करनी पड़ेगी जिससे यह फिगर और कम हो । जो फिगर चल रही है अगर यह चलती रही तो 10 साल के बाद क्या हालत हो जाएगी? आज इंड़िया की आबादी तकरीबन 62 करोड़ है और जमीन 47 करोड़ एकड़ है । एक आदमी के हिस्से पौना एकड़ जमीन आती है । अगर हम आबादी इसी रेशो से बढ़ाते चले जाएंगे तो न रहने के लिए मकान होंगे न जोतने के लिए कमीन होगी । इसलिए आबादी रोकने के लिए कानून बनाना जरूरी है । डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं आपके जरिए सदन से दरख्वास्त करूंगा कि एक रैजोल्युशन पास कर के भेज

दें और सैन्ट्रल गवर्नमैंट से दरखास्त करें कि इसके लिए कानून बनाया जाए । जब तक कानून नहीं बनेगा हम कितनी ही स्कीमें चलाएं कितनी ही स्कूल बिल्डिंगज बना लें बच्चे बाहर ही बैठेंगे! कितनी ही सड़कें बना लें, 5 साल के बाद वह सड़क भी नहीं पायेगे । जब तक हम फैमिली प्लानिंग नहीं अपनाएंगे एक या दो बच्चे के बाद आप्रेशन नहीं होगा तब तक इस प्रौब्लम का हल नहीं होगा, तब तक हमारी कोई स्कीम मुकम्मल तौर पर कामयाब नहीं होगी । मेरे दोस्त फूल चन्द ने कई बातें कहीं, वे 20 सूत्रीय प्रोग्राम की स्पोर्ट करते हैं लेकिन कभी कभी नुक्ताचीनी करते हैं । वे 20 सूत्रीय प्रोग्राम को स्पोर्ट करते हैं इसलिए मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूं और इसके साथ ही साथ ज्यादा न कहता हुआ गवर्नर महोदय ने जो ऐड्रैस पढ़ा है उसकी भी ताईद करता हूं ।

लाला गौरी शंकर (नरवाना) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, 12 तारीख को हमारे गवर्नर साहब ने विधान सभा में जो ऐड्रैस पढ़ा, उसका शुक्रिया अदा करने के लिए, और जोशी साहब ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव रखा उसका अनुमोदन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं । गवर्नर साहब ने ऐड्रैस में चौधरी बंसी लाल जी के मुताल्लिक जिक्र किया । मैं चौधरी बंसी लाल जी का, जिन्होंने साढ़े सात साल के शासन काल में, हरियाणा को तरक्की पर ले जाकर, हरियाणा प्रदेश का नाम ऊंचा किया है, इस के लिए चौधरी साहब का शुक्रिया अदा करता हूं । जब उन्होंने हिन्दुस्तान की सरकार में, डिफेंस मिनिस्टर के तौर पर हल्फ लिया तो सारा

हरियाणा ही उनका तहेदिल से शुक्रिया अदा करता है कि उन्होंने हरियाणा का मान सारे हिन्दुस्तान में बढ़ाया है । इसके साथ ही साथ, चौधरी बंसी लाल की सबसे बड़ी तारीफ की बात यह है कि वे जाते जाते हरियाणा के लिए इतने अच्छे नेता दे गए हैं जो बहुत सुलझे हुए नेता हैं और हरियाणा के जो भी काम बाकी छोड़ गए हैं, उन को यह शख्स पूरा करेगा और हरियाणा को तरक्की की तरफ ले जाएंगे ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, गवर्नर साहब ने अपने ऐड्रैस में सिंचाई के नल–कपों के लिए कहा कि हरियाणा में 200 गहरे नलकूप लगेंगे । मैं आपके द्वारा सरकार से अर्ज करूंगा कि जो सरसा ब्रांच नहर है, उसके आस पास काफी सेन है । अगर वहां पर नल–कूपो लगाए जाएं तो सेम दूर हो सकती है । उस इलाके में मीठा पानी नहीं है, खारा है । जो नहर का एरिया है उस में मीठा पानी नहीं है, खारा है, इसलिए वहां नलकूप लगाकर नहर का पानी बढ़ाया जाए और नहर से निकाल कर तहसील के देहातों में दिया जाए । वह जमीन बहुत अच्छी है, काफी अनाज पैदा करेगी और आज देश में अनाज की जो कमी है उसको दूर करने में सहयोग मिलेगा । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करूंगा कि चंदान से लेकर कनैत तक के एरिए का सर्वे करवाया जाए वहां पर ट्यूबवैल्ज लगाए जा सकते हैं । ट्यूबवैल लगाकर वह पानी तहसील के गांवों को दिया जाए ताकि उस इलाके की पानी की कमी दूर हो सके ।

इसके बाद लैड सीलिंग का जिक्र आया है । काफी देर से लैड सीलिंग की बात चल रही है, पीछे भी इसका जिक्र आया था । मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस बिल को जल्दी से जल्दी लाया जाए और जो सरप्लस लैड निकलती है वह जल्दी से जल्दी हरिजनों में तकसीम करवाई जाए और इसकी जल्दी से जल्दी इम्पलीमैंटेशन होनी चाहिए । क्योंकि जितनी देर होती है उतना उसका कोई फायदा नहीं होता । लोग कहते हैं कि ढोंग है, इसका कोई फायदा नहीं मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि जल्दी से जल्दी कोई कानून लाकर उसे इम्पलीमैंट किया जाए ।

कृषि के बारे में भी मैं थोड़ा सा निवेदन करना चाहता हू । हमारे हरियाणा में गन्ने की पैदावार बहुत ज्यादा है और शूगर मिल बहुत थोड़े हैं । इससे बड़ा नुकसान है । जो हमारे देशी कोल्हू हैं उनसे गन्ना पीलने पर सारा रश नहीं निकलता जिसकी वजह से केवल नौ दस परसैटं गुड़ बन पाता है । यों कहें कि 100 क्विटल गन्ने से नौ दस मन गुड़ बनता है । यदि शूगर मिल में इस गन्ने को पिल्ला जाए तो इतने ही गन्ने से नौ दस मन चीनी बन जाती है और सीरा फालतू का रह जाता है । फिर आप देखें कि चीनी और गुड़ के भाव में भी बहुत फर्क है । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि हमारे हरियाणा में कम से कम तीन चार और शूगर मिल लगाए जाएं ताकि हमारा जो गन्ना है उसका सही प्रयोग हो सके और ज्यादा से ज्यादा चीनी का उत्पादन किया जा सके । हमारे जिला जींद में नरवाना और जींद के इलाके में

भी गन्ने की पैदावार बहुत ज्यादा होता है । इसलिए मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि उस इलाके में भी एक शूगर मिल लगाई जाए ताकि गन्ने की पैदावार ज्यादा भी हो और जमींदारों को उनकी पैदावार की सही कीमत भी मिल सके । गन्ने की कीमत दूसरी स्टेट्स में 14 रुपये क्विटल है लेकिन हमारी स्टेट में 11 रुपये क्विटल है । ऐसा क्यों है इसकी वजह को देखकर इसको बढ़ाने की कृपा की जाए ।

पशु पालन की बात भी उपाध्यक्ष महोदया यहां कही गई । पशुओं की तरफ जितना ध्यान हमारी सरकार ने दिया उससे भी ज्यादा ध्यान इस ओर देने की जरूरत है । (इस समय सभापतियों की सूची में एक सदस्य प्रिंसिपल ईश्वर सिंह पदासीन हुए) हमारे प्रान्त में जितनी भी गऊएं हैं उनके नीचे दो–दो, पांच–पांच और छः–छः किलो दूध है । इसकी खास वजह यह है कि हमारे यहां जो खागड छोड़ जाते हैं उनकी नसल का ख्याल नहीं किया जाता । इसकी वजह से आगे जो नसल पैदा होती है वह घटिया किस्म की पैदा होती है । जो गऊएं कभी ज्यादा दूध दिया करती थीं वे आज बेकार हो गई हैं । इसके लिए, चेयरमैन साहब, आपके द्वारा सरकार से मेरी प्रार्थना है कि जिस तरह फैमिली प्लानिंग के लिए सरकार ने प्रोग्राम बनाया हुआ है उसी तरह से इसके लिए भी कोई प्रोग्राम बनाया जाए और जितनी गऊएं हैं उनकी जर्सी नसल से पैदावार ली जाए । इस तरह की गऊएं 25– 30 किलो दूध देती हैं । इससे बड़ा फायदा होगा क्योंकि इससे मिल्क प्लांटस में

जो दूध की कमी है वह भी पूरी हो जाएगी और लोगों को पीने के लिए भी पूरा दूध मिलेगा । इसके अलावा हरियाणा की भैसें और गऊएं जो बाहर जा रही हैं, इससे भी यहां की नस्ल कमजोर हो रही है । अच्छे–अच्छे मवेशी बाहर चले जाते हैं । इसको बंद किया जाए ।

इंडस्ट्रीज डिपार्टमैंट के बारे में भी मैं कुछ निवेदन करूंगा । इसमें कोई शक नहीं कि इस क्षेत्र में हरियाणा ने काफी तरक्की की है लेकिन सरकार से थोड़ी सी मैं और प्रार्थना करना चाहूंगा । चीफ मिनिस्टर साहब ने फरमाया था कि हमारे बैकवर्ड क्लासिज के जो लोग हें, जो बाहर देहात में रहते हैं, उनके लिए हम कुछ प्रबन्ध कर रहे हैं । यह तो ठीक है लेकिन मैं सरकार से कहूंगा कि यह तो स्कीमें पास कर देती है, कर्जे पास कर देती है लेकिन ढंग कुछ ऐसा बनाया जाता है जिससे कर्जे लेने में लोगों को बड़ी मुश्किल पड़ती है । हमारे यहां अभी तक बहुत से लोग अनपढ़ हैं । उन्हें फार्म वगैरा पढ़ने या भरने नहीं आते । परिणाम यह होता है कि उन्हें कर्जा लेने के लिए बहुत सा खर्चा करना पड़ता है । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि कर्जे देने के ढंग को सिम्पल बनाया जाए फार्म सिम्पल बनाए जाएं, ताकि उन्हें आसानी से कर्जा मिल सके । या कोई ऐसी स्कीम बनाई जाए जिससे कर्जा लेने में उन्हें कोई डिफिकल्टी न आए । आजकल यदि कोई कर्जा लेना हो तो कोई 20 जगह जाना पड़ता है । इतनी फार्मेलेटीज हैं जिन्हें हर आदमी पूरा नहीं कर सकता । इसके

अलावा ज्यादा से ज्यादा कर्जे देकर के स्माल स्केल इंडस्ट्रीज देहात में कायम की जाएं । मैं सुझाव दूंगा कि दो–तीन इंडस्ट्रीज ऐसी हैं जो कि हमारे यहां कामयाब हो सकती हैं । जैसे शू–मेकिंग इंडस्ट्री है । (विघ्न) रेडी–मेड कपड़े की इंडस्ट्री है । यह बड़ी कामयाब हो सकती है क्योंकि इसकी बड़ी मांग है । इसी तरह से हैन्ड लूम कपड़े की इंडस्ट्री है । मुझे उम्मीद है कि सरकार इस ओर ध्यान देगी ।

कर्जों के मुताल्लिक चेयरमैन साहब एक बात मैं और अर्ज करूंगा । सरकार ने प्राइवेट कर्जे एक साल के लिए माफ किए हैं लेकिन मेरा निवेदन है कि इन कर्जों के साथ–साथ गवर्नमैंट के जो कर्जे हैं वे भी एक साल के लिए रुकने चाहिए क्योंकि फसल भी अच्छी नहीं हुई है, भाव भी उनकी पैदावार के कुछ कम हो गए हैं, जिसकी वजह से गरीब आदमी को सरकार के कर्जे देना भी मुश्किल हो गया है ।

इसके बाद चेयरमैन साहब मेरी सरकार से प्रार्थना है कि जींद में इंडस्ट्रीज के लिए जो एरिया कटा हुआ है उसे जल्दी से जल्दी नीलाम कराया जाए ताकि लोग शीघ्रातिशीघ्र प्लाट लेकर के वहां इंडस्ट्रीज चालू कर सकें । नरवाना में भी बड़ी डिमांड है कि वहां इंडस्ट्रियल एरिया बनाया जाए ताकि लोग इंडस्ट्रीज लगा करके हरियाणा प्रान्त को तरक्की दे सकें और ज्यादा से ज्यादा लोगों को वहां काम मिल सके ।

अब मैं चेयरमैन साहब सड्कों के मुतालिक कुछ अर्ज करूंगा । नरवाना से टोहाना सड़क काफी सालों से मन्जूर हुई पड़ी है । यह नरवाना से टोहाना तक तो बन चुकी है लेकिन टोहाना से कालवान तक का तीन किलोमीटर की सड़क अभी बनने को रहती है । इसके न बनने की वजह से नरवाना से टोहाना जाते हुए 15–20 मील का चक्कर पड़ता है । इसे जल्दी से जल्दी पूरा करवाने की कृपा की जाए । इसी तरह से खरडवाल से समान तक और नरवाना से घुडथली की सड़कों को बनवाने की कृपा की जाए ।

स्कूलों के लिए भी चेयरमैन साहब मैं आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करूंगा । कई साल से स्कूलों का बजट नहीं आया है । लोगों की स्कूलों के लिए चूंकि बड़ी मांग है इसलिए इनके लिए भी बजट में कुछ प्रोविजन रखा जाए । मेरी प्रार्थना है कि राजगढ़ डोबी मिडल स्कूल बनाया जाए । एक लाख रुपये की बिल्डिंग उन्होंने बना रखी है । सांचाखेडा भी मिडल स्कूल बनाया जाए । पीपलथा हाई स्कूल बनाया जाए । बिल्डिग इनकी भी बनकर तैयार हो चुकी है ।

हस्पतालों के बारे में, चेयरमैन साहब, मेरी अर्ज यह है कि हमारे यहां हस्पताल जो बनाए गए हैं वे बहुत बड़ी लागत से बनाए गए हैं लेकिन उनमें डाक्टर बहुत कम हैं । बिल्डिंग्ज के ऊपर तो हमने पचास–पचास लाख रुपया लगा दिया लेकिन स्टाफ

उनमें है नहीं । इसलिए उन सब में डाक्टर और स्टाफ जल्दी से जल्दी पूरा किया जाए ।

मार्किट कमेटियों के जो ज्वांयट फार्म लागू किए गए हैं इनसे लोग बड़े परेशान हैं । इनको गौर करके हटाया जाए ।

चेयरमैन साहब, हमारे कई जिलों और सब–डिविजंज में सरकारी दफ्तरों और अफसरों के रहने के लिए जगह की बड़ी किल्लत है । जींद में भी मिनी सैक्रेटेरिएट के लिए चीफ मिनिस्टर साहब से डिमांड की थी लेकिन आपके द्वारा भी सरकार को मैं यह अर्ज कर देना चाहता हूं कि उसमें सरकार को कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा । सरकार की नरवाना में और जींद में काफी जमीन पड़ी हुई है । वह शहर के अन्दर आ चुकी है । उसको फरोख्त करके यह मिनी सैक्रेटेरिएट बनाया जा सकता है । मुझे उम्मीद है कि सरकार इसकी तरफ जरूर ध्यान देगी । उस जमीन को नीलाम करके जो बिल्डिगें वहां बनाने की जरूरत है उन पर उस पैसे को लगा दिया जाये । इस पैसे से वे सभी चीजें बन सकती है । मैं तो यह भी कहूंगा कि इतना पैसा आ जायेगा कि और भी बच सकता है ।

दूसरे फैमिली प्लानिंग के बारे में काफी बातें कही जा चुकी हैं । चेयरमैन साहब मैं आपके जरिए प्रार्थना करूंगा कि हमें इस चीज की बहुत जरूरत है । आजकल जितनी भी हमारी ऐडमिनिस्ट्रेशन है वह फैमिली प्लानिंग पर ही लगी हुई है, चाहे

कोई एस ० डी ० एम ० है, चाहे वह नहर वाले हैं, चाहे बिजली वाले हैं । सभी पर, किसी के जिम्मे कितने ही केसिज लगा रखे हैं, किसी के जिम्मे कितने ही हैं । उन अधिकारियों को फैमिली प्लानिंग के केसिज दे कर गलत काम करवाते हैं । मैं तो यही अर्ज करूंगा कि इसके लिए कानून बनाया जाये चाहे दो बच्चों का बनाये, चाहे तीन बच्चों का बनाये । अफसरों की डयूटी हटायी जाये और कानून बनाया जाये । कानून के बनाये बगैर यह मसला हल नहीं हो सकता । यह बहुत ही मुश्किल मसला है । सरकारी मुलाजिम को फैमिली प्लानिंग के केस के लिए तीन–चार सौ रुपये खर्च करने पड़ते हें । कहीं पर यह होता है कि अगर फैमिली प्लानिंग का केस लाओगे तो तुम्हें जल्दी नौकरी मिलेगी, अगर फैमिली प्लानिंग का केस नहीं दोगे तो जो तुम्हारी टेम्परेरी नौकरी है यह भी हट जायेगी । मैं तो यह कहूंगा कि सैन्टर से प्रार्थना की जाये कि इसके लिए कोई कानून बनाया जाये । इन शब्दों के साथ मैं गवर्नर ऐड्रैस की ताईद करता हूं ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया (साल्हावास–अनुसूचित जाति) : माननीय चेयरमैन साहब कल से गवर्नर ऐडैरस पर बहस चल रही है और मेरे साथी जोशी जी ने जो प्रस्ताव हाउस के सामने रखा है मैं उसकी पुरजोर ताईद करता हूं । गवर्नर साहब ने सब से पहले यह बताया है कि सन् 1968 में बंसी लाल जी की सरकार बनी थी । जो उस सरकार ने काम किये हैं उन पर उन्होंने रोशनी डाली है । मैं भी, बंसी लाल की सरकार ने जो काम किये

हैं उनकी ताईद करता हूं । बंसी लाल की सरकार ने बहुत ही सराहनीय काम किया है उनको हमेशा के लिए हरियाणा सरकार और हरियाणा की जनता याद रखेगी केवल हरियाणा की ही जनता नहीं बल्कि तमाम दुनियां की जनता इनके कामों को ऐप्रीशियेट करेगी और याद रखेगी ।

चेयरमैन साहब, सब से पहले मैं इस बात पर आता हूं कि जो बात यहां हाउस में चौधरी फूल चन्द (रोहट) ने कही और यहां शोर मचाया, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि 1,48,459 प्लाट्स हरिजनों को दिये गये । 80 परसैन्ट हरिजनों को प्लाट्स मिल चुके हैं और जो बाकी 20 परसैन्ट हैं उनको भी हमारी सरकार, जैसा कि गुप्ता जी ने पार्टी मीटिंग में भी कहा था और उन्होंने यहां भी एलान किया, देगी । मैं चौधरी फूल चन्द जी से यह कहना चाहता हूं कि यह मजाक नहीं है । अब यहां पर हमारे रैविन्यू मिनिस्टर पंडित चिरंजी लाल जी बैठे हुए नहीं हैं वरना मैं उनके सामने यह बताता कि नाहड गांव जो कि एक छोटा सा गांव है 250 प्लाट्स मेरे सामने दे कर आये हैं । उनको यह बातें मालूम होनी चाहिए कि जो हरिजनों को प्लाट्स दिये हैं यह बात सच्ची है या गलत है । चेयरमैन साहब इन प्लाट्स की बाबत मैं सन् 1957 से सन् 1962 तक की बात सुनाना चाहता हूं । उस वक्त के जो रैविन्यू मिनिस्टर थे उसके पास एक डैपुटेशन हरिजनों का गया । मैं भी उनके साथ गया था । उस वक्त उस मिनिस्टर ने यह कहा कि कटारिया साहब सब हरिजनों को प्लाट्स

देंगे तो सारी जमीन जो जमींदारों की है वह हरिजनों के पास ही चली जायेगी । मैं आपकी मार्फत इन लोगों को बताना चाहता हूं कि उस वक्त क्या बात थी? उस वक्त तो आदमी भी थोड़े थे और जमींदारों के पास जमीन ज्यादा थी और हरिजन, जो प्लाट्स लेने वाले थे वे भी थोड़े थे । अब तो जमीन भी थोड़ी रह गई है और हरिजन भी बढ़ गये हैं तो इन हालात में प्लाट्स देना मुश्किल था । मैं तो यह कहता हूं कि जब यहां से राजा गये, नवाब गये तो इन हरिजनों को क्यों नहीं जमीन मिल सकती है? बहुत से भाई कहते हैं कि इन हरिजनों को क्यों जमीन दी जाये? मैं तो यह पूछना चाहता हूं कि वे जमीन को कहां से लाये हैं । वह तो जमीन इस गवर्नमैंट की है । जब वे पैदा हुए थे तो क्या जमीन अपने साथ लाये थे । इस जमीन पर थोड़ा बहुत हरिजनों का भी हिस्सा होना चाहिए । उसको रहने को सिर ढकने को जगह मिलनी चाहिए । काग्रेस गवर्नमैंट ने इतना तो कर दिया । मुझे अंग्रेजों का जमाना याद है । दूसरी पार्टी की हकूमत भी याद है । जो जो इन हरिजनों पर जुल्म होते थे, जो जो कारनामे होते थे वे मुझे सब याद हैं । अब किसी की हिम्मत नहीं है कि हरिजनों को नाजायज तौर पर तंग करे ।

यहां पर सबसे पहले हरिजनों के लिए जो जो काम किए हैं उसका बहुत से लोग मजाक उड़ाते हैं । मैं यह बताना चाहता हूं कि इस सरकार ने सबसे पहले नौकरियों में प्रोमोशन की रिजर्वेशन की है, पहले यहां पर रिजर्वेशन नहीं थी । यहां

हाउस के मैम्बरों की एक कमेटी बनायी गई, जिसके चेयरमैन राय निहाल सिंह जी हैं । उन्होंने सारे महकमों की पड़ताल की है । पहले से अब प्रोमोशन में बहुत फर्क पड़ा है । पहले हरिजनों को कोई पूछता भी नहीं था । हैड आफ दी डिपार्टमैंट उनके बारे में कोई परवाह नहीं करता था । अब डिपार्टमैंट वाले कमेटी के सामने आते हैं और जो भी कार्यवाही होती है, वह कमेटी के सामने रखते हैं । कागजों पर तो रिजर्वेशन बहुत पहले से थी लेकिन कार्यवाही कुछ भी नहीं होती थी । चौधरी बंसी लाल जी की सरकार आने पर एक कमेटी बनायी गयी जिसमें इसी हाउस के मैम्बर हैं । पहले में और अब में, हरिजनों की प्रोमोशन में काफी फर्क पड़ा है । हरिजन कल्याण निगम है । यह निगम हरिजनों को कर्जा देती है । मैं उस निगम का डायरैक्टर हूं । आज ही पंचकूला में एक बुक बाइंडिंग ऐंड प्रिंटिंग की प्रैस लगाई है । उसमें सब महकमों का काम होगा । हरिजन कल्याण निगम की इनकम बढ़ाने के लिए यह स्कीम लागू की गई है । हमारे बहुत से भाईयों ने यह कहा है कि इसको जिला स्तर पर क्यों नहीं खोला गया? इसको पंचकूला में खोलने का क्या मकसद है? इसको जिला हैड क्वार्टर पर खोला जाना चाहिए था । इसको यहां चालू करने का मकसद यही है कि जब निगम को यहां से फायदा होगा तो और जिलों में भी इसकी ब्रांच खोली जाएंगीं । जैसे पहले करनाल और अम्बाला में शू–सैन्टर था । अभी लाला गौरी शंकर जी भी शू–सैन्टर का जिक्र कर रहे थे । अम्बाला, करनाल में तो हम कच्चे माल का भी सैन्टर खोलने जा रहे हैं । जूते बनाने का

सारा मैटीरियल यहां से दिया जाएगा । जो भी लोग जूते या दूसरा सामान बनाएंगे उसको हरिजन कल्याण निगम खरीदेगा । हमारी निगम के पास हरियाणा सरकार का आर्डर मौजूद है कि जितने भी क्लास फोर ऐम्पलाइज हैं, चाहे वे ट्रांसपोर्ट विभाग के हैं, चाहे पुलिस विभाग के हैं सबके जूते निगम से खरीद लिए जाएंगे । हम डिस्ट्रिक्ट हैड क्वार्टर पर भी ऐसा ही करेंगे । गवर्नमैंट का तो मकसद ही यह है कि जो भी बेरोजगार लोग हैं, उनको रोजगार दिया जाए । इसके अलावा और भी बहुत सी स्कीमें हैं जैसे नारनौल और नूह में कपड़े बनाने का सैन्टर खोलने जा रहे हैं । इसी तरह का और भी सैन्टर कहीं खोलेंगे । वहां पर डिपो खोलेंगे जो उनका बुना हुआ कपड़ा खरीदेगा । गुडगावां के बने हुए रेड़ी मेड कपड़े भी बाहर भेजेंगे । जो भी हमारे दस्तकार भाई हैं उनसे कपड़ा बनवाएंगे और उस कपड़े को बाहर भेजेंगे ।

इसी तरह से गवर्नमैंट ने और छोटी–छोटी सहूलियात दी हैं हरिजनों को । पहले कभी किसी के सुनने में नहीं आता था कि बैंक, रिक्शा वालों को भी कर्जा देता है । अब मुझे पता है कि जैसे यहां चण्डीगढ में मिला है, वैसे ही रोहतक में भी और झज्जर में भी रिक्शा वालों को साढ़े नौ–सौ रुपया कर्जा रिक्शा के लिए मिला है । सिर्फ 50 रुपए उनको देने पड़ते हैं । उन बेचारों को तीन या चार रुपए रोज पर रिक्शा मिलती थी । लोग बताते हैं कि एक–एक आदमी ने रोहतक के अन्दर भी चार–चार, पांच–पांच सौ

रिक्शा बना रखीं थीं । चण्डीगढ में कोई कहने लगा कि एक–एक आदमी के पास 6– 6, 7– 7 सौ रिक्शा हैं । मेरा कहने का मतलब यह है कि अब उन लोगों को अपने घर की रिक्शा मिलेगी जो कुछ दिनों में उनकी अपनी हो जाएगी । फिर वह कमाकर और रिक्शा भी ले सकता है । इससे' उसका स्तर ऊंचा हो सकता है । जब उसकी अच्छी कमाई होगी तो उसका स्टैण्डर्ड भी बढ़ेगा ।

इसके अलावा चेयरमैन साहब मैं नहरों की बाबत भी कहूंगा । नहरों की बात यह है कि नहरें उस इलाके तक पहुंचा दी हैं, जिस इलाके में नहरों का कभी नामो–निशान भी नहीं हुआ करता था । मैं जिस इलाके से ताल्लुक रखता हूं, उसमें नहरों के पानी का नाम भी नहीं होता था । पशुओं को तो क्या आदमियों को भी पानी नसीब नहीं होता था । लोग जोहडों का पानी पीते थे । अब वहां पीने का पानी नलों का है । झज्जर लिपट स्कीम है, जवाहर लाल नेहरु लिपट स्कीम है, साल्हावास के पास वह देखने की जगह है । जो वह जगह बनी है, उसको वे कहते हैं कि एशिया में सबसे बड़ा प्रोजैक्ट बनेगा । राव बंसी सिंह का और मेरा साथ ही साथ मिलता–जुलता इलाका है, महेन्द्रगढ़ और नाहड का इलाका है । सब–तहसील नाहड के इलाके के आदमी चौधरी बंसी लाल को इस तरह से पूजेंगे कि उनकी पुश्तें भी उनको याद रखेंगी । पहले तो लोग सर छोटू राम के जमाने में यह सुनते थे कि नहर से पानी आएगा लेकिन अब आया है । जहां किसी ने

ख्वाब में नहीं सोचा था कि पानी आएगा वहां पानी पहुंचा है । पीने के पानी के लिए. बीस–बीस गांवों की एक–एक स्कीम बनी हुई है । पीने के पानी की जरूरत सिर्फ नहरों से ही पूरी नहीं होती हैं बल्कि वहां टयूबवैलों के पानी की भी स्कीमें चल रही हैं । इन पर भी काम जारी है और नाहड तहसील के 72 ऐसे गांव हैं जो नलकों का पानी पीएंगे । नलकों के पानी की बात पहले शहरों में ही नसीब हुआ करती थी लेकिन अब यह गांवों में भी होगा । जिस तरह से हमें पानी मिला है, यह तो हमें ख्वाब में भी कभी नजर नहीं आता था ।

इसके अलावा चेयरमैन साहब, खेतीबाड़ी की बाबत भी यहां पर बहुत चर्चा हुई है । वाकई हमारे भाई ठीक कहते हैं कि खेतीबाड़ी के लिए जितने साधन उपलब्ध हो सकते थे, किए गए हैं जैसे टयूबवैल हैं, नहरें हैं । हिसार यूनिवर्सिटी ने जो तरह–तरह के बीज इजाद किए हैं, उनसे हमारी पैदावार बढ़ी है । कुछेक भाईयों ने कहा कि अनाज मन्दा हो गया । पहले तो एक किल्ले के अन्दर 7–8 मन अनाज हुआ करता था । अब 20– 30 – 50 मन अनाज एक किल्ले के अन्दर पैदा होता है । जब अच्छे बीजों की वजह से ज्यादा अनाज पैदा हुआ तो मन्दा आया है और मन्दा जब हरेक चीज का होगा तो उस से गरीब आदमी को फायदा होगा । इसमें यह नहीं है कि जमींदार को नुक्सान है । जमींदार को भी फायदा है क्योंकि उसको भी चीजें सस्ती मिलती हैं । बहुत से ऐसे भाई भी उनके ठेकेदार बने बैठे हैं जिनके पास

5 बीघे जमीन है । वे भी अपने को जमींदार समझते हैं । वे तो हजिरन से भी बदतर हैं क्योंकि हरिजन तो मजदूरी कर लेता है, उसको शर्म नहीं आती लेकिन वे तो मजदूरी भी नहीं कर सकते क्योंकि उनको शर्म आती है । दस–बीस परसैन्ट ऐसे आदमी हैं, जो ज्यादा अनाज पैदा करते हैं, और जिनके पास अनाज फालतू होता है और बेचना पड़ता है वरना तो बहुत से ऐसे जमींदार हैं जिनको अनाज खरीदना पड़ता है । यहां पर ये सारे ठेकेदार बने बैठे हैं, और कहते हैं कि अनाज मन्दा हो गया । यह करो, वह करो । बहुत थोड़े से ही आदमी ऐसे आते हैं जिनके पास फालतू अनाज होता है वरना तो सब को खरीदना पड़ता है यह बात अलग है कि वह पहले नहीं खरीदते तो एक दो महीने के बाद खरीदते पैं लेकिन आ वहीं जाते हैं ।

इसके अलावा चेयरमैन साहब पशु–पालन के बारे में यहां बहुत बातें हुई हैं । पशु– पालन की बाबत भी मैं यहां कहना चाहता हूं । पशु–पालन गाय, भैस या भेु बकरियां रखना गरीब आदमियों का काम है । उनकी तरफ भी सरकार को पूरी तवज्जुह देनी चाहिए । एक बात तो यह है कि उनके पालने के लिए इलाके में जंगल बहुत कम हैं । उनको फारैस्ट वाले सड्कों पर भी चरने नहीं देते । फारैस्ट मिनिस्टर साहब बैठे नहीं हैं, इसलिए आपके जरिए मैं उनसे यह रिक्वैस्ट करूंगा कि उनको कुछ ढील दिलाए, वे उन को नाजायज न पकड़े । इसके अलावा मैं यह भी कहना चाहता हूं कि डंगरों के जो अस्पताल हैं उनमें दवाईयां पूरी नहीं

दी जातीं । वहां पर भेड़ बकरियों की दवाईयों का भी इन्तजाम होना चाहिए । इस साल जैसे बारिश ज्यादा हुई तो भेड़ों की पानी की वजह से ओल उतर गयीं । उनका इलाज करने के लिए अस्पतालों में दवाई नहीं है । एक गरीब आदमी के पास दो–तीन सौ भेडें थीं, वे तमाम की तमाम ओल की वजह से खतम हो गई क्योंकि दवाई नहीं है । बारिश की वजह से ऊन पर ज्यादा असर पड़ता है । बहुत से मेरे भाई मजाक करते हों कि मैं भेड़ और बकरियों की बात ही करूंगा । मैं यह बात इसलिए कहता हूं क्योंकि मुझे इसका तजुरबा है । मेरा कहने का मलतब यह हे कि भेड़ और बकरियों के इलाज की भी सुविधाएं देहात में होनी चाहिएं और खास कर उन इलाकों में जहां पर भेड और बकरियां ज्यादा पाई जाती हैं । जब वह बीमार हो जाती हैं तो भेड वाले राजस्थान से दवाई लेने के लिए जाते हैं । वे कहते हैं कि हमारे पास तो नहीं है आपको राजस्थान से मिलेगी वे खुद कहते हैं कि यहां दवाई नहीं है । राजस्थान में दवाई मिलेगी क्योंकि वे जरा इस चीज को ज्यादा जानते हैं । इसके अलावा चेयरमैन साहब मैंने पहले भी कहा था । पानीपत ऊन की मंडी है । चेयरमैन साहब आपके तो यह रास्ते में है । आप तो देखते ही होंगे । ज्यादातर गरीब तबका ऊन लेकर वहां जाता है । उनसे भी मार्कीट फीस ली जाती है जबकि ऊन के ऊपर मार्कीट फीस नहीं है । लेकिन वे ऊ न पर भी किसी न किसी ढंग से ले लेते हैं जबकि लिखते नहीं हैं । वे यह नहीं लिखते कि मार्कीट फीस ली है लेकिन जब और कुछ लेते हैं तो पता नहीं कैसे ले लेते हैं । जब चौधरी भजन

लाल जी ऐग्रीकल्चर मिनिस्टर थे तो मेरी उनसे बात हुई थी । उन्होंने कहा था कि वाकई आप ठीक कहते हैं । वहां के मार्किटींग बोर्ड के चेयरमैन से भी हमने कहा कि ये गड़बड़ करते हैं, वे कहने लगे कि भई बताओ कैसे करते हैं । दिक्कत यह है कि वे लिख कर नहीं देते । चेयरमैन साहिब मैं आपकी विसातत से यह अर्ज करना चाहता हूं कि इसकी तरफ जरा ज्यादा तवज्जुह दी जाए क्योंकि यह गरीब आदमियों का बिजनैस है । एक बार फिर मैं यह कहूंगा कि इसकी तरफ जरा ज्यादा तवज्जुह देकर आप गरीब आदमियों का ख्याल रखें ।

इसके अलावा चेयरमैन साहब थोड़ा–सा मैं इंडस्ट्री की बाबत कहना चाहता हूं जैसे बरतनों की इंडस्ट्री का काम है उसके लिए यह कंडीशन रखी हुई है कि उन्हीं को कोटा मिलेगा जिनका इतने साल का एक्सपीरिऐंस है । अब जो नए आदमी बरतनों की इंडस्ट्री का काम आरम्भ करना चाहते हैं उनको कोटा नहीं दिया जाता क्योंकि उनका ऐक्सपीरिऐंस नहीं है । अगर आप उनको कोटा देंगे तभी तो वह काम शुरू करेंगे और उनको ऐक्सपीरिऐंस होगा । मेरी प्रार्थना है कि जो लोग जस्त, पीतल, कासी का काम शुरू करना चाहते हैं उनको सरकार की ओर से कोटा मिलना चाहिए । बीस–सूत्रीय कार्यक्रम में गरीब लोगों की भलाई के लिए प्रोवीजन है तो उनकी मदद भी होनी चाहिए । इतना कहकर मैं गवर्नर साहब के अभिभाषण का समर्थन करता हूं और सदन से प्रार्थना करता हूं कि जोशी जी के प्रस्ताव को पास किया जाए ।

राव बंसी सिंह (अटेली) : चेयरमैन साहब, आज दो दिन से गवर्नर महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है और इस अभिभाषण में सारे हरियाणा की तस्वीर खींची गई है हरियाणा के अन्दर जितने उन्नति के काम हुए हैं उनको इस अभिभाषण के अन्दर बताया गया है । हुस सारी उन्नति का श्रेय मेरे से पहले वक्ताओं ने बताया है कि किसको जाता है । बेशक मैं अपोजीशन पार्टी से ताल्लुक रखता हूं लेकिन सच को सच कहना मनुष्य का धर्म है । मैं कहना चाहता हूं कि सारा श्रेय चौधरी बंसी लाल को जाता है । हम हरियाणावासी इस बात के आभारी हैं कि चौधरी बंसी लाल ने हिदुस्तान के अन्दर पहली मिसाल कायम की कि जिन्होंने हरियाणा के हरेक गांव को बिजली से क्यैक्ट किया । यह पहला उदाहरण था देश के अन्दर कि किसी प्रान्त के मुख्य मन्त्री ने अपने प्रान्त के हरेक गांव को इलैक्ट्रिफाई किया हो । दूसरा उदाहरण लिपट इरीगेशन स्कीम का है । मैं बड़ी दृढ़ता के साथ कह सकता हूं कि वह साधारण परिवार का व्यक्ति, जिसने गांव के साधारण किसान परिवार के घर में जन्म लिया हो और उस व्यक्ति ने चीफ मिनिस्टर बनने के बाद, हाथ में कुछ काम आने के बाद सबसे पहले वहां के लोगों की भलाई की बात सोची, जो कि किसी सरकार ने, जितनी भी आज तक बनी हैं, कभी नहीं सोची । चेयरमैन साहब जब अंग्रेजों की सरकार आई तभी से उस बैकवर्ड एरिया के बारे में जिसमें डिस्ट्रिक्ट भिवानी, महेन्द्रगढ़, साल्हावास और नाहड तहसील शामिल हैं, कभी किसी ने नहीं सोचा और न कोई ध्यान दिया । वह इसलिए नहीं दिया गया कि वह भूमि, जिसे

बैकवर्ड कहा जाता है और भारत सरकार ने भी जिसे बैकवर्ड कहा है, अंग्रेजों के समय में उस इलाके के राव तुलाराम ने वहां के किसानों की फौज बनाकर पहली जंगे आजादी में काम किया । हमारा सर फख्र से इस बात को सुनकर ऊंचा उठ जाता है । यह श्रेय भी उस भूमि के लोगों को जाता है जिसे बैकवर्ड एरिया के नाम से पुकारा जाता है । इसी तरह से चेयरमैन साहब, देश आज हुआ और आजाद होने के बाद देश ने तीन बड़ी लड़ाइयां लड़ी । हमें इस बात का गर्व है कि जितने भी वीर चक्र और महावीर चक्र मिले उनमें से 50 प्रतिशत चक्र उस बैकवर्ड एरिया के लोगों ने लिए हैं जिन्होंने कुर्बानियां दी हैं ।

चेयरमैन साहब, मैं चौधरी बंसी लाल के बारे में बता रहा था । इस भूमि को यह गर्व है कि हरियाणा के एग्जिसटैंसं में आने के बाद तीन चीफ मिनिस्टर आए हैं । सब से पहले पंडित भगवत दयाल थे उसके बाद राव बीरेन्द्र सिंह । डैमोक्रेसी के अन्दर कोई अपनी मनमानी करे तो वह अपनी हकूमत नहीं चला सकता । मिलजुलकर ही सरकार चलाई जा सकती है । यह बात राव बीरेन्द्र सिंह ने साबित की । यह बात अलहिदा है कि वह सरकार चल सकी या नहीं चल सकी । यहां आयाराम गयाराम का बोलबाला था ऐसा मेरे साथी कह रहे थे लेकिन चेयरमैन साहब, राव बीरेन्द्र सिंह का अपना व्यक्तित्व था अपनी पर्सनैलिटी थी । उस आदमी ने किसानों को महसूस करा दिया कि अगर जमींदार के दस मन पैदा होता है तो उसको बीस मन की कीमत दिलाई

जा सकती है, उनके लिए आया राम गया राम नहीं कहा जा सकता । उसके बाद उसी बैकवर्ड एरिया के आए चौधरी बंसी लाल, जिसके लिए अभिभाषण का पहला पेज सम्मान के लिए भरा पड़ा है । प्रत्येक मैंबर ने उनकी तारीफ करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है क्योंकि उन्होंने तारीफ के लायक काम किए हैं । यहां की जनता सर छोटूराम के बाद चौधरी बंसी लाल को मानती है । चाहे मैं अपोजीशन पार्टी को बिलौंग करता हूं लेकिन मैं यह कहे बगैर नहीं रह सकता कि चौधरी बंसी लाल ने हरियाणा में बहुत तरक्की के काम किए हैं । जो सूखे इलाके थे जहां खेती के लिए कोई साधन नहीं थे वहां पर नहर पहुंचाई है, लोग इस बात को भूल नहीं सकते । हमारे लिए यह भी गर्व की चीज है कि चौधरी बंसी लाल आज भारत के रक्षा मन्त्री होकर गए हैं । वहां के रहने वालों के लिए यह कितनी फख्र की चीज हैं कि जहां पर लोग मुश्किल से पेट भरते थे वहां का पैदा हुआ एक इनसान भारत का रक्षा मन्त्री बन जाए यह कितना गर्व का विषय है । (इस समय अध्यक्ष महोदय पदासीन हुए) । मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार से उन्होंने नई–नई बातें पैदा कीं उसी प्रकार से भारत के रक्षा मती होने के बाद वह देश के लिए कोई नई चीज पैदा करके दिखाएंगे ।

17.00 बजे

स्पीकर साहब, चौधरी बंसी लाल जी के केन्द्र में जाने के बाद हमारे जो नए मुख्य मन्त्री आए हैं हमें उनके आने की

बेहद खुशी है और हमें इस बात का भी गर्व है कि इसी हरियाणा की बैकवर्ड भूमि ने हमें तीन मुख्य मस्ती ऐसे दिए हैं जो कि एक साधारण परिवार से सम्बन्ध रखते थे और अब गुप्ता जी आए हैं उन्होंने जनतन्त्र को जगाया है, जो कि एक साधारण परिवार से आए हैं । हमें उनसे पूरी आशा है कि वह इस बात का पूरा ध्यान रखेंगे कि एक साधारण व्यक्ति को किस प्रकार से ऊपर उठाया जा सकता है । तो स्पीकर साहब, मैं इस हरियाणा की पवित्र भूमि का जिकर कर रहा हूं । इस में कोई सन्देह नहीं है कि हरियाणा ने कई चीजों को लाने में पहल की है जिनके बारे में हमारे बहुत से साथी बता चुके हैं । यह हरियाणा की वह भूमि है जो कि क्वालिटीज के लीडर पैदा करती है, ऐसे–ऐसे नौ– जवान पैदा किए हैं, इस हरियाणा की भूमि ने, जिन्होंने लड़ाइयों के अन्दर वीर चक्रय परमवीर चक्र प्राप्त किए हैं ।

स्पीकर साहब, मैं कुछ बातों की तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं 1 हरियाणा. प्रदेश एक कृषि प्रधान प्रदेश है और उसके अन्दर महेन्द्रगढ़ जिला भी एक कृषि प्रधान जिला है, वहां की भूमि दूसरे इलाकों की निस्बत रेतीली है, वहां पर पानी की अधिक आवश्यकता है, ठीक है इसके लिए सरकार ने बिजली दी है, टयूबवैल के कनैक्शनज दिए हैं, फिर भी वह हमारे हिस्से की जो बिजली दी गई है, वह पूरी नहीं जा रही है । मैं सरकार के नोटिस में यह लाना चाहता हूं कि ऐसे इलाकों की तरफ सरकार को पूरा ध्यान देना चाहिए । जहां के लोग अधिक

उत्पादन करते हैं, जहां के लोगों ने वीर पैदा किए हैं । स्पीकर साहब, पिछली बार भी मैंने इस सिलसिले में जिकर किया था, लेकिन बड़े दुख के साथ मुझे कहना पड़ता है कि यह बात अभी तक भी पूरी नहीं की गई । कहते हैं कि फण्डज की कमी है, चलो कभी तो हमारा नम्बर आएगा ही । कहने की बात तो यह है कि आज 27–28 साल हो गए हैं, हम लोगों को आजाद हुए लेकिन अभी भी इन इलाकों में लोगों को पूरी सहूलियतें नहीं दी जा रही हैं । खारी पानी पीने के लिए मिल रहा है । अटेली हल्के में, मोरोली, जवाहर नगर इत्यादि ऐसे गांव हैं, जहां आज भी पीने का पानी कडुवा मिल रहा है । मैं आपके द्वारा सरकार से निवदेन करना चाहता हूं कि उन इलाकों में, जिन्होंने युद्धों में कुर्बानियां दी हैं, जहां की बहनें विधवाएं हैं, कम से कम वहां पर पीने का पानी तो शुद्ध सप्लाई किया जाना चहिए । मुझे आशा है कि सरकार इस ओर पूरा ध्यान देगी, नहीं तो वहां की जनता यह समझेगी कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है ।

स्पीकर साहब, जहां तक कृषि का सम्बन्ध है, खेतीबाड़ी के लिए मेहनत करने वाले लोग बहुत तगड़े हैं, लेकिन उनके पास कोई साधन नहीं है, फर्टीलाइजर के भाव मंहगे हैं । यह तो ठीक है, सब भाई कहते हैं कि हरियाणा ने कृषि के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है । इस बात को मैं भी मानता हूं लेकिन कुछेक इलाकों में पोजीशन दूसरी है, अगर कहीं खाद की जरूरत है, तो वहां पर टाइम पर खाद नहीं मिलती और टाइम पर खाद न मिलने

से यूरिया इस्तेमाल करना पड़ता है, जो कि पानी से नीचे चला जाता है तो इस प्रकार सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए और किसानों को सही टाईम पर सब प्रकार की वस्तुएं मुहैया करनी चाहिएं । 20 सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम के अनुसार यह करना चाहिए कि किस तरीके से गरीब लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारी जा सकती है और जिन इलाकों में किसी चीज की आवश्यकता है उस को किस तरीके से मीट आउट किया जा सकता है? सरकार को इस 20 सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीब तबके के लोगों को ऊपर उठाना चाहिए ।

स्पीकर साहब, मुझे बार–बार यह कहना पड़ता है, पिछले सैशन में भी मैंने जिकर किया था कि दो–दो साल से जिन लोगों ने टैस्ट रिपोर्टस । दे रखीं हैं, लैण्ड मार्गेज बैंक से कर्जा भी ले रखा है, मोटरें फिट हुई पड़ी हैं, उनको अभी तक बिजली के कनैक्शनज नहीं मिल रहे हैं । क्या यही उन इलाकों के लोगों की कुर्बानियों का श्रेय उनको दिया जा रहा है ताकि वे लोग कर्जों में फंसे रहें और अपनी किश्तें अदा भी न कर पाए । मैं आपके द्वारा सरकार के नोटिस में यह लाना चाहता हूं कि वहां के लोग यह महसूस करते हैं, कि उनके साथ यह बड़ा भारी अन्याय हो रहा है ।

इसके बाद मैं को–आप्रेटिव डिपार्टमैंट की बात करना चाहता हूं । मुझे खुशी है इस बात की कि जब से यह डिपार्टमैंट मुरव्य मस्ती महोदय के पास आया है तब से इस विभाग ने बड़ी

उन्नति की है, इसमें कोई शक वाली बात नहीं है । कुछ कमियां थीं, वह दूर होती जा रही हैं और मुझे उम्मीद है कि आगे भी इसी तरह कमियां दूर होती रहेंगी लेकिन इसके साथ–साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार ने हर जगह पर एडमिनिस्ट्रेटर लगा रखे हैं, हर जगहों पर बैकों को अपने कब्जा में ले रखा है, यह बात ठीक नहीं है । इसके अन्दर लोगों के वे नुमाइंदे होने चाहिए जो कि इन सोसायटीज के मैंबर हैं । अब जो सरकार ने होल टाईम सैक्रेटरी लगा रखे हैं, यह बात बिल्कुल ठीक है क्योंकि लोगों को वहीं अपनी जगहों पर ही पैसा मिल जाया करेगा । पटवार सर्कल को मद्देनजर रखते हुए कुछ सोसायटीज को भी डिफाल्टर्ज के साथ जोड़ दिया गया है, यह बात ठीक नहीं है, ऐसी कमियों की तरफ भी विभाग ध्यान दे और उनको दूर करने की कोशिश करे ।

स्पीकर साहब, इससे आगे चलकर मैं फैमिली प्लांनिग के बारे में भी कुछ अर्ज करना चाहता हू । हम यह फख्र के साथ कह सकते हैं कि इस काम में हरियाणा सारे देश के अन्दर फर्स्ट आया है और इसका सारा श्रेय स्वास्थ्य मन्त्री महोदय को जाता है कि उन्होंने बड़ी दिलचस्पी से इस काम को किया है – (तालियां) –लेकिन मैं इस बारे में सुझाव देना चाहता हु कि हम जिस ढंग से फर्स्ट आए हैं, वह यह है कि टीचर्ज और बी.डी.ओज. और दूसरे कर्मचारियों को इस काम में लगाया गया, और इस काम के लिए उन्हें तीन– तीन सौ व चार–चार सौ रुपया दिया गया,

जिससे उन कर्मचारियों ने फैमिली प्लांनिग का प्रचार किया । तो मेरी एजुकेशन मिनिस्टर साहब से यह प्रार्थना है कि टीचर्ज वगैरह को इस काम में न लगाया जाए और इसके लिए कोई और तरीका अपनाया जाए क्योंकि पहले ही हरियाणा में पढ़ाई का यह हाल है कि टीचर्ज अपने पैसों के लालच के कारण पढ़ाई की तरफ कम ध्यान देते हैं जिसके कारण रिजल्ट माइनस रहता है ।

स्पीकर साहब, मेरा एक सुझाव है कि इतना सरकार अवश्य कर दे कि एक लड़के को 25 साल की आयु से पहले शादी करने का अधिकार न हो और लड़की को 18 साल से कम आयु में शादी करने का अधिकार न हो तभी इस पर कुछ काबू भी पाया जा सकता है ।

इससे कुछ हमारा सुधार होगा, आत्मिक बल मिलेगा । आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए, हम स्कूलों के अन्दर जब तक यह शिक्षा नहीं देंगे तब तक फैमिली प्लानिंग के ऊपर कन्ट्रोल नहीं कर सकेंगे । यही पैसा जो हम इस पर खर्च कर रहे हैं अगर किसी और काम पर खर्च किया जाए तो हमारी बहुत. ज्यादा डिवैल्पमैंट होगी । जहां तक बीकर सैक्शन के बारे में बीस सूत्रीय प्रोग्राम का ताल्लुक है, यह वास्तविकता है कि हमारी प्रधान नबी जी आज देश के गरीबों को ऊपर उठाना चाहती हैं । उन्होंने 4० प्वांयट या 30 प्यांयट प्रोग्राम क्यों नहीं बनाया क्योंकि बीस प्वांयट का मतलब यह है कि उन्होंने ये प्वांयट ही ऐसे से चुने हैं कि इन पर अमल करने से गरीबों का स्तर ऊंचा हो सकता है । तो वह

वीकर सैक्शन जिसको कानून के द्वारा हम ऋण–मुक्त करना चाहते हैं, यह ठीक है उनको फार दी टाईम बीईंग रिलीफ मिला है लेकिन उसके साथ–साथ एक बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि वे जिन लोगों से पहले थोड़ा बहुत कर्ज लेते थे, अब उन लोगों का इन पर विश्वास उठ गया है, जिसकी वजह से उनको तंगी होती है । इसलिए इन लोगों को पैसा देने के लिए कुछ न कुछ रास्ता निकाला जाए ताकि उनकी जो रोजाना की जरूरतें हैं वे पूरी हो सकें। इसके साथ साथ जहां तक हैंड लूम का काम हम शुरू करना चाहते हैं वह तब तक सफल नहीं होगा जब तक कि हमारे इंस्पैक्टर्ज घर–घर में जाकर लोगों को न समझाएं कि इस स्कीम के तहत आप

इतना लोन ले सकते हैं । अगर ऐसे कदम उठाए जाएंगे तभी हमारी वीकर सैक्शन ऊपर उठ सकती है । स्पीकर साहब, अन्त में मैं आपका ध्यान एक बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि हरियाणा ने हमेशा मिल्टरी के अन्दर पहल की और हमारी सरकार ने विधवाओं के लिए जो सैन्टर छछरौली के अन्दर खोला है इसको खोलने से पहले यह मद्देनजर रखना चाहिए था कि हरियाणा के अन्दर किस इलाके के लोगों ने ज्यादा कुर्बानियां दीं और किस इलाके की माताएं और बहनें ज्यादा विधवा हुई बैठी हैं ताकि वे उससे फायदा उठा सकती । जो सैन्टर छछरौली में खोला गया है मुझे खुशी है कि वह वहां बनाया गया लेकिन आज भी आप वहां पर देखें कि जो एकोमोडेशन वहां पर बनाई गई है

उसमें से बहुत सी खाली पड़ी है क्योंकि वह दूर बनाया गया है । जो इस तरफ का इलाका है, महेन्द्रगढ़ और भिवानी का इस इलाके ने ज्यादा कुर्बानियां दी हैं इसलिए अगररू यह सैन्टर बीच में हो जाता तो बहुत अच्छा रहता और सारी विधवा माताएं और बहिनें इससे फायदा उठातीं । सरकार से मेरी प्रार्थना है कि यदि वह इस सैन्टर को इस जगह से उठाकर किसी दूसरी जगह बदल दें तो इसका बहुत फायदा होगा । अन्त में मैं गवर्नर साहब के एड्रैस की ताईद करता हूं और मैं यह महसूस करता हूं कि हमारे मुख्य मन्त्री जी के नेतृत्व के अन्दर हरियाणा, जितनी हम उम्मीद करते हैं, उससे भी अधिक तरक्की करेगा ।

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल के अभिभाषण पर दो दिन से चर्चा चल रही है । मेरे अनेक साथियों ने अपने अपने विचार बड़े विस्तार के साथ इस अभिभाषण पर व्यक्त किए । कुछ मेरे साथियों ने बड़े रचनात्मक सुझाव भी दिए हैं । जो ऐसे सुझाव आए हैं उन सुझावों पर हम पूरी तरह से विचार करेंगे– (तालियां) –– कुछ मेरे साथी ऐसे भी बोले हैं जिन्होंने कई प्रकार की आलोचना और नुक्ताचीनी की है । तो अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि नुक्ताचीनी लोकतन्त्र का एक विशेष अंग हैं । जब तक लोकतन्त्र में नुक्ताचीनी नहीं होती, आलोचना नहीं होती तब तक लोकतन्त्र सार्थक सिद्ध नहीं होता, वह बेमायने बन जाता है । तो जो भी नुक्ताचीनी यहां हुई है मैं उसका स्वागत करता हूं, परन्तु यह अवश्य चाहता हूं कि

नुक्ताचीनी करते समय दृष्टिकोण रचनात्मक होना चाहिए, हैल्दी क्रिटिसिजम होना चाहिए । तो उसका फायदा प्रदेश को भी होता है, जनता को भी होता है और देश को भी होता है । मैं एक बात का समर्थक हूं कि कोई भी व्यक्ति जिसके कन्धों पर जब बड़ी भारी जिम्मेदारी आ जाती है तो चापलूस टाइप लोग उसके चारों तरफ इकट्ठे हो जाते हैं और वह मुंह सोभती बात उसके सामने करते हैं जिससे कि उसे अपनी बुराई, कमियों और त्रुटियों का पता नहीं चलता और उनमें वह सुधार नहीं कर पाता । कबीर जी की एक कहावत है ''निन्दणा निचरे राखिये'' मैं तो उसका कायल हूं । अगर किसी व्यक्ति के नजदीक आलोचक रहते हैं तो उसका बड़ा भारी लाभ होता है । (तालियां) तो यहां जो राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बहस हुई मैं समझता हूं कि उस बहस का स्तर अच्छा था और अच्छा ही रहना चाहिए । हम जितने भी व्यक्ति यहां आते हैं, जनता द्वारा निर्वाचित होकर आते हैं लोगों को हमारे प्रति बड़ी आशाएं हैं । हम उनके प्रति वचन बद्ध भी हैं हम उनसे कुछ वायदे कर के आते हैं उन सबको हमने पूरा भी करना है और वे पूरे तभी कर सकते हैं जब हम मिलजुल कर एक ऐसा दृष्टिकोण, एक ऐसा नजरिया बनायें जो देश और प्रदेश के हित में हो । राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में आरम्भ में एक ऐसी चर्चा की है कि उसका जिक्र करते हुए हम सबका गला भर आता है । आज हम इस सदन में बैठे हैं, यह वही सदन है, वही सब मैंबरान हैं, अध्यक्ष महोदय, आप भी उसी प्रकार अपनी गद्दी पर विराजमान हैं परन्तु एक कमी अगर कोई अखरती है तो

वह यही कि इस स्थान पर चौधरी बंसी लाल जी नहीं हें । चौधरी बंसी लाल जी ने जितना मजबूत नेतृत्व हरियाणा प्रदेश को प्रदान किया वह इतिहास में एक मिसाल है । –(तालियां) –अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं और मेरे सभी साथी भी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि हरियाणा प्रदेश एक बहुत पिछड़ा हुआ इलाका रहा है और अलग प्रदेश के रूप में गठन होने से पहले यह पक्षपातपूर्ण राजनीति का भी शिकार रहा है और उसका नतीजा था कि यह इलाका बड़ा पिछड़ा हुआ था । अनेक प्रकार की समस्याएं, अनेक प्रकार के अभाव, अनेक प्रकार की कठिनाइयां इस प्रदेश में मौजूद थीं ।

लेकिन चौधरी बंसी लाल जी ने जब अपने हाथ में हरियाणा प्रदेश की बागडोर ली तो उन्होंने सही तरीके से जो हमारी दुखती हुई रग थी उसपर अपनी अंगुली रखी और उन्हेंने समझा कि इस प्रदेश की मूल समस्याएं क्या हैं और वह इसलिए सम्भव हुआ कि वह देहात में पैदा हुए एक किसान की झोपड़ी में पैदा हुए और वे देहात में भी ऐसे में पैदा हुए जो बहुत कठिनाइयों और मुश्किलात से भरा हुआ इलाका है । उन्होंने वह तमाम कठिनाइयां और मुश्किलात खुद सहन की थीं और उनको सहन करतेहुए अपने भाईयों को देखा था । इसलिए वह जानते थे कि किस प्रकार की तकलीफें हमारे पिछड़े हुए इलाकों के लोगों को उठानी पड़ती हैं और उनका सामना करना पड़ता है । इस बात को समझकर उन्होंने एक योजनाबद्ध विकास का कार्यक्रम

प्रदेश के लिए बनाया और उसे बनाते वक्त इस बात को भी समझा कि हिन्दुस्तान की जो रीढ़ की हड्डी है और हिन्दुस्तान की जो अर्थ व्यवस्था की धुरी है वह किसान है । इसलिए जब तक किसान की हालत नहीं सुधारी जाएगी और जब तक किसान को पूरी सुविधाएं नहीं दी जाएंगीं तब तक इस हरियाणा प्रदेश और देश की तरक्की हो नहीं सकती । इस बात को पूरी तरह समझकर उन्होंने किसान को हर प्रकार की सुविधाएं देने का कार्यक्रम तैयार किया । अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि जब हिन्दुस्तान का किसान मुस्कराता है, तो सारा देश हंसता है लेकिन जब हिन्दुस्तान के किसान की आंख में आंसू होता है तो सारा देश ही रोता है । मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे देश की जो अर्थ व्यवस्था चलती है वह किसान की खेती पर चलती है उसकी पैदावार पर चलती है इसलिए उस पैदावार को बढाने के लिए चौधरी बंसी लाल जी ने एक योजना तैयार की एक प्रोग्राम बनाया और उस प्रोग्राम को एक. रिकार्ड टाईम के अन्दर सफल बनाया और सफल बनाकर दिखाया, इस सारे देश को गतिशील प्रदेश बनाया और तमाम हिन्दुस्तान में हरियाणा प्रदेश की ऐसी शोहरत बना दी कि प्रगति का दूसरा नाम हरियाणा बन गया । (थम्पिंग) जब कहीं विकास की बात चलती है तो हरियाणा का नाम लेकर इसकी मिसाल दी जाती है । अभी कुछ दिन पहले, अध्यक्ष महोदय, मेरे मुख्य मन्त्री बनने के बाद आन्ध्र प्रदेश के कृषि मन्त्री जी मुझे मिलने के लिए आए और हमारे कृषि मती कर्नल महा सिह जी उनके साथ थे । वे मुझ से बातें करने लगे तो उन्होंने मुझे एक

बात बताई कि वह हरियाणा प्रदेश में इसलिए आए हैं कि जब वह देहली में प्रधान मली जी से मिलने गए और उनको यह बताया कि वह सारे देश में यह देखने के लिए निकले हैं कि कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए' अच्छे से अच्छे विकास के काम कहां हुए हैं तो प्रधान मन्त्री जी ने उनको यह आदेश दिया कि अगर आपने विकास के काम, हरित क्रान्ति लाने के काम और उनकी जीती जागती और मुंह बोलती तस्वीर देखनी है तो आप हरियाणा प्रदेश में जाकर देखो । – (थम्पिंग) – तो अध्यक्ष महोदय इससे बड़ी प्रशंसा और सराहना इस हरियाणा प्रदेश की और उसके लीडर की और– उसके नेतृत्व की और कोई हो नहीं सकती । अध्यक्ष महोदय, गवर्नर साहब ने अपने एड्रैस में यह बताया कि चौधरी बंसी लाल जी का नाम हरियाणा के इतिहास में अमिट रहेगा, अमर रहेगा । इसमें कोई सन्देह की बात नहीं । इस अभिभाषण पर जिन मेरे साथियों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, उन सभी ने इस बात को कहा है इस बात को स्वीकार किया है और मुझे खुशी है कि विपक्षी दल के भी कुछ भाईयों ने यहां जो बोले हैं, इस बात की सराहना की है और यह बात सराहना योग्य है । मैं एक बात कहता हूं कि चौधरी बंसी लाल ने हरियाणा के लिए इतना कुछ किया है कि आने वाली सात पीढ़ियां उनके नाम को नहीं भूल सकतीं । – (थम्पिंग) –अध्यक्ष महोदय, मैं उन इलाकों से पूरी तरह से परिचित हूं और केवल परिचित ही नहीं मैंने उन इलाकों की एक एक इंच भूमि को पैदल चल कर अपने पैरों से नापा है । वह ऐसी कठिन भूमि थी कि वहां पीने के लिए एक बूंद पानी

उपलब्ध नहीं होता था लोग छोटे–छोटे कुण्ड बनाकर रखते थे और जब कभी बरसात होती थी तो पानी की एक–एक बूंद उनमें जमा करके रखते थे और उन कुण्डों को ताले लगाकर रखते थे । जब कभी दौलता साहब जैसे लोग और जिला रोहतक का कोई मेहमान वहां आ जाता था, अव्वल तो वहां कोई जाता ही नहीं था लेकिन अगर आ जाता था तो उसको दूध देना तो आसान था लेकिन मीठा पानी पिलाना बहुत मुश्किल काम था । आज आप अगर उन इलाकों में जाएं तो गांव–गांव में मीठे पीने के पानी के नलके चलते हैं..

श्री अध्यक्ष : अब तो दौलता साहब जाने के लिए तैयार हैं। (हंसी)

श्री के0 एल0 पोसवाल : अब मुश्किल यह है कि उनको बुलावे कौन? (हंसी)

श्री बनारसी दास गुप्त : इस बारे में भी मैं आपको एक मजाक की बात बताना चाहता हूं और वह यह कि जब हमारे यहां जुई कैनाल पहले बन कर तैयार हुई उसमें पानी चला और उसका उद्घाटन हुआ तो हमारे कुछ मैंबर पार्लियामैंट भी उस नहर को देखने के लिए वहां पर गये । उनके साथ चौधरी सुलतान सिंह और हमारे चौधरी नेकी राम जी जो राज्य सभा के मैंबर थे और अब रिटायर हो गए हैं भी उनके साथ थे । तो उन रेगिस्तानी टिब्बों में पानी चलते हुए देखकर चौधरी सुलतान सिंह ने मजाक

में कहा कि इस पानी के चलने से इस इलाके को तो फायदा हो गया लेकिन अगर नुकसान हुआ है तो हम जिला रोहतक वालों का हुआ है, और वह इस तरह हुआ है कि पहले हमारा कोई अन्धा लंगड़ा लूला लड़का जो कहीं, ब्याहा नहीं जाता था उसको यहां पर ब्याह देते थे । इस पर चौधरी नेकी राम जी ने मजाक में ही जवाब दिया कि चौधरी साहब अब पासा पलट गया है पहले आप हमारे इलाके में लड़का ब्याहते थे अब लड़की बयाहने लग जाओ (हंसी) तो इस प्रकार का मजाक वहां पर हुआ था । परन्तु यह मजाक नहीं था यह सच्चाई है । अब उस इलाके में नवजीवन का संचार हुआ है । (विध्न) ––मैंने अपनी आंखों से देखा है, उन तमाम हालात को । हमारे कुछ साथी हैं, जो कई बार चर्चा करते हैं, कुछ दुख भी मनाते हैं कि चौधरी बंसी लाल जी ने ज्यादा पैसा भिवानी तोशाम और महेन्द्रगढ़ के इलाकों पर खर्च किया है, लेकिन मैं उन भाईयों से प्रार्थना करना चहाता हूं कि उनको मन में दुखी होने की बजाये खुशी होनी चाहिए । हुस प्रदेश का एक हिस्सा ऐसा था, जहां पर इन्सान की इन्सान जैसी जिन्दगी नहीं थी आए साल कहत पड़ता था, घास का एक तिनका भी पैदा नहीं होता था, और मैंने अपनी आंखों से देखा है कि खेतों में और जंगलों में मरे हुए पशुओं के ऊंटों की हड्डियों के ढेर लग जाते थे । गांव के गांव रोजगार की तलाश में उजड जाते थे । ऐसी हालत उन इलाकों में होती थी । जो भाई इस बात की शिकायत करते हैं उनको बतलाना चाहता हूं कि उन लोगों पर इतना पैसा खर्च करने के बावजूद भी अगले दस साल तक वे विकसित

इलाकों के बराबर नहीं आ सकते, इन सब विकास के कामों के होने के बावजूद भी । यह हमारे प्रदेश का एक ऐसा कमजोर, ऐसा पिछड़ा हुआ इलाका था, जहां इस प्रकार के काम करने निहायत जरूरी थे और मैं यह बात भी बतलाना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि उन्होंने केवल भिवानी, तोषाम, लोहारू में पैसा खर्च किया हो, ऐसी बात नहीं है । अध्यक्ष महोदय, जब मैं विधान सभा का स्पीकर था, मुझे मोरनी जाने का इत्तफाक हुआ । वहां एक हाई स्कूल हैं । हाई स्कूल में लोग इकट्ठे हो गए और बात करने लगे । मैं बिल्कुल ठीक बात कहता हूं अध्यक्ष महोदय, वहां के सरपंच ने बतलाया कि हमारी पीढ़ियां भी बंसी लाल के अहसान से उऋण नहीं हो सकतीं, जिन्होंने इतनी सुविधाएं इस पहाड़ी इलाके में प्रदान की हैं । जिस इलाके की मैं पहले बात करता था, उसमें तो ऊंटो पर पानी लाया करते थे, लेकिन मोरनी हिल्ज पर तो कई हजार फुट नीचे से औरतें सर पर रखकर पानी लाया करती थीं, लेकिन अब मैंने देखा है वहां पर नलके चल रहे हैं । अम्बाले के भाव पर, उनको चीजें मिलती हैं । मेरे कहने का मतलब यह है कि चौधरी बंसी लाल ने पैसा वहीं खर्च किया है जो इलाके बहुत पिछड़े हुए थे या जिस इलाके के लोग बहुत दुखी थे । जैसा कि मैं अभी आपके सामने जिक्र कर रहा था कि ऐसे इलाके में जो इस प्रकार के पिछड़े हुए थे, जो सूखा–ग्रस्त इलाके थे, जो कहतजदा इलाके थे, जहां पीने का पानी नहीं मिलता था, जहां आने जाने के रास्ते नहीं थे, हमने और आपने देखा होगा कि जब हम लोहारू के इलाके में महेन्द्रगढ़ और नारनौल के इलाके में एक

गांव से दूसरे गांव जाते थे, तो आंधीका एक रेला आता था और यह भी नजर नहीं आता था कि रास्ता कहां है । इन गांवोंमें अब सड़कें गई हैं, बिजली गई है, नहरी पानी गया है, पीने का पानी गया है और इसप्रकार नया जीवन उन लोगों को मिला है और वे लोग यह महसूस करने लगे हैं कि हम? भी इन्सान हैं, हम भी इन्सानों की तरह जीवन बिता सकते हैं । अभी उनकी गरीबी दूर नहींहुई है, पूरी तरह खुशहाली नहीं आई है, लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने कुछ आशाएं । बांधी हुई हैं, कहत और अकाल से पीछा छूटा है । इन कार्यों को ध्यान में रखते हुए चौधरी बंसी लाल जी की जिन शब्दों में सराहना की जाए, जिस प्रकार से भी उन के गुणों कावर्णन किया जाए, वह कम है, कम से कम मेरे पास तो ऐसे शब्द नहीं कि जिन शब्दों मेंउनके किए हुए कामों की सराहना और वर्णन कर सकूं । इसलिए आज हम उनकी कमीको पूरी तरह महसूस करते हैं लेकिन हमें एक बात का बड़ा गर्व है, वह है चौधरी बंसीलाल जी की कार्य–क्षमता, उनकी योग्यता, उनकी राजनैतिक सूझबूझ, से प्रभावित होकर,हमारी प्रधानमन्त्री जी ने इस बात को महसूस किया कि ऐसे व्यक्ति के लिए हरियाणाप्रदेश एक बहुत छोटी जगह है, यह बहुत सीमित दायरा है, ऐसे व्यक्ति के गुणों का लाभतमाम हिन्दुस्तान को पहुंचे, तमाम देश को पहुंचे, इस बात को सामने रखते हुए उन्होंने बंसीलाल जी को अपने मन्त्रिमण्डल में शामिल किया । मन्त्रिमण्डल में शामिल करने के पश्चात् जब उन के कंधों पर सारे हिन्दुस्तान

की रक्षा का भार सौंपा गया तो एक–एक हरियाणवी अपने आपको गौरवान्वित समझता है, फख्र के साथ सर उठाकर के चलता है ।

इसलिए आप सब भाई जानते हैं कि तमाम हिन्दुस्तान को उन की सेवाओं का लाभ पहुंचेगा, । इसमें सन्देह की बात नहीं है । हां, अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि इन्सान बड़ा स्वार्थीहोता है, सह अपने स्वार्थ की बात सोचता है, उसके देखने का दायरा सीमित होता है,विशाल. नहीं होता । हम अपनी कमी जब देखते हैं, तो दुख होता है और चौधरी बैंसी लालका अभाव अखरता है लेकिन इसका लाभ सारे देश को हो तो बहुत ऊंची बात है । मैं प्रधान मन्त्री जी को हृदय से बधाई देता हूं और तमाम हरियाणा की तरफ से उन के प्रतिआभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने हरियाणा के एक सपूत को इस लायक समझा कि जबतमाम देश की सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडराए हुए हैं, देश के अन्दर के हालात चिन्ता–जनक हैं, कुछ बाहरी एजेंसियां ऐसी हैं, जिन्होंने हमारे पड़ौसी देश के अन्दर बड़े भारीदर्दनाक काम किए हैं। तो इन हालात के अन्दर देश की रक्षा का भार, देश की सीमाओंकी रक्षा का भार, हरियाणा के एक सपूत के सुपुर्द किया है, इस बात की हमें बड़ी भारीखुशी है और इस बात का हम प्रधान मन्त्री जी का धन्यवाद करते हैं । आप जानते हैं बंसीलाल जी के वहां जाने के पश्चात् मुख्य मन्त्री का स्थान रिक्त हुआ और उस खाली स्थानपर मुझे बैठा दिया गया । इस स्थान पर बैठने के पश्चात् मैंने एक ही बात कही है कि चौधरीबंसी लाल के दिमाग में इस

हरियाणा प्रदेश का एक नक्शा था, उन्होंने अपने दिमाग मैंएक तस्वीर बना रखी थी और उस तस्वीर में, उस नक्शे में रंग भरने में, उन्होंने अपनेकार्य–काल में कोई कसर उठा नहीं रखी। लेकिन उसमें जो कमी बाकी रह गई है, उस कमी को पूरा करना मेरे मुख्य मन्त्री पद के काल का उद्देश्य है और मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि उस कमी को पूरा करूं, जो काम अधूरा छोड़ गए थे, उस को उसी रास्ते पर चल कर पूरा करूं! मजबूती के साथ विकास की जो गति थी, उसको कायम रखते हुए हम हार्रेयाणा प्रदेश को आगे ले जाएं, और हम ले पाएंगे । मैं यह बात खुद के भरोसे पर नही 'ढ़हता, बल्कि जितने हमारे भाई, मेरे कांग्रेस दल के साथी, मेरे मन्त्रिमण्डल के साथी हैं, उन सबका प्यार, उन सबका सहयोग मुझे मिलेगा और इसके साथ मैं आशा रखता हूं कि जो विपक्षी दल के भाई हैं, जो मेरे सामने बैठते हैं, उन का पूरा सहयोग भी मुझे प्रदेश के विकास के कामों में मिलेगा, ऐसी मुझे पूरी आशा है । आप लोगों के और जनता के विश्वास के भरोसे पर इस बोझ को उठाने की हिम्मत मैं कर पाया हूं, लेकिन अगर यहां किसी और तरह की बातें चलेंय कल मुझे पता चला कि हमारे एक भाई जात–बिरादरी की बात कर रहे थे, कोई ऐग्रीकल्चरिस्ट और नान–ऐग्रीकल्चरिस्ट की बात करते थे । मैं एक बात बिल्कुल साफ कर देना चाहता हूं यह तो कुदरत की बात है, मैं किस मां के पेट से पैदा हो गया, इसमें मेरा दोष नहीं है, यह भगवान की देन है, कोई कहीं भी किसी भी औरत से पैदा हो सकता है और वह औरत जाट के घर हो सकती है, राजपूत के

घर हो सकती है, ब्राह्मण, हरिजन के घर हो सकती है । तो जन्म लेने में या मेरी माता के जन्म देने में तो किसी का दोष नहीं है । लेकिन जहां तक मेरी जात–बिरादरी का सवाल है, मैं एक ही बात का ऐलान करना चाहता हूं कि मैं सर्वहारा वर्ग का व्यक्ति हूं । मेरी बिरादरी अगर कोई है, तो सारे हरियाणा प्रदेश की जनता मेरी बिरादरी है । मेरा अगर. कोई वर्ग है, तो वह 90 प्रतिशत लोग हैं, जो इस देश के अन्दर अभाव–ग्रस्त हैं, दुखी और कठिनाई का सामना कर रहे हैं । दस फीसदी मैं उन लोगों को छोड़ देता हूं, जिसमें कई तरह के आदमी सम्मिलित हैं, जिनके स्वार्थ निहित हैं, वैस्टिड इंट्रैस्ट हैं, जो हेराफेरी की बात करते हैं, बड़े– बड़े पूंजीपति हैं, बड़े–बड़े मालदार हैं, कुछ ऐंटी सोशल काम करने वाले हैं, समाज विरोधी तत्व हें । कुछ ऐसे दस फीसदी लोगों को छोड्कर 90 फीसदी लोग जो इस देश के हैं, मैं उस बिरादरी से ताल्लुक रखने वाला हूं और किसी वर्ग विशेष एवं जाति से ताल्लुक रखने वाला नहीं हूं । मैं यह बात साफ कर देना चाहता हूं । पिछले दिनों मैं कई जगह गया । बड़े– बडे सम्मेलन हुए, बड़ी–बड़ी सभाएं हुयी । उन सब में मैंने एक ही बात की घोषणा की कि किसी भाई को भी, चाहे वह मुझे अपने कितना भी नजदीक समझता हो, खुश होने की जरूरत नहीं है कि आज ऐसा मुख्य मन्त्री बन गया है, जो हमारी बिरादरी का है, हमारे गोत का है, हमारे पड़ौस का है, हमारा रिश्तेदार है या हमारा मिल है । क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति मेरे नजदीक लगकर कोई नाजायज फायदा उठा नहीं सकता । मैं कभी इजाजत नहीं दूंगा कि कोई

अनुचित लाभ हरियाणा प्रदेश में उठाए । वैसे तो पिछले साढ़े सात साल के अर्से में चौधरी बंसी लाल के शासनकाल में भी हरियाणा प्रदेश में जात बिरादरी की जो एक बड़ी भारी लानत थी, वह बहुत कम हुई है । आप सब देखते थे कि अगर कोई किसी बिरादरी का, जात का या गोत का नाम लेकर उनसे बात करना चाहता था, तो उसे वे अपने कमरे में नहीं घुसने देते थे । अगर कोई फिर भी जिक्र कर ही देता था, तो उसे वे पसन्द नहीं करते थे । मुझे याद है एक घटना । मुख्य मन्त्री बनने के कुछ दिन बाद जब वे कुरुक्षेत्र गए और वहां रैस्ट हाउस के लान में जब वे घूम रहे थे थे तो एक भाई यह समझ कर कि हमारा एक जाट भाई मुख्य मन्त्री बना है उनके नजदीक लग गए और बात करते करते जात बिरादरी का जिक्र कर दिया । वह दिन और आज का दिन, चौधरी बंसी लाल उस व्यक्ति को आज तक माफ नहीं कर पाए और उसको उन्होंने कभी पसन्द नहीं किया । तो इससे यह साबित होता है कि पिछले साढ़े सात साल के अर्से में हरियाणा प्रदेश से यह जात बिरादरी और गोत की बात काफी हद तक कमीं हुई 'है और मैं समझता हूं कि यह कम होनी चाहिए । कोई भी भाई चाहे वह किसी भी दल से सम्बन्ध रखता है या चाहे निर्दलीय है, अगर वह राजनीतिक क्षेत्र में काम करता है, तो मैं उससे प्रार्थना करूंगा कि कम से कम किसी बात का हवाला देते हुए भी वह जात–बिरादरी की बात न करे । अगर वह ऐसा करेगा, तो वह हमारे प्रदेश की सबसे बड़ी भारी कुसेवा करेगा । मैं यह बात भी जानता हूं कि हमारे देहात में बसने वाले और शहर में बसने वाले

जो व्यक्ति हैं, उनके दिमाग में ऐसी कोई फीलिंग नहीं है, कोई भेदभाव नहीं है । ह कुछ राजनीतिक व्यक्ति हैं, जो अपने राजनीतिक स्वार्थ साधन करने के लिए जात– बिरादरी और गोत आदि का इस्तेमाल करते हैं । इस प्रकार की जो भाई बात करते हैं, वह बड़ा गलत काम करते हैं । मुझे खुशी है कि हमारे कांग्रेस दल में कभी भी जात– बिरादरी को महत्व नहीं दिया गया और न दिया जाएगा । मैं तो एक बात मानकर चलता हूं कि यह लोकतन्त्र है और इस लोकतन्त्र के अन्दर जैसा हमारा कांस्टीच्यूशन है जैसा हमारा संविधान है, इसमें दलीय राज होता है, पार्टी शासन होता है । तो इस पार्टी के शासन के अन्दर मैं एक बात मान कर चलता हूं कि आज बनारसी दास मुख्य मन्त्री नहीं है । हमारे कांग्रेस दल का एक–एक व्यक्ति, चाहे वह पीछे वाली सीट पर ही क्यों न बैठता हो, वह भी मुख्य मन्त्री है । कांग्रेस दल का शासन है । कांग्रेस दल का एक–एक व्यक्ति मुख्य मन्त्री है । तो हरेक कांग्रेस पार्टी का मैंबर अपने आपको मुख्य मन्त्री समझेय मैं ऐसा मानकर चलता हूं – (तालियां) – ।

चौधरी पीर चन्द : बीस सूत्रीय कार्यक्रम का तो हम भी समर्थन करते हैं ।

श्री बनारसी दास गुप्त : मैंने तो पहले ही कहाहै कि मुझे आपका भी सहयोग चाहिए । अध्यक्ष महोदय, हरियाणा प्रदेश में बड़े विकास के काम हुए हैं बड़ी तरक्की के काम हुए हैं । देश में भी आजादी के बाद कोई कम विकास नहीं हुआ । मैं आंकड़ों

मेंनहीं जाना चाहता । फैक्ट्स ऐंड फिर्ग्ज की बातें तो आप बहुत सुन चुके हैं । उन्हें दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं तो मूलभूत बात कहना चाहता हूं । स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश का बड़ा भारी विकास हुआ और हरियाणा प्रदेश का भी हुआ– लेकिन विकास की तरफ जो कदम बढ़ रहे थे? उन बढ़ते हुए कदमों के रास्ते में रुकावटें डालने के लिए कई प्रकार की कुचेष्टाएं देश में और हमारे प्रदेश में भी की गई । हमारी प्रधान मन्त्री जी ने सन् 1971 के चुनाव में एक नारा लगाया था कि देश से गरीबी ओं को समाप्त किया जाए । बार–बार हमारे नेता इस बात को कहते हैं कि जब तक आर्थिक स्वाधीनता नहीं मिलती तब तक राजनीतिक स्वाधीनता अधूरी रह जाती है, बेमायनी रह जाती है । इसका लाभ प्रत्येक व्यक्ति को नही मिलता । तो इस आर्थिक स्वाधीनता कोप्राप्त करने के लिए जब जब कदम उठाए गए उसी वक्त रुकावटें पैदा करने वाला ऐलीमैंट भी इस देश के अन्दर रहा और उन्होंने कई प्रकार की बाधाएं पहुंचायी । उन बाधाओं को समाप्त करने के लिए जब बिल्कुल मजबूरी की हालत पैदा हो गई तो हमारी प्रधान मन्त्री जी ने कुछ कदम उठाए और वे कदम ऐसे समय में उठाए जब वे भाई जो कभी लोकतन्त्र की रक्षा की बात करते थे देश की रक्षा की बात करते थे वे ही सबसे ज्यादा लोकतन्त्र के लिए खतरा बन गए थे । आपने देखा कि पिछले दिनों कैसे हालात इस देश में हुए । कारखानों में हड़तालें कराई गयीं, बिजलीघरों में हडतालें हुयी, रेलों की हड़ताल कराने की कोशिश की गई, विकास के कामों को रोकने के लिए तरह–तरह

की बातें इस देश के अन्दर की गयीं । इन सब चीजों को रोकने के लिए इस देश में आपात स्थिति की घोषणा की गई । बहुत भाई ऐसा भी कहते हैं कि इलाहाबाद के एक जजने जो फैसला दिया था, उस फैसले के परिणाम– स्वरूप ये सब बातें हुयी । यह सब बिल्कुल गलत है, निराधार है । किसी एक फैसले से कोई तमाम हिन्दुस्तान के हालत बदलने वाले नहीं थे । हाई कोर्ट के जज ने फैसला दिया । हमारी प्रधान मन्त्री ने उसका सम्मान करते हुए सुप्रीम कोर्ट में अपील की और जुडिशियरी का, न्यायपालिका का जो तकाजा है, उसको पूरी तरह से पूरा किया । जिस रास्ते से चल कर उस बात को हल किया जा सकता था, उसी रास्ते से चलकर उसको हल किया गया । आपात स्थिति को लागू करने के हालात तो इस देश में बहुत पहले पैदा हो गए थे, लेकिन बडी फराखदिली से काम लिया गया । यह वही देश है, जिस देश में आवश्यक चीजें मिल नहीं रही थी । बाजार में सीमेंट गायब था, लोहा नहीं मिलता था, डीजल नहीं मिलता था और मिट्टी का तेल भी प्राप्य नहीं था यही नहीं और भी अनेक प्रकार की रोज के काम आने वाली चीजें हैं वे भी बाजार में नहीं मिलती थी । आज वही हिन्दुस्तान है जहां सीमेंट की कोई कमी नहीं । सीमेंट का डीलर आज खुशामद करता है । कहता है कि सुना है कि आपका मकान बन रहा है । क्या सौ बोरे सीमेंट भिजवा दूं? नहीं तो इसी देश में एक एक बोरी सीमेंट के लिए हमारे गांव का भाई हफता तक चक्कर लगाता रहता था । एक एक मिट्टी के तेल की बोतल के लिए तीन तीन घंटे लाईन में खड़ा रहता था । लेकिन आज हर

प्रकार की चीज सारे देश में ठीक कीमत पर सुलभ है । मैं यह नहीं कहता कि इन जरूरी चीजों की जितनी कीमतें नीचे आनी चाहिए थीं उतनी नीचे आ गई हैं लेकिन एक बात जरूर है कि जो ट्रैन्ड पहले ऊपर चढ़ने की तरफ था वह आज नीचे की तरफ है । फूल चन्द रोहट जी ने कहा कि कीमतें कम तो हुई हैं लेकिन इन कीमतों को बनाए रखना जरूरी है । मैं यह कहता हूं कि बनाए रखना ही जरूरी नहीं है बल्कि और नीचे ले जाने की जरूरत है ताकि हमारे गरीब लोग आसानी के साथ अपना जीवन निर्वाह कर सकें । तो इन सब बातों को देखते हुए जब हालात मुल्क में ऐसे पैदा हुए कि तमाम देश में बड़ा भारी खतरा पैदा हो गया, हमारे विरोधी दल के भाईयों ने दिल्ली के रामलीला ग्राउंड में बैठ कर एलान किया कि 29 जून तक अगर प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी अपना इस्तीफा नहीं दे देती हैं तो सारे देश में एक बड़ा भारी आन्दोलन किया जाएगा और उस आन्दोलन की रूप–रेखा क्या होती, उसका ढंग क्या होता यह बात आप अच्छी तरह से जानते हैं । वे हमारे स्कूल और कालेज के लड़कों को भडकाते, मजदूरों को भडकाते, किसानों को बरगलाते, मकान फूके जाते, दफ्तर फूके जाते, बस और रेलों को आग लगायी जाती । सारे देश के अन्दर ऐसा वातावरण होता जो एक हिंसा का वातावरण होता । जब सारे देश के अन्दर ऐसा वातावरण हो जाता तो उसका नतीजा क्या होता? जहां हमारा विकास का काम रुकता, जहां गरीब लोगों को राहत देने का काम था वह बन्द होता वहां सीमा से बाहर हमारे बहुत से दुश्मन हैं । क्योंकि आप जानते हैं

कि आज से कुछ वर्ष पूर्व बंगला देश की लड़ाई में हमारे देश की बहादुर बेटी प्रधान मैली श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने जो एक करारी चपत पाकिस्तान के मुंह पर लगायी थी, वह चपत केवल भुट्टो के मुंह पर ही नहीं लगायी थी, वह केवल याहिया खां के मुंह पर नहीं लगी थी वह चपत अमेरिका के मुंह पर भी लगी थी, वह चपत चीन के मुंह पर भी लगी थी । वह करारी चपत उन सारे देशों के मुंह पर लगी थी जो पाकिस्तान की सहायता करते थे । आज तक वे अपनी चोट के जख्म को भूल नहीं पाये हैं । वे इस मौके की इन्तजार में थे कि जब भी हिन्दुस्तान के अन्दरूनी हालात बिगड़ जायें तो हम हिन्दुस्तान पर हमला करें । लेकिन हमारी प्रधान मत्री जिसके हाथ में देश की बागडोर थी, जिसकी पीढ़ियों ने इस देश की आजादी हासिल करने के लिए अपना खून बहाया, बड़े बड़े बलिदान किये वह किस प्रकार इस देश को ऐसा देख सकती थी? वह किस प्रकार ऐसा देख सकती थी कि देश की आजादी पर कोई आंच आये ।

आपात स्थिति की घोषणा की गई । जो गैर–जिम्मेदार लोग थे, जिनकी जबान पर लगाम नहीं थी और गैर–जिम्मेदारी की बातें करते थे उन. लोगों की जबान पर लगाम लगायी गई । जो समाज विरोधी थे उनको चौक किया गया, जो स्मगलर थे उनको जेल के सींखचों में बन्द किया गया । अभी कल हमारे भाई कहते थे कि कई लोगों को बिना कारण के जेल में बन्द किया गया है, ऐसा नहीं है । परन्तु कई ऐसे लोगों को जेल में

बन्द किया गया है जिनका इन कामों से तो सम्बन्ध नहीं था । यह मैं मानता हूं कि उनका सम्बन्ध चोर बाजारी, मुनाफाखोरी और जमाखोरी से नहीं था लेकिन ऐसे भाइयों का ऐसी पार्टियों से सम्बन्ध था, ऐसे दलों से सम्बन्ध था जो इन सब चीजों को बढ़ावा देने में अपना पूरा रोल प्ले करते थे । आज चौधरी फूल चन्द जी इस बात की शिकायत करते हैं कि मुझे पकड़ा गया । अगर आराम से कोई भाई बैठा रहे, प्रधान मैली जी की नीति का भी समर्थन करे, बीस सूत्रीय कार्यक्रम की भी ताईद करे, हमारे हरियाणा प्रदेश में जो विकास के काम हुए हैं उनका भी समर्थन करे फिर भी पकड़ा जाये तो कोई न कोई बात है? उस बात को मेरे साथी अच्छी तरह से जानते हैं कि वह बात क्या है? जब कभी भी विरोधी दल की मीटिंग होती थी, विपक्षी दल की मीटिंग होती थी तो वे उन मीटिंगों में जाते रहे हैं, आन्दोलन चलाने के प्रोग्राम बनते रहे । यह बात दूसरी थी कि उनमें इतना साहस और हिम्मत नहीं थी कि वह कोई आन्देलन का खतरा मोल लेकर उसको चला सकें । वह नहीं चला पाये, यह बात अलग है लेकिन उन्होंने अपने तौर पर कोई कसर नहीं रखी । इन सारी गतिविधियों को दृष्टि में रखते हुए हमें कुछ ऐसे कदम उठाने पड़े जिन के कारण आज हमें कुछ लोगों को जेल में बन्द करना पड़ा । हम नहीं चाहते कि किसी भी व्यक्ति को जेल में बन्द किया जाये । मैं तो यह चाहता हूं कि अगर भगवान ने उनको सद्बुद्धि दी हो और वह यह समझते हों कि प्रधान मती का जो यह कार्यक्रम है यह ठीक है, देश विकास की ओर जा रहा है, लोगों के हित में जा रहा है,

उनके जीवन में परिवर्तन आया है तो हम एक दिन भी उन लोगों को जेल में नहीं रखना चाहते हैं । न हम चाहते हैं और न ही हमारी प्रधान मैली चाहती है । लेकिन एक बात आप मानेंगे कि जिस रोज से आपात स्थिति लागू हुई है तब से सारे देश के हालात अच्छे प्रकार से चल रहे हैं । उसके लागू होने के बाद कितनी तरक्की और इम्प्रूवमैंट हरेक काम में हुई है यह किसी से छिपी नहीं है । हर चीज की कीमत नीचे गई है । जो विद्यार्थी कालेजों में नहीं जाते थे, झण्डे लेकर नारे लगाते हुए बाजारों में घूमते थे और हमारे अपोजीशन के भाई उन्हें हवा देते थे आज वही हमारे विद्यार्थी जिनके कन्धों पर बन्दूक रख कर चलाई जाती थी, अपनी शिक्षा और विद्या का अध्ययन कर रहे हैं । जो मजदूर कारखानों में काम नहीं करते थे और हड़ताल करते थे, तालाबन्दी करते थे वह सब बन्द हो गयी । किसान अपने खेत में काम करता है, तमाम सर्वसाधारण जनता काम में लगी है ये तो कुछ मुट्ठी भर लोग हैं जो कुर्सी के बहुत भारी इच्छुक हैं । कुर्सी के लालच में जाति–पाति की बातें करते हैं, चाहे उनको कोई भी गलत बात करनी पड़े वे करते हैं । इस ऐमरजैसी से केवल उन लोगों को ही तकलीफ है जो समाज विरोधी हैं या जिन्होंने हजारों करोड़ों रुपया छुपा रखा था और बहुत मोटे होते जा रहे थे । आज आम जनता तो सारे हिन्दुस्तान में इस बात से खुश है । गांव गांव के अन्दर यह बात कहते हैं कि यह ऐमरजैसी तो आज से कई साल पहले लागू होनी चाहिए थी । आज जो कदम हमारी प्रधान मैली जी ने उठाये हैं ये सही वक्त पर उठाये हैं और उन्होंने बार बार

एलान किया है कि यह बात चालू रहेगी, यह स्थिति चालू रहेगी जब तक कि देश के हालात पूरी तरह से नार्मल नहीं हो जाते । जब तक देश की विकास गति जो चल रही है वह तेज न हो जाये तब तक यही स्थिति चलेगी । जब तक वह एलीमैंट, ऐसे तत्व इसमें रुकावट पैदा करेंगे तब तक यह बात चलती ही रहेगी । प्रधान मैली जी ने जो बीस सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की है, उन्होंने केवल घोषणा ही नहीं की, कागजों पर ही नहीं लिखा उन्होंने तमाम प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों को आदेश दिया कि इस बीस सूत्रीय कार्यक्रम को इम्पलीमैंट किया जाये । लागू करने के लिए उन्होंने कुछ गाइड लाइन्ज भी दी हैं । जहां तक हरियाणा प्रदेश का सम्बन्ध है मैं आपके जरिए हाउस को बताना चाहता हूं कि हम सबसे ज्यादा प्रायरिटी इस प्रोग्राम को देते हैं कि जल्दी से जल्दी बीस सूत्रीय कार्यक्रम को इम्पलीमैंट किया जाये । (तालियां)

इसके अलावा हमने जिला स्तर पर कमेटियां बनायी हैं और उन कमेटियों में अफसर भी हैं और नान–आफिशियल भी हैं । वे मिल कर इस बात को देखते हैं कि कहां तक यह प्रोग्राम लागू होता जा रहा है । अभी चौधरी फूल चन्द जी ने हाउस में रिहायशी प्लाटस की बात कही । हमारे भूमिहीन भाइयों का वे बड़ा मजाक सा उड़ा रहे थे, उन्होंने कहा कहीं किसी को जमीन नहीं मिली है । अगर जमीन मिली भी है तो उसका मकान नापते हैं । कहीं किसी को जोहड में मिली है । हमने जो जिला स्तर पर कमेटियां बनायी हैं, अब हम हर तहसील लेवल पर भी कमेटियां

बनाने जा रहे हैं । उन कमेटियों के सरकारी मैम्बरान को और गैर– सरकारी मैम्बर को यह आदेश दिये हैं कि वे पूरी तरह से जांच करें । वे गांव–गांव में जायें और देखें कि जो रिहायशी प्लाट्स देने का प्रोग्राम है यह कहां तक इम्पलीमैंट हुआ है । मैं इस बात को मानता हूं कि कहीं गलत तकसीम भी हो गई होगी, कहीं किसी को जमीन अच्छी भी न मिली होगी । हो सकता है डिजर्विंग आदमी रह गये हों और जो डिजर्व नहीं करते थे उनको मिल गई हो । इस प्रकार की बातें हो सकती हैं । लेकिन उन सब बातों की छानबीन करने के लिये हमने ये सब कमेटियां बनायी हैं और उनसे हमने यह प्रार्थना की है कि वे सही हालात को देखकर हमें रिपोर्ट करें और जब हमारे पास रिपोर्ट आयेगी तो मैं सरकार की तरफ से आपको पूरा आश्वासन देता हूं कि उस कमी को हम दूर करेंगे और सही मायनों में जो भूमिहीन भाई हैं, उनको प्लाट देंगे । जहाँ तक नापकर प्लाट देने का सवाल है, चौधरी फूल चन्द जी ने कहा था कि जमीन को जाकर नापते हैं तो इसके लिये कोई तो क्राइटेरिया बनाना पड़ेगा । आप जानते हैं हरियाणा प्रदेश बनने से पहले जब ज्वांयट पंजाब था तो कनसौलिडेशन के वक्त जितने भी हमारे हरिजन भाई या बैकवर्ड क्लास के भाई थे, उनको रिहायशी प्लाट दिये गये थे । तब उनको छोटा सा प्लाट दिया गया था । उसके बाद उसके चार बेटे हो गये, वे व्याहे गये, उनके चार अलग परिवार बन गये लेकिन प्लाट उनके पास वही एक था । तो फिर चार भाई ऐसे हो गये जिनके पास रिहायशी प्लाट नहीं हैं । फिर यह देखें कि एक आदमी के पास कितना

बड़ा प्लाट है । शायद उसके पास इतना बड़ा हो कि वह अपने परिवारों को अपने पास रख सकता हो । तो यह देखन जरूरी था ताकि कोई क्राइटेरिया बनायें । ऐसा न हो कि हम किसी को जमीन दें और किसी को न. दें । इस बात का भी फैसला करना था । मैं यह बतलाना चाहता हूं कि जब हमने यह सर्वे करवाया और पूरी तरह से जांच करवायी तो 1,81,204 व्यक्ति ऐसे थे जो इस बात के अधिकारी थे कि उनको प्लाट दिया जाये । 1,81, 204 में से 1,48, 859 लोगों को हमने प्लाट दे दिये हैं और उनको कब्जा भी दे दिया है । जितने एलीजीबल परसन्ज बनते हैं, यह उनका 82 प्रतिशत हैं । अब 18 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे बचे हैं हमारे प्रदेश में जिनके पास रहने के लिये जगह नहीं है और हमने उनको भी प्लाट देने है । तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि अगले 6 महीने के अन्दर–अन्दर हम उन 18 प्रतिशत को भी रहने के लिये रिहायशी प्लाट दे ने की कोशिश करेंगे । मैं चौधरी फूल चन्द जी की जानकारी के लिये यह भी बता देना चाहता हूं कि जो जमीन हमने उन्हें दी है हाउस साइट्स की वह 313 एकड़ 6 कनाल 4 मरले जमीन है । यह फिगर आप नोट कर लें और इसको पूरी तरह से वैरीफाई कर लें । अगर इसमें कहीं कमी होगी तो उस कमी को हम पूरा करेंगे ।

इसके अलावा बीस सूत्रीय कार्यक्रम पर चौधरी फूल चन्द जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि कांग्रेसियों को तो पता ही

नहीं कि वह बीस सूली कार्यक्रम है क्या? कागज में ही लिखा है । शायद ये भाई जेल में बैठकर उसके सारे सूत्र पढ़ते रहे हैं ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : आन ए प्वांयट आफ आर्डर सर । मैंने तो ये जबानी याद भी कर रखे हैं और इसको मानता भी हूं ।

श्री बनारसी दास गुप्त : तो उस बीस सूत्रीय कार्यक्रम को हम अच्छी प्रकार से समझते हैं । हमारी कांग्रेस की जो बैठकें होती हैं, उनमें पूरी तरह से इस पर बहस होती है, चर्चा होती है, डिस्कशन होता है और एक–एक प्वांयट को लागू करने पर हम पूरी तरह से विचार करते हैं और जो कारगुजारी की होती है, उसको रिव्यू करते है कि कितना काम हमने किया है, कितना बाकी है । अब इस बीस सूत्रीय कार्यक्रम में देहाती किसानों को बिजली और पानी अधिक देने की बात है, उनको कर्ज की सुविधायें देने की बात है । मैंने तो एक बात सोची है कि हमारे हरियाणा प्रदेश में पांच प्रकार के व्यक्ति रहते हैं । एक तो वे व्यक्ति हैं जिनके पास छोटा–मोटा भूमि का टुकड़ा है और वे खेती करके गुजारा करते हैं । एक वे व्यक्ति हैं जिनके पास जमीन तो नहीं पर उनके पास हुनर है, कोई न कोई कारीगरी का काम वह जानते हैं एक प्रकार के वह व्यक्ति है कि न तो उनके पास जमीन है, न उनके पास हुनर है जिसको हम अन–स्किलड लेबर कहते हैं । चौथे वे व्यक्ति हैं जिनको हम व्हाइट कौलर क्लास कहते हैं जो कोई मैट्रिक पास कर गया, कोई बी० ए० पास कर गया, एम० ए०

पास कर गया और नौकरी की तलाश में है । और पांचवें प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो बनज–व्यापार व्यवसाय करते हैं या अपना उद्योग धन्धा करते हैं । तो जहाँ तक उद्योग धन्धे और बनज–व्यवसाय करने वालों की बात है, आम तौर पर मैं यह बात कहता हूं, सारे तो नहीं परन्तु इन में काफी आदमी खुशहाल हैं, उनकी तरफ अगर ध्यान देने की जरूरत है तो एक ही बात की कि उद्योग धन्धों को अगर हम ज्यादा से ज्यादा सुविधा दे पायें तो हमारे प्रदेश का औद्योगीकरण तेजी के साथ होगा और जहाँ औद्योगीकरण होगा वहाँ व्हाईट कौलर क्लास को भी कोई काम मिलेगा, बेकारी भी दूर होगी, सरकार का रैवेन्यू भी बढ़ेगा और प्रदेश में भी खुशहाली आयेगी । तो इस बात की हम पूरी चेष्टा करते हैं कि उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन दिया जाये और पिछले एक दो सालों में बिजली की कमी के कारण हमारे प्रदेश के औद्योगीकरण में एक बड़ी भारी ठेस लगी है । अगर हमारा यह बिजली का संकट पिछले दो सालों में न आता तो आज तक औद्योगीकरण के रास्ते पर भी हम कहीं बहुत आगे बढ़े हुए होते । लेकिन भगवान की दया है कि इस वर्ष प्रकृति ने हमारा साथ दिया । गोबिन्द सागर के अन्दर पानी काफी है और बिजली की पैदावार काफी हुई है ।

हमारा एक थर्मल प्लान्ट फरीदाबाद में लगा है, वह भी 11– 12 लाख यूनिट बिजली देता है । एक दूसरा यूनिट लगकर हमारा मार्च में तैयार हो जायेगा और एक तीसरा यूनिट भी हम

लगाने की तैयारी कर रहे हैं । इसके लिये हमने सैट्रल सरकार की स्वीकृति चाही है और हमें आशा है कि वह भी हमें मिल जायेगी । दो थर्मल प्लान्ट हम पानीपत में लगाने जा रहे हैं 110–110 मैगावाट के, एक यूनिट हमारा इसी पंचवर्षीय योजना में लगकर तैयार हो जायेगा । आशा है शायद सन् 1977–78 में वह पूरा हो जाये लेकिन हमारा जो दूसरा यूनिट है पानीपत का, वह छटी पंचवर्षीय योजना में आयेगा । लेकिन इसके अलावा ब्यास–प्रौजैक्ट में जो बिजली पैदा होगी, हमें ऐसी आशा है और मेरे ख्याल में डेढ–दो साल में वह प्रोजैक्ट कम्पलीट हो जायेगा तो अढाई सौ मैगावाट बिजली हमें वहां से मिलेगी और दो प्रौजैक्ट सैट्रल गवर्नमैंट की तरफ से जम्मू और काश्मीर में चलाये जा रहे हैं । सियोल और सलाल । वे प्रोजैक्ट कम्पलीट होने के बाद हमें उन से भी 100 मैगावाट बिजली और मिलेगी । तो इस प्रकार इन बातों पर हमारी आशा लगी हुई है कि हमें जो बिजली की उपलब्धि है, वह ज्यादा होगी और हम अपनी कमी को दूर कर पायेंगे । लेकिन आप जानते हैं कि यह बिजली केवल उद्योग धन्धों के लिये ही नहीं, खेती के लिये भी एक बहुत ही उपयोगी चीज बन गयी है और मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि तमाम हिन्दुस्तान में ऐग्रीकल्चर सैक्टर में सबसे ज्यादा बिजली की खपत अगर कहीं होती है तो वह हरियाणा प्रदेश में होती है । आज 40 फीसदी बिजली हम केवल कृषि के काम के लिये इस्तेमाल करते हैं । तो खेती केलिये भी बिजली जरूरी हैऔर बड़ी उपयोगी हो गयी है । तो इस तरह से जो बिजली हमारे पास आयेगी, उससे जहां

उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन मिलेगा, वहाँ खेती को भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा मिलेगा । आज हमारे पास कई हजार टैस्ट रिपोर्टस पैंडिंग पड़ी हैं । किसान चाहता है कि उसको टयूबवैल का कनैक्शन दिया जाये । लैड मार्गेज बैक से उन्होंने लोन ले लिया । कर्जे की किस्त की अदायगी के नोटिस आने लग गये लेकिन कनैक्शन उसको आज तक नहीं मिल पाया । अब हम इस बात की पूरी कोशिश कर रहे हैं कि जितनी भी पैंडिंग टैस्ट रिपोर्टस हैं, अगले साल में हम उनको कनैक्शन दे पायें । इस बात का हम इन्तजाम कर रहे हैं और इसमें सामान की या पैसे की जहाँ–जहाँ कमी है, हम उसको भी पूरा करने की कोशिश करेंगे । तो मैंने जो पांच प्रकार के व्यक्ति बतलाये, उनमें एक तो ये उद्योगपति और व्यवसायी आते हैं जिनका जिक्र मैंने आपके सामने किया । दूसरे किसान आते हैं । हमारा किसान बड़ा मेहनतकश है । हमारे प्रदेश में जो हरित क्रान्ति आयी, उसका बहुत कुछ श्रेय जहाँ चौधरी बंसी लाल जी को आता है, वहां सबसे ज्यादा श्रेय हरियाणा क किसान को जाता है । वह रात दिन मेहनत करता है, अपने खेत में बैठकर काम करता है । इसलिए हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम उसको ज्यादा से ज्यादा सुविधायें दें । तो इस 20 सूत्रीय कार्यक्रम में यह भी एक सूत्र है कि किसान को ज्यादा से ज्यादा बिजली और ज्यादा से ज्यादा पानी दिया जाए । जहां तक पानी का सवाल है हमने काफी पानी अपने प्रदेश में बढ़ाया है । जब से चौधरी बंसी लाल ने सरकार की बागडोर हाथ में ली, मैं समझता हूं कि आठ लाख एकड़ जमीन में ज्यादा पानी दिया गया है और

3 हजार 125 क्युसिक पानी हमारे प्रदेश में बढ़ा है, सिंचाई के काम में लिया गया है । अगर आप यह पूछें कि यह पानी कहां से आया तो कुछ पानी तो हमने बचाया नहरों, माईनरो और खालों को पक्का करके । पहले जो सीपेज होती थी, जो कच्ची नहरें पानी को चूस लेती थी, वह पानी बचाया । कुछ पानी बाढ़ का इस्तेमाल किया । जो बाढ़ तबाही करती थी और तबाही करता हुआ वह पानी समुद्र में चला जाता था उस पानी को इस्तेमाल किया । कई विरोधी दल के भाई जब सोनीपत और करनाल में जाकर यह प्रचार करते थे कि एक बागडू का चीफ मिनिस्टर बन गया है और वह तुम्हारे पानी को काटकर बागडू में ले गया लेकिन यह जितनी लिफ्ट इरीगेशन स्कीम बनी हैं, जो रेगिस्तानी इलाके में नहर निकली हैं वह तमाम बाढ़ का पानी है । जो बाढ़ उनके इलाके को तबाह किया करती थी उस इलाके को तबाही से बचाया है । इस प्रकार आम के आम और गुठलियों के दाम वाली कहावत हरियाणा में पूरी उतरती है कि बाढ़ से भी लोगों की रक्षा हो गई और पानी भी काम में ले लिया । हुस प्रकार जो हमने 3 हजार 125 क्युसिक पानी बढ़ाया है वह नहरों को पक्का करके, माइनरों को पक्का करके और खालों को पक्का करके और बाढ़ के पानी से बढ़ाया है । एक आगमैन्टेशन कैनाल बनाई । आप जानते हैं कि तमाम हिन्दुस्तान में नहरें दरियाओं से निकलती हैं लेकिन हरियाणा में एक नई तरह की नहर निकाली गई जिसका तमाम पानी जमीन से निकाला गया । जहां पानी का लेवल ऊंचा था जहां सेम आ जाती थी और लोगों की जमीन कल्लर हो रही

थी वहां सैकड़ों की तादाद में टयूबवैल लगाकर पानी खींचा और नहरों में डाला और उन लोगों का भला किया जहां पानी ऊंचा होने के कारण जमीन खराब होती जा रही थी । इस प्रकार से पानी की माता बड़ी । लेकिन इस बात के बावजूद भी मैं इस बात को मानता हूं कि जितना पानी हमारी नहरों को चाहिए और जितना पानी किसानों को चाहिए उतना पानी आज भी हरियाणा प्रदेश में उपलब्ध नहीं है । उस काम को कैसे पूरा करें? इसके बारे में हमें आशा है कि रावी ब्यास के फालतू पानी में हरियाणा का अच्छा खासा हिस्सा बनता है और उसके बटवारे का झगड़ा हमारे पड़ौसी प्रदेश पंजाब के साथ है । दुर्भाग्य से हम आपस में फैसला नहीं कर पाए हैं और यह मामला अब केन्द्रीय सरकार के सुपुर्द है और मुझे पूरी आशा है कि बहुत जल्दी निकट भविष्य में रावी ब्यास के पानी के हिस्से का फैसला होगा और उसमें हमारा हिस्सा जो अच्छा खासा है वह पानी मिलेगा । ऐसी मुझे आशा है । और जब वह पानी मिल जाएगा तो हम नहरों में पानी बढ़ा पाएंगे । लिफ्ट इरीगेशन की जो नहरें बनी हैं जैसे जुई कैनाल, इंदिरा गांधी कैनाल और बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती कैनाल । इनमें जुई कैनाल को तो हमने बारह मासी बना दिया है लेकिन इंदिरा गांधी कैनाल तथा चक्रवर्ती कैनाल अभी एक फसली नहर है । जब रावी व्यास का पानी मिल जाएगा तो उन दोनों नहरों को भी बारह माही बना दिया जाएगा । एक तीसरी नहर जो हमारी सब से बड़ी नहर है वह है जवाहरलाल नेहरू कैनाल । उस कैनाल पर काम चल रहा है और अब तक सात–साढ़े सात करोड़ रुपया हम

खर्च कर चुके हैं और अगले साल के बजट में हमने दस करोड़ रुपया उस नहर के लिए रखा है । यह नहर हमारी सबसे बड़ी लिफ्ट इरीगेशन की नहर है और सबसे ज्यादा इलाके को पानी देगी । इसका जो सी० सी० ए० है वह है 5 लाख 88 हजार 728 एकड़ । यह नहर उस तमाम इलाके को, जो रेतीला है और जैसा मैंने आपके सामने बयान किया कहतजदा इलाका, तमाम महेन्द्रगढ़ जिला, नारनौल, लोहारू, झज्जर, नाहड, और रिवाडी का तमाम इलाका कवर करेगी । मुझे आशा है कि इसी नहर के द्वारा इस साल बरसात के दिनों में अर्थात जब फल्ड का पानी मिलेगा तो कुछ हिस्से को खरीफ फसल के लिए इस नहर से पानी देंगे । मुझे आशा है कि अगले दो–ढाई साल में इस नहर को पूरा कर पाएगे । जब रावी व्यास का पानी हमें मिल जाएगा तो इस नहर को भी बारह मासी कर देंगे । इस प्रकार जो पानी और बिजली की कमी हमारे प्रदेश में है वह पूरी करेंगे । यह हमारी आशा है और यह हमारा इरादा है जो बीस सूली कार्यक्रम का एक अंग है । इसके अलावा बीस सूती कार्यक्रम के अन्दर यह कहा गया है कि जो रूरल आर्टिजन है और जो देहात में बैठें है जैसे कोई लुहार का काम करता है, कोई बढ़ई का काम करता है, कोई कपडा बुनने का काम करता है लेकिन उनके पास आधुनिक किस्म के औजार नहीं हैं, उनके पास साधन नहीं हैं । अगर कोई जुलाहा है तो वह पुराने ढंग से ही जमीन में खड्डी लगाकर काम करता है । अगर कोई लुहार का काम करता है तो वह भी पुराने ढर्रे पर ही काम कर रहा है । इन सब को काम देने के लिए, रोजगार देने के

लिए हम एक हैंडीक्राफ्ट ऐण्ड हैंडलूम कार्पोरेशन बनाने जा रहे हैं जिसकी स्थापना बहुत जल्दी हो जाएगी और इस कार्पोरेशन का यह काम होगा कि वह इन सब को आधुनिक औजार दे, इन सब को पूरे साधन दे, इन सब को कच्चा माल दे, इनको वर्किंग कैपीटल दे और इनके माल को खरीदकर देश और विदेश में बेचे । क्योंकि अब तक यह होता है कि एक जुलाहा अपने कोठे में बैठकर एक थान कपड़े का बुनता है और वह शाम को उस थान को कन्धे पर डालकर बेचने जाता है तो बाजार में बैठने वाला जो दुकानदार होता है वह बड़ा होशियार होता है । वह जानता है कि यह जुलाहा थान को जरूर बेचकर जाएगा इसलिए वह कम से कम कीमत उस थान की आफर करता है । वह जुलाहा सारे दिन मार्किट का चक्कर लगाता है इसी उम्मीद में कि कहीं ज्यादा कीमत मिल जाए लेकिन मजबूर होकर उसको कम कीमत में वह थान बेचकर जाना पड़ता है । क्योंकि अगर वह थान न बेचे तो अगले दिन के लिए सूत कहां से ले? या घर के लिये चीजें कहां से खरीदे? इस सेल प्रौब्लम को हल करने के लिए हमने इस कार्पोरेशन को आदेश दिया है कि इनकी मार्किटिंग का पूरा इन्तजाम करे । इस प्रकार से हम किसानों को काम देना चाहते हें, रूरल आर्टिजंज को काम देना चाहते हैं ।

अब तीसरे लोग रह जाते हैं जिनके पास न कोई जमीन है और न कोई हुनर है । उनके लिए भी हम सोच रहे हैं । हमने इसके लिए एक कार्यक्रम तैयार किया है कि प्रदेश स्तर पर एक

लेबर एंड कंस्ट्रक्शन कोओप्रेटिव बोर्ड बनाया जाए । बहुत जल्दी ही वह बोर्ड बनकर तैयार हो जाएगा । उस बोर्ड के तैयार होने पर प्रत्येक ब्लाक लैवल पर एक–एक लेबर एंड कंस्ट्रक्शन कोओप्रेटिव सोसायटी गठन करेंगे । जो जैनुअन होंगी. सही होंगी । सोसाइटीज तो इस प्रदेश में अब भी हैं लेकिन वे बेनामी हैं । एक ठेकेदार 20– 30 मजदूर हरिजनों का नाम लिखकर सोसाइटी रजिस्टर करवा लेता है. ठेके का काम हासिल कर लेता है और खुद मुनाफा हजम कर लेता है और उस गरीब मजदूर के पल्ले कुछ नहीं पड़ता है । तो हमने यह कड़े आदेश दिये हैं कि जो भी सोसायटी बने वह जेनुअन हो, सही ढंग से उसमें आदमी शेयर होल्डर हों और जब इन सोसाइटीज का गठन हो जाएगा तो हम ज्यादा से ज्यादा सरकारी काम इन सोसाइटीज को देंगे ताकि बीच में से हम ठेकेदार को निकाल पायें और साथ ही उस मजदूर को कोई काम मिले जिसके पास न कोई काम है, न कोई सामान है और न ही उसके पास कोई हुनर है । स्पीकर साहब. अब हमारे पास रह जाते हैं वाइट कालर, जो हमारे शिक्षित भाई हैं । आप अच्छी प्रकार से जानते हैं कि कोई भी सरकार इस बात में सफल नहीं हो सकती कि तमाम शिक्षित भाइयों को नौकरी दे पायें । यह बात तो बिलकुल असम्भव है । लेकिन कल मैंने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए काफी बातों पर रोशनी डाली थी कि सरकार ने शिक्षित भाईयों को रोजगार दे.ने के लिये क्या–क्या कदम उठाये हैं । तो उन सब भाइयों के लिये हम यही प्रार्थना करेंगे कि वे कोई न कोई धन्धा अपनाएं । उनको धन्धा और काम देने के

लिये हम प्रैफरैन्स देंगे, प्राथमिकता देंगे और पूरा पूरा प्रोत्साहन देंगे ताकि वह किसी भी काम के अन्दर लग जाएं ।

इसके इलावा हम उद्योग विभाग की तरफ से एक बात कर रहे हैं कि हमारे जो हरिजन भाई हैं. पिछड़े वर्ग के लोग हैं कोई इन्डस्ट्री लगाना चाहते हैं, इंडस्ट्रीयल एरिया में उनको प्लाट चाहिये, हम यह तो नहीं कह सकते कि उनके लिये हम प्लाट रिजर्व कर देंगे क्योंकि रिजर्व करने के बाद हो सकता है कि कोई लेने ही न आये और वे प्लाट बेकार पड़े रहें । लेकिन हम यह कर रहे हैं कि कोई हरिजन भाई. अगर किसी इंडस्ट्री एरिया में प्लाट लेना चाहे तो हम उसको प्रायरिटी देंगे, उसको प्राथमिकता देंगे । (तालियां) इसके साथ–साथ 50 परसैन्ट कच्चा माल देने में भी प्राथमिकता देंगे और इम्पोर्ट के लिये अगर कोई लाइसैन्स के लिये कहेगा तो उसके लिये भी सिफारिश करने में क्योंकि इम्पोर्ट लाइसैन्स गवर्नमैंट आफ इंडिया देती है, सिफारिश करने में हम प्राथमिकता हरिजनों को देंगे और बैकवर्ड क्लासिज के व्यक्ति को देंगे । इस प्रकार का इन्तजाम हम करने जा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, इस 20 सूत्रीय कार्यक्रम में एक लैण्ड सीलिंग की भी बात है लैण्ड सीलिंग का जहां तक सवाल है, उसके लिये एक कानून हमने पास किया था, वह हाई कोर्ट में चौलेन्ज हो गया, उसके बाद उस का संशोधन करना पड़ा, संशोधन करने के पश्चात् केन्द्र सरकार से उसकी एप्रूवल प्राप्त की और अब इसी चालू सव में वह बिल पेश किया जाएगा और हमारे

भाई कह रहे हैं कि हम खामखाह लोगों को इस बात का झांसा देते हैं कि हम तमाम को जमीन देंगे और चौधरी फूल चन्द जी ने एक बात बतलाई कि हमारे भूतपूर्व मुख्य मन्त्री चौधरी बंसी लाल जी सोनीपत में एक रैली में गये थे, वहां पर वे एक एलान कर आये हैं कि कोई जमीन की तरफ आंख उठाकर न देखे, किसी को एक इंच जमीन नहीं मिलेगी । मैं इस बात को नहीं मानता कि चौधरी बंसी लाल जी ने इस तरह का कोई एलान किया हो । हां, एक बात वे कह सकते हैं और यह बात मैं भी कहता हूं कि जितने भी भूमिहीन किसान हमारे प्रदेश में हैं, जितने भी हरिजन भाई हैं, हम उन सब को जमीन नहीं दे पाएंगे लेकिन किसी को जमीन नहीं दी जायेगी, यह बात गल्त है । हम जो नया ऐक्ट बनाने जा रहे हैं, उस नये ऐक्ट में हम उम्मीद करते हैं कि 44 हजार एकड़ जमीन हमें सरप्लस मिलेगी और 48486 एकड़ कमीन, जो पुराना ऐक्ट था, उसके तहत हमारे पास सरप्लस है तो इस प्रकार से 92486 एकड़ जमीन हमारे पास सरप्लस बन जाती है लेकिन इस जमीन में से कुछ तो हमने धार्मिक संस्थाओं को एग्कम्पशन दे दी है और कुछ हमने गौशालाओं को एग्जम्पशन दे दी है । दोनों प्रकार की छूट वाली जमीन 25773 एकड़ यह निकल जाती है 92488 एकड़ जमीन में से । बाकी जो जमीन बचेगी यह हमारे जो भूमिहीन भाई हैं, हरिजन हैं और जो दूसरे लोग हैं, उन में हम यह जमीन तकसीम करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय, इस के आगे 20 सूत्रीय कार्यक्रम में जी आवश्यक सामान के वितरण प्रणाली में सुधार करने की बात है, उसके बारे में तो मैं समझता हूं कि यह बात हरियाणा प्रदेश में काफी हद तक लागू हो चुकी है, आज कोई ऐसी आवश्यक वस्तु नहीं है जो कि न मिलती हो, चाहे गांव हो, चाहे शहर हो,.. सभी आवश्यक वस्तुएं हर जगह पर उपलब्ध हैं । लेकिन इसके बावजूद भी हम एक इन्तजाम करने जा रहे हैं हमने हजारों की तादाद में फेयर प्राइस शापस खोली हैं, देहात में भी खोली हैं. शहर में भी खोली हैं और शहरों में हमने कोआप्रेटिव कन्ज्यूमर स्टोर्ज भी खोले हैं, उनकी शाखाएं भी खोली हैं लेकिन इसके बावजूद हम एक और इन्तजाम करने जारहे हैंकि यह वितरण का तमाम काम आहिस्ता–2 सहकारिता विभाग को देने जा रहे हैं । गांवों के अन्दर जहां हमें जरूरत होगी हम कोआप्रेटिव स्टोर्ज की शाखाएं भी खोलेंगे और इन सहकारिता समितियों के द्वारा हम आवश्यक वस्तुओं का वितरण भी करवायेंगे ताकि बीच में कोई मुनाफाखोर किसी किस्म किसी गड़बड़ न करने पाये । गड़बड़ की बात तो आप यह कहते हैं कि आपके कोआप्रेटिव विभाग के अधिकारी, इन्सपैक्टर वगैरह भी गड़बड़ कर सकते हैं, यह बात भी मैं मानता हूं कि बेडबड कर सकते हैं और वे करते भी हैं लेकिन हमने इस बात को काफी चौक किया है और आगे भी हम सख्ती से चौक करेंगे । तो इस प्रकार सहकारिता विभाग के द्वारा इस वितरण का काम हम सारे प्रदेश में इस प्रकार से लागू करना चाहते हैं कि इससे किसी भाई को किसी प्रकार की कोई तकलीफ न हो ।

अध्यक्ष महोदय, इसके इलावा देहाती भाईयों को कर्जे देनेकी बात है, रूरल आर्टीजन्ज को कर्जे देने की बात है । आपने सुना होगा कि पिछले दिनों भिवानी के अन्दर एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की स्थापना हुई थी और उसके लिये हमारे राष्ट्रपति महोदय ने एक आर्डीनैन्स भी जारी किया था उस में भी कुछ विशेष सुविधाएं दीगई हैं और अब इस भिवानी बैक की शाखायें देहातों में, गांवों में और दूसरे जिलों में भी खोली जा रही हैं । हमारे जो कमर्शियल बैंक्स हैं जो नेशनेलाइजड हैं, उनको हमारी सरकार की ओर से यह आदेश हुए हैं कि वे आसान किश्तों पर, कम सूद की दर पर हमारे किसान भाईयों को, देहात में रहने वाले भाईयों को ज्यादा से ज्यादा कर्जे की सुविधाएं प्रदान करें और इसके इलावा हम. एक प्रबन्ध हे और करने जा रहे हैं कि हमारी जितनी क्रेडिट कोआप्रेटिव सोसाइटीज' हैं उन सब को रिआर्गेनाइज कर रहे हैं । अभी तो गांव–गांव में करीब 6 हजार सोसाइटीज हैं । हम, इन सबको कम करके वायबल यूनिट बनाने जा रहे हैं और प्रत्येक पटवार सर्कल के ऊपर एक कोआप्रेटिव सोसाइटी कर रहे हैं । इस प्रकार हमारे प्रदेश में ये 2,000 सोसाइटीज लघु बैंक्स का काम करेंगी जो देहाती भाईयों को कर्जा दे.ने के साथ–साथ. अन्य प्रकार कौ सामान देने का इन्तजाम भी करेंगी (तालियां) । इन मिनी बैंक्स का बाकायदा समय होगा, होल–टाइम सैक्रेटरी होगा, जगह भी उनकी निश्चित होगी, हर भाई, जो किसान भाई है, ग्रामीण भाई हैं, इनसे पूरा फायदा उठा पाएंगे । तो इस प्रकार इस 20 सूत्रीय कार्यक्रम में हमारे छालों का भी जिकर आता है ।

छात्रों को ठीक कीमत पर सामान पहुंचाने का हमने प्रबन्ध किया है, हरेक होस्टल में, कालेज व छात्रावास में आवश्यक चीजों को पहुंचाने का हमने पूरा प्रबन्ध किया है । कालेज और स्कूलों के अन्दर हमने बुक–बैक्स भी खोले हैं, इन से गरीब विद्यार्थियों को किताबें मिल सकेंगी । एक्सरसाइज बुक्स, कापियां वगैरा और दूसरा जो पढ़ाई का समान है, वह विद्यार्थियों को आसानी से सुलभ हो सके, इस बात का भी हमने पूरी तरह से प्रबन्ध किया है ।

अध्यक्ष महोदय, इस 20 सूत्रीय कार्यक्रम में बाडिड लेबर की बात है । तो मैं समझता हूं कि यह समस्या हरियाणा प्रदेश में नहीं है । हमने इस बात पर पूरी तरह से गौर किया है । बेगार प्रथा अथवा बांडिड लेबर वाली समस्या हरियाणा प्रदेश में नहीं है । तो इस प्रकार 20 सूत्रीय कार्यक्रम को, जहां तक एक–एक कार्यक्रम का सवाल है, वहां हम पूरी तरह से लागू करने जा रहे हैं । खेती को बढ़ावा देना, रूरल आर्टीजन्ज को बढ़ावा देना और अन–स्किलिड लेबर को काम देना, उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन देना, इन सारी बातों के ऊपर सरकार का पूरा ध्यान है । हमारे राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में बड़े विस्तार के साथ, जो हमारी उपलब्धियां हैं, जो हमारी अचीवमैन्ट्स हैं, जो हमारे फैक्टस एण्ड फिगर्ज हैं, वे पूरे विस्तार के साथ दिये हैं । मैं नहीं चाहता कि इन सारे आंकड़ों को फिर से दोहराया जाए, वैसे मेरे पास तमाम फिगर्ज हैं यह किताब सारी आंकड़ों से भरी पड़ी है, मैं

आपको एक– एक चीज के बारे में बतला सकता हूं कि 1966 में हम कहां थे और आज 1975 में हम कहां हैं? कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है । खेती का क्षेत्र है जिसमें एक प्रकार से हरित क्रान्ति हरियाणा प्रदेश में हुई है । चौधरी फूल चन्द जी श्वेत क्रान्ति की बात कर रहे थे । उसकी तरफ भी हम कदम बढ़ा रहे हैं । कई मिल्क प्लांट्स हमारे चल रहे हैं दो मिल्क प्लांट्स अंडर कंस्ट्रक्शन हैं । सबसे बड़ा जो हमारा मिल्क प्लांट होगा, वह रोहतक का होगा जिसकी हाइएस्ट कैपेसिटी है । इसके बावजूद अगर किसी भाई ने कर्जा लिया है और उसके साथ ज्यादती होती है तो उसकी तकलीफ को भी दूर करने के लिए हम तैयार हैं ।

बैठक का समय बढ़ाना

Mr. Speaker : The time of the House is extended by 15 minutes.

राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान (पुनरारम्भ)

श्री बनारसी दास गुप्त : जहां तक दूध की कीमतों का सवाल है उसका भी एक तरीका बनाया हुआ है कि दूध की फैट नाप करके दूध की कीमत निश्चित की जाती है । उस हिसाब से अगर दूध बेचने वालों को या किसान जो कर्जा लेकर भैंस रखता है उसको कम कीमत मिलती है तो इस बात पर भी पुनर्विचार किया जा सकता है । हम यह चाहते हैं कि उसको पूरा मुआवजा मिले । उसे उसके दूध की कम कीमत नहीं मिलनी चाहिये ।

चौधरी फूल चन्द जी ने और भी सुझाव दिये उन सुझावों के साथ–साथ कुछ थोड़ी सी छींटाकसी भी की कि कांग्रेस के अन्दर ऐसे आदमी भी बैठे है जो हजारों रुपय हड़प कर गए । इनकी शिकायत है कि कुछ लोगों की शिकायत पर लोग गिरपतार होते हैं । मैं गंगाजली उठाकर तो यी कहने के लिये तैयार नहीं हूं कि कांग्रेस के अन्दर सारे आदमी दूध से घुले हुए ही हैं लेकिन हम कोशिश करते हैं कि कांग्रेस का कोई भी व्यक्ति जो जिम्मेदार पोस्ट पर है वह कोई नाजायज फायदा न उठाने पाए (तालियाँ) और न उठाएगा और न किसी को इजाजत दी जाएगी । जब कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मीटिंग होती है तो मैं एक ही बात उनके सामने कहता ी कि हमने आदर्श बन कर लोगों के सामने पेश होना है । हुसके बावजूद भी यदि किसी भाई के नोटिस में कोई स्पैसिफिक बात हो तो वह हमें बतला सकता है । मैं यकीन दिलाता हूं कि हम ऐसे आदमी को माफ नहीं करेंगे चाहे वह कांग्रेसी हो चाहे नायं–कांग्रेसी हो, इन्साफ सबको दिया जाएगा । (तालियां) एक बात उन्हेंने आवास बोर्ड के बारे में कही कि हाउसिंग बोर्ड ने जो मकानात बनाए हैं उनमें सब–स्टैडर्ड मैटीरियल इस्तेमाल हुआ है । मैं दावे के सायं यह बात नहीं कह सकता कि सैंट परसैंट मैटीरियल ठीक ही इस्तेमाल हुआ हो । हो सकता है कि किसी जगह गड़बड़ी हुई हो । अगर इस प्रकार की बात भी मेरे नोटिस मैं लाई जाएगी तो इस बात का पूरा ऐक्शन लिया जाएगा । लेकिन हमारे हाउसिंग बोर्ड पर हमें इम बात का बड़ा गर्व है कि बहुत थोड़े दिनों में ही उसने हजारों की तादाद

मैं मकान बनाए हैं और ऐसे स्थानों पर बनाए जहा मकानों की बहुत आवश्यकता थी, जहां इंडस्ट्रियल लेबर थी, झोपड़ी के अन्दर रहती थी वही लेबर आज मकानों में रहती है । इसके बावजूद भी अगर चौधरी फूल चन्द जी को शिकायत है तो क्या कहा जा सकता है? किसी भी जगह पर जब हम अपनी ऐसी योजना बनाते हैं तो रजिस्ट्रेशन करवाने वालों की लाइनें लगी रहती हैं । अगर ऐसी बात होती जैसे चौधरी फूल चन्द जी कह रह हैं तो ऐसा होता कि एक तरफ से कील गाड कर दूसरी तरफ निकल जाती फिर उन मकानों को कौन लेता? हाउसिंग बोर्ड हमारा बहुंत अच्छा काम करता है इसके बावजूद भी अगर कोई गड़बड़ की बात हो तो वह मेरे नोटिस में लाई जाए हम उसका पूरा–पूरा इन्तजाम करेंगे । अभी मैं प्लाटस की बात बता रहा था वह गल्ती से मैंने 311 3 बता दिया था यह 3103 है । तो अध्यक्ष महोदय, अन्त मैं मैं आपको एक ही बात का विश्वास दिलाता हूं कि जिस प्रकार से हरियाणा प्रदेश की यह ख्याति हुई है, डिवैल्पमैंट की और विकास की तो वह हर क्षेत्र में हुई है । आप स्वास्थ्य की तरफ देखें, 1 8 हस्पतालों का निर्माण हुआ, कालेज और स्कूलों को आप देख. लो, सड़कों को आप देख लो 65 प्रतिशत गांव सड्कों से जोड़े गये । खेती की बात मैंने बतलाई, उद्योग धंधों की बात मैने बतलाई हर एक क्षेत्र के अन्दर बड़ी तेजी के साथ विकास हुआ है और इस विकास की गति को हम कायम रखेंगे, कायम कर पाएंगे ऐसा मुझे पूरा विश्वास है । आज से कुछ दिन पहले हिन्दुस्तान के प्लानिंग कमिशन से हमारी बातचीत हुई । आपने अखबारों में पढ़ा होगा

कि हमारा अगले साल का प्लान 110. 53 करोड़ का मंजूर हुआ है लेकिन मुझे इस बात की पूरी उम्मीद है कि यह हमारा 110 करोड़ का प्लान 110 करोड़ का नहीं रहेगा बल्कि यह 130 करोड़ तक पहुंचेगा (तालियां) जैसे कि पहले भी पहुंचता रहा है । तो यह सारा काम जो विकास का है, इसको हम चलाएगे और सबसे ज्यादा जो जोर हमारा है वह कृषि उत्पादन को बढ़ाने का है । इसके' रास्ते में हुमारे सामने कुछ कठिनाइयां हैं जैसे बीज की कठिनाई है, कुछ खाद की कठिनाई है, कुछ इनकी कीमते भी तेज हुई हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं, मैं खुद महसूस करता हूं कि जो इनपुटस हैं उनकी कीमत में तेजी आई है और किसान जो पैदा करता है, उसकी कीमत में कमी हुई है । इन सारी बातों को हम महसूस करते हैं । इन सब बातों में जहां हम किसान की सहायता कर सकते हैं, केन्द्रीय सरकार से बात करने में, उनके भाव ठीक करने में और इनपुटस की कीमत कम करने मैं तो इन सारी बातों में हरियाणा सरकार का सहयोग हर समय उपलब्ध रहेगा और हमारे प्रदेश का, समाज का जो कमजोर अंग है, उस कमजोर अंग को सहारा देने के लिये, उसको मजबूत बनाने के लिये हमारी प्रधान मन्त्री जी ने जो बीस सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है उसको इस प्रदेश में हम पूरी तरह से इम्पलीमैंट करेंगे (तालियां) क्योंकि हमारे प्रदेश का चाहे वह एक इन्नाका हो या एक वर्ग हो अगर वह कमजोर रह जाता है तो हमारा यह प्रदेश पूरी तरह से मजबूत नहीं हो सकता । जैसे हमारे शरीर का अगर एक छोटा सा अंग भी कमजोर पड़ता है तो वह स्वस्थ शरीर नहीं कहला सकता

। हम हरियाणा प्रदेश को स्वस्थ शरीर जैसा स्वस्थ प्रदेश बनाना चाहते हैं और वह हरियाणा चौधरी बंसी लाल के स्वप्न का हरियाणा होगा, उनके नक्शे का हरियाणा होगा । उन्होंने जो तस्वीर बनाई थी वैसा ही हरियाणा होगा । इन शब्दों के साथ मैं सारे सदन से प्रार्थना करता हूं कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को सर्वसम्मति से पास किया जाए और जो स्कीम जो योजना उसमें रखी गई हैं उनको इम्पलीमैंट करने में पूरा सहयोग दिया जाए ।

Mr. Speaker : Question is—

That an address be presented to the Governor in the following terms—

"That the Members of the Haryana Vidhan Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the Governor for the Address which he has been pleased to deliver to the House on the 12th January, 1976.".

The motion was carried. (Thumping)

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 2.00 p.m. tomorrow.

18.37 बजे

(The Sabha then *adjourned till 2.00 p.m. on Thursday, the 15th January, 1976.)